CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

२

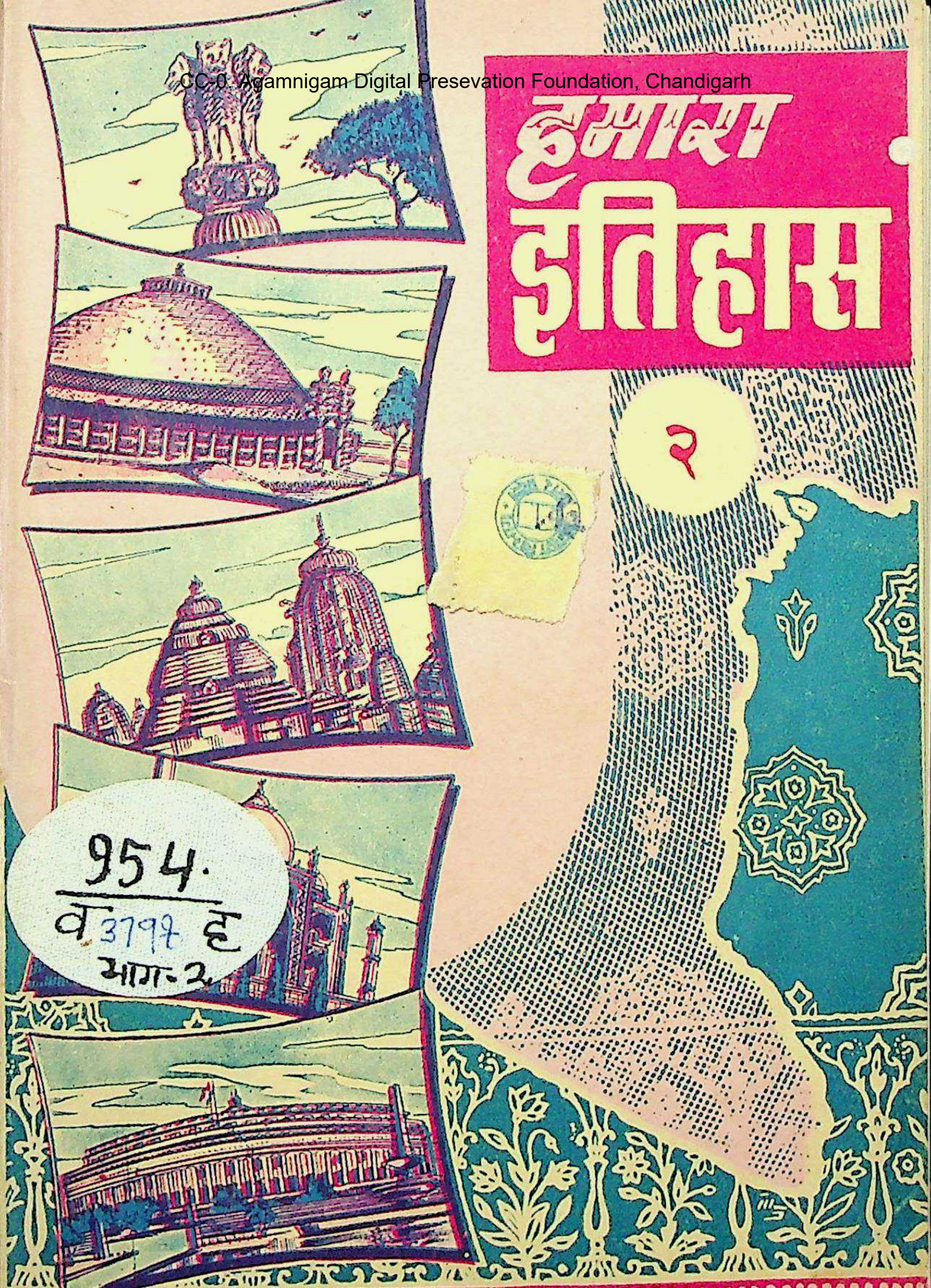

954.
व 3197 ह
भाग-2

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

दूसरी पुस्तक

[जूनियर हाई स्कूलों की कक्षा ७ के लिए]

राज्य संग्रहालय ... लखनऊ
क्रम ... 3798
प्राप्ति तिथि 21.5.65
State Museum, Library, Lko.

लेखक

रामचरण विद्यार्थी

एम० ए० (गोल्ड मेडलिस्ट), एल० टी०, पी० ई० एस० (रिटायर्ड)
[भूतपूर्व लेक्चरर गवर्मेंट ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ एवं इलाहाबाद;
प्रोफेसर व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, गवर्मेंट डिग्री कालेज, रामपुर;
तथा प्रिंसिपल, गवर्मेंट जुबिली इण्टर कालेज, लखनऊ]

प्रकाशक

शंकर प्रकाशन

अलीगढ़

Universal Book Depot Lucknow. Aminabad.

[मूल्य १ रु० ४१ पै०

१९६८]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक
शंकर प्रकाशन
अलीगढ़

954
व ६
2

"इस पुस्तक का कापीराइट उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सुरक्षित है।"

१९५७—१९६४—४,५६,०००
एकादश संस्करण—१९६५—५५,०००
द्वादश संस्करण—१९६६—६५,०००
त्रयोदश संस्करण—१९६७—१,००,०००
चतुर्दश संस्करण—१९६७—१०,०००
पंचदश संस्करण—१९६८—१,२५,०००

मुद्रक
सेन्ट्रल प्रेस
लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

साथी अध्यापकों से निवेदन

भारत के स्वतन्त्र होने के बाद देशवासियों पर जो उत्तरदायित्व आये हैं, उन्हें निभाने के लिए बड़ी संख्या में सुशिक्षित नवयुवकों की आवश्यकता है। जूनियर हाई स्कूलों की छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षाओं में जो छात्र पढ़ते हैं, उन पर कुछ ही वर्षों बाद उन जिम्मेदारियों को उठाने का भार होगा। उन पर कुछ जिम्मेदारियां तो अभी से विद्यमान हैं। उन सबको सुचारु रूप से समझने और निभाने योग्य बनाने के लिए शिक्षा-क्रम में इतिहास और नागरिक शास्त्र के ज्ञान का विशेष स्थान है।

इतिहास के द्वारा हमें अपने राष्ट्र के आत्मा की अनुभूति होती है। हमारा देश प्राचीन काल में वैभव और प्रतिभा की पराकाष्ठा पर पहुँचा था। उसकी ख्याति सारे संसार में व्याप्त थी। समय ने पल्टा खाया और मध्यकाल में उसका अध:पतन आरम्भ हुआ। अंग्रेजी शासन-काल में आकर दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी। संसार के अन्य देश तब तेजी से तरक्की कर रहे थे, परन्तु हमारा देश दासता की बेड़ियों से बँधा गति-शून्य सा हो रहा था। इस अध:पतन और अधोगति के कारण क्या थे ? क्यों हमारे पैर आगे नहीं बढ़ते थे ? अपने अतीत के नेत्रों से मध्य या अर्वाचीन काल की पतनावस्था को देखकर मालूम होता है कि अपनी व्यक्तिगत, दीर्घसूत्रता, सामाजिक दुर्बलता एवं राजनीतिक चेतना की न्यूनता के कारण हम विवश और पराधीन बने रहे। अब हम जगे हैं और हमने अपने घर को सँभालना शुरू किया है। इतिहास हमारे नेत्रों के सामने यह सारा दृश्य उपस्थित करता है। इतना ही नहीं, उसमें भविष्य के मार्ग को स्पष्ट और उज्ज्वल करने की क्षमता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतिहास के अध्ययन के इस महत्व को समझ कर इतिहास में लेखक अथवा अध्यापक के लिए यह जरूरी है कि वह पाठ्य विषय का वर्णन और उसकी आलोचना निष्पक्ष और निर्भय रीति से करे। किसी भी कारण घटनाओं को तोड़-मरोड़े नहीं। सदैव सत्य का आश्रय ले। इसी दृष्टिक्रम से वह सच्ची देशभक्ति, सच्चा स्वाभिमान और सच्ची सहानुभूति पैदा कर सकता है।

बालकोपयोगी प्रस्तुत पुस्तकों में बेसिक कक्षाओं में प्राप्त बालकों की पूर्वयोग्यता तथा उनके वर्तमान मानसिक और बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखकर ज्ञातव्य बातों को इतना सुलझा और सजाकर रखा गया है कि वे उनके लिए अति सरल, रोचक और सुग्राह्य बन जायँ। कार्य-कारण का सम्बन्ध बिठाते हुए बालकों के अन्दर ऐतिहासिक तार्किकता उत्पन्न करने की कोशिश की गयी है। बालकों की तो क्या, प्राय: वयस्कों की भी रुचि जितनी व्यक्तियों के विषय में होती है, उतनी संस्थाओं के विषय में नहीं; अत: इन पुस्तकों में ऐतिहासिक वीरों को स्थान-स्थान पर प्रमुखता दी गयी है और उन्हें उनके सामाजिक वातावरण में रखकर यह दिखाया गया है कि उनके कारण किस प्रकार राष्ट्र की उन्नति में सहायता मिली या बाधा पहुँची। वीरों के मूल्यांकन का यही सही तरीका है।

इन पुस्तकों में चित्रों और मानचित्रों की प्रचुरता है। पढ़ने वालों को किसी इतिहास-एटलस की आवश्यकता न होगी। वर्णित सामग्री हृदयांकित करने में चित्र विशेष सहायता देंगे। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के लिए कुछ प्रश्न दिये गये हैं। उनका अभ्यास बालकों के अर्जित ज्ञान को संगठित करेगा। अत: हरएक पाठ को पढ़ाने के बाद बालकों से उन प्रश्नों के उत्तरों का अभ्यास अवश्य कराया जाय।

नागरिक शास्त्र के पाठों में स्थान-स्थान पर क्रियात्मक अभ्यासों के संकेत दिये गये हैं, उनका अभ्यास यथावसर अवश्य कराना चाहिए।

—लेखक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय-सूची

खंड १—इतिहास

अध्याय	विषय	पृ० सं०
पहला—महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी के हमले		१—८
दूसरा—दिल्ली सल्तनत		९—३९
	१—दिल्ली में तुर्क सल्तनत की स्थापना कुतुबुद्दीन और इल्तुतमिश	९
	२—इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी रजिया और बलबन	१५
	३—सल्तनत का विस्तार अलाउद्दीन खिलजी	२०
	४—सल्तनत के बुरे दिन	२४
	तुगलकों का राज्य	३०
	५—दिल्ली सल्तनत की शासन-प्रणाली	३४
	६—साहित्य और कला	
तीसरा—दिल्ली सल्तनत का पतन-काल		४०—४९
	१—सल्तनत का ह्रास और उसके खंड	४०
	२—विजयनगर राज्य और बहमनी सल्तनत	४५
चौथा—धर्म सुधारक		५०—५४
पांचवां—दिल्ली साम्राज्य के लिए तिकोना संघर्ष—अफगान, राजपूत और मुगल		५५—६३
	१—बाबर का आक्रमण और विजय	५५
	२—हुमायूं का बहादुरशाह और शेरशाह से संघर्ष	६०
छठा—शेरशाह सूरी का शासन		६४—६७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय	विषय	पृ० सं०
सातवां—**अकबर का साम्राज्य**		६८—८३
	१—साम्राज्य का विस्तार	६८
	२—शासन-सुधार और धर्मनीति	७५
	३—संस्कृत और इमारतें	७९
आठवां—**मुगल साम्राज्य की शान**		८४—९५
	१—जहाँगीर	८४
	२—शाहजहाँ	८९
नवां—**औरंगजेब**		९६—११०
	१—साम्राज्य का विस्तार	९६
	२—औरंगजेब की नीति	१०१
	३—औरंगजेब की नीति का विरोध	१०४
दसवां—**शिवाजी**		१११—११५
ग्यारहवां—**मुगल साम्राज्य का अन्त**		११६—१३२
	१—मुगल साम्राज्य का विघटन	११६
	२—सामाजिक जीवन और आर्थिक दशा	१२०
	३—साहित्य, संगीत और चित्रकला	१२३
	४—मुगल साम्राज्य के पतन के कारण	१३०
बारहवां—**मराठा साम्राज्य**		१३३—१५८
	१—साम्राज्य का उदय—पेशवा बालाजीराव	१३३
	२—मराठों का विस्तार—पेशवा बालाजीराव	१३८
	३—पानीपत में पराजय	१४३
	४—मराठों का फिर उठना—पेशवा माधवराव	१४९
तेरहवां—**बंगाल में अंग्रेजों की जीत**		१५९—१६३
चौदहवां-**भारत में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के युद्ध**		१६४—१७९
	१—यूरोपीय व्यापारियों का भारत की राजनीति में हस्तक्षेप	१६४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय	विषय	पृ० सं०
	२—भारत में फ्रांसीसी-अंग्रजी युद्ध	१७१
	३—फ्रांसीसियों के विफलता के कारण	१७७

खंड २—नागरिक जीवन

पहला—**भारत संघ के राज्य**		**१८०—१९५**
	१—राज्यों में उत्तर प्रदेश का स्थान	१८०
	२—राज्यपाल और मन्त्रि-परिषद	१८३
	३—विधान-मंडल	१८८
	४—विधान मंडल के कार्य	१९२
दूसरा—**न्यायपालिका**		**१९६—२०२**
	१—संघ की न्यायपालिका	१९६
	२—राज्य की न्यायपालिका	२००
तीसरा—**निर्वाचन और मताधिकार**		**२०३—२२०**
	१—भारत में लोकतन्त्र शासन	२०३
	२—लोकतन्त्र का अभ्यास—स्कूल सभा का आयोजन	२०६
	३—स्वतन्त्र भारत का संविधान	२०८
	४—मूल अधिकार और राज्य की नीति के निर्देशक तत्व	२१५
चौथा—**भारतीय जीवन की समस्याएं**		**२२१—२४०**
	१—शिक्षा	२२१
	२—अस्पृश्यता	२२५
	३—गरीबी	२२७
	४—कर्जा	२३१
	५—खेती	२३४
	६—सामाजिक समस्याएं	२३७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

दूसरी पुस्तक

खंड १—इतिहास

पहला अध्याय

महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी के हमले

बालको, तुम पिछली कक्षा में पढ़ चुके हो कि छठी शती में हूणों ने भारत पर हमले किये थे। इसी प्रकार ग्यारहवीं शती के शुरू और बारहवीं शती के अन्त में तुर्कों ने इस देश पर आक्रमण किये। ये तुर्क भी मध्य एशिया के उसी भाग से आये जहाँ से हूण आये थे। पर, तुर्क लोग धर्म से मुसलमान थे।

महमूद गजनवी

तुर्कों की एक शाखा ने अफगानिस्तान के गजनी प्रदेश में अपना राज्य स्थापित किया। इस शाखा का सबसे योग्य और प्रसिद्ध योद्धा महमूद हुआ है। उसने फारस में दूर-दूर तक अनेक भू-भाग जीत कर और भारत में पंजाब को विजय कर अपने साम्राज्य को बढ़ाया (ग्यारहवीं शती)। कहते हैं २७ वर्षों में उसके भारत पर १७ आक्रमण हुए।

पंजाब में आनन्दपाल ने उसका डटकर मुकाबला किया। दो बार हार कर तीसरी बार उसने बड़ी तैयारी की। धार (मालवा), कालिंजर, कन्नौज, दिल्ली आदि के राजपूत राजाओं की सहायता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

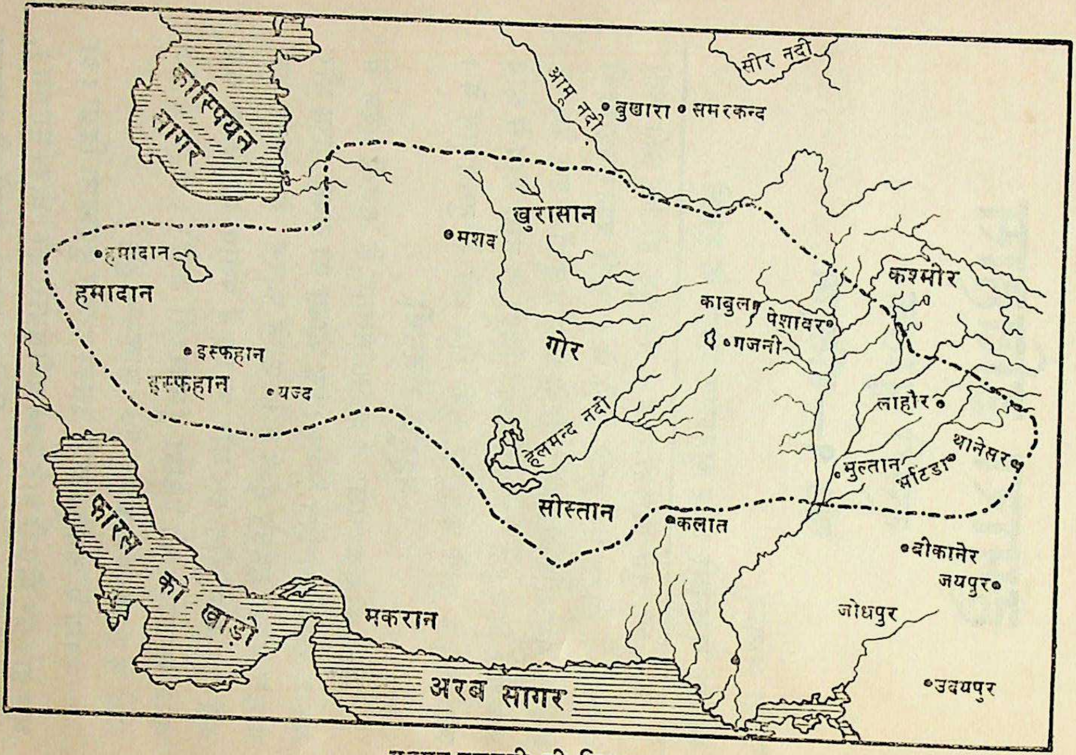

महमूद गजनवी की विजय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से एक विशाल सेना तैयार की। कहा जाता है कि अनेक स्त्रियों ने इस युद्ध के खर्चे के लिए अपने गहने बेचकर एवं धनुषों की डोरियां बनाने के लिए अपने सिर के बालों को काट कर मदद की थी।

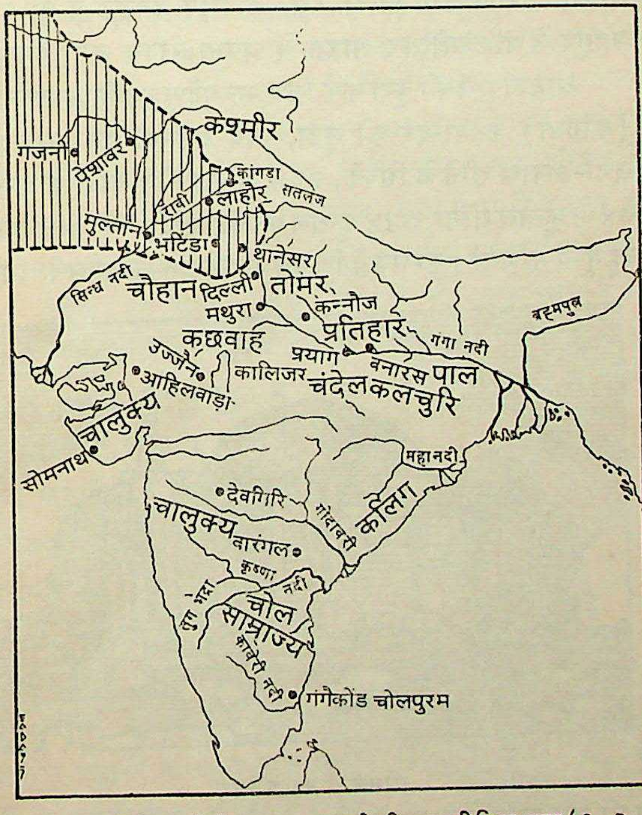

महमूद गजनवी के मरने के बाद भारतवर्ष की राजनीतिक दशा (१०३०ई०)

युद्धों में राजपूतों की सेना और साहस देखकर महमूद जैसा योद्धा भी घबरा गया था। परन्तु जब राजा आनन्दपाल का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हाथी बिगड़कर भागा, तब सेना ने समझा कि राजा हमें धोखा देकर भाग रहा है। सेना भी भाग निकली। आनन्दपाल की इस हार से राजपूतों की हिम्मत टूट गयी। इसके बाद फिर पौने दो सौ वर्षों तक वे लोग अपनी रक्षा के लिए इकट्ठे न हो सके। महमूद ने पश्चिमोत्तर भारत में अपना राज्य जमा लिया।

आनन्दपाल को हरा कर जब महमूद गजनवी ने नगरकोट (कांगड़ा) के मन्दिर को लूटा, तब असंख्य धन उसके हाथ लगा-७ लाख सोने के सिक्के, २६४ कुन्तल सोने-चाँदी के बरतन, ७४·४ कुन्तल सोना, ७४४ कुन्तल कच्ची चाँदी एवं ७·४ कुन्तल बहुमूल्य मणियां। सम्भव है कि इस अपार धन-सम्पत्ति के मिलने

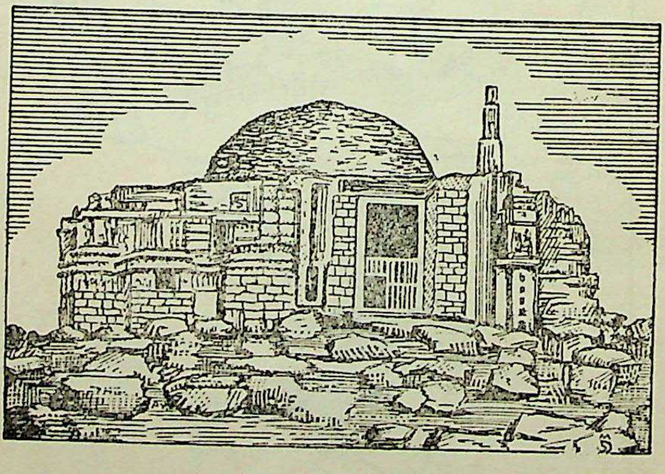

सोमनाथ का मन्दिर

से ही उसे मन्दिरों के लूटने और तोड़ने-फोड़ने की चाट पड़ गयी हो। आगामी आक्रमणों में उसने थानेसर, मथुरा, कन्नौज, सोमनाथ आदि मन्दिरों की शतियों से संचित सम्पत्ति को लूटा और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसे अपनी राजधानी को सजाने एवं अपने विशाल साम्राज्य का खर्चा चलाने के लिए गजनी ले गया। उसकी सबसे बड़ी जीत और लूट गुजरात के सोमनाथ मन्दिर की थी। वहाँ से उसे करीब ७० करोड़ रुपये का माल मिला (१०२५ ई०)।

भारत पर प्रभाव—महमूद गजनवी ने भारत के एक भाग (पंजाब) में तुर्कों का राज्य कायम कर दिया एवं भारत का दरवाजा दूसरे तुर्कों के हमलों के लिए खोल दिया। उसने उत्तर भारत के मन्दिरों की अपार धन-सम्पत्ति को लूट कर एवं उन्हें तोड़-फोड़ कर हिन्दू विद्या और कला-कौशल के केन्द्रों को नष्ट कर दिया। उसके आक्रमणों से भारत का असीम धन बाहर निकल गया, हिन्दू राज्य टूट-फूट गये और देश दुर्बल हो गया। देव मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट करके महमूद गजनवी चाहे अपने मन में कितना ही प्रसन्न हुआ हो परन्तु उसकी इस करतूत ने सामान्य हिन्दू के हृदय में उसके धर्म इस्लाम के प्रति घृणा के भाव पैदा कर दिये जिसके नाम पर उसने भारत में बरबादी और तबाही मचायी थी।

मुहम्मद गोरी

महमूद गजनवी के करीब १५० वर्षों के बाद अफगानिस्तान के गोर पहाड़ी के रहने वाले तुर्कों की एक दूसरी शाखा ने गजनी राज्य का नाश करके अपना गोर राज्य स्थापित किया। यहाँ के एक सरदार ने भारत पर भी हमला

मुहम्मद गोरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। वह गोर राज्य के स्वामी का भाई मुहम्मद गोरी था। उसने पहले मुसलमानों से मुल्तान को जीता और फिर राजपूत राज्य गुजरात पर आक्रमण किया। वहाँ गोरी की हार हुई और उसे लौटना पड़ा (११७८ ई०)। घर पहुँचते-पहुँचते उसके बहुत से सैनिक मर गये।

मुहम्मद गोरी वीर योद्धा था। उसने हिम्मत नहीं हारी। गुजरात का ध्यान छोड़ कर उसने पंजाब पर चढ़ाई की। अपने तीन हमलों में उसने पेशावर जीता, लाहौर लिया और महमूद गजनवी के वंशजों का अन्त करके पंजाब पर अधिकार कर लिया (११८६ ई०)। इसके पाँच वर्षों बाद उसने भारत पर फिर आक्रमण किया, परन्तु इस बार दिल्ली और अजमेर के स्वामी, चौहान वंश के राजपूत राजा पृथ्वीराज से हार कर लौटना पड़ा। इस हार से गोरी बड़ा लज्जित हुआ (११९१ ई०)।

पृथ्वीराज

अगले वर्ष गोरी ने सवा लाख सैनिकों के साथ पृथ्वीराज से युद्ध करने के लिए प्रस्थान किया। पृथ्वीराज ने भी देश एवं धर्म की रक्षा के लिए अनेक राजपूत राजाओं को इकट्ठा कर लिया था। तराइन गाँव के पास फिर घनघोर युद्ध हुआ। इस कूट युद्ध में मुहम्मद गोरी जीता और पृथ्वीराज मार डाला गया (११९२ ई०)। तुर्कों के लिए आगे विजय का मार्ग साफ हो गया। वे लोग राजपूताना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और गंगा-यमुना के दोआब में घुस पड़े। दो सालों बाद कन्नौज के प्रबल गहड़वाल राजा जयचन्द्र का राज्य भी मुहम्मद गोरी ने जीत लिया और इस प्रकार तुर्कों का अधिकार बिहार तक हो गया।

अब तुर्क सेनापति उत्तर भारत में अपने सैनिक अड्डे कायम करके देश के विविध भागों पर अधिकार करने लगे। उनके एक सेनानायक ने सेन वंश के राजपूतों से बंगाल जीता, दूसरे ने गुजरात को लूट कर मुहम्मद गोरी की पुरानी पराजय का बदला लिया। इस प्रकार केवल दस वर्षों के भीतर राजपूतों की शक्ति टूट गयी। राजपूत राजा वीरता या साहस में अपने शत्रुओं से किसी प्रकार कम न थे, परन्तु उनके पास न तो बढ़िया घुड़सवारों के रिसाले थे और न उनको इतनी युद्ध विद्या आती थी जितनी तुर्कों को। इसके अलावा तुर्कों में अद्भुत धार्मिक उत्साह था। वे समझते थे कि युद्ध में जीते तो मालामाल हो जायेंगे और यदि हार गये तो शहीद होकर स्वर्ग मिलेगा।

मुहम्मद गोरी के घर लौटने पर उसे मध्य एशिया की एक अन्य तुर्क शाखा से लड़ना पड़ा। उसमें उसकी हार हुई। इसके फलस्वरूप मुल्तान से लाहौर तक लड़ाकू खोखर लोग लूटमार करने लगे। गोरी उनको दबाने के लिए भारत आया और सहायता के लिए दिल्ली से कुतुबुद्दीन को बुलाया। दोनों ने मिलकर खोखरों का बड़ी कठोरता से दमन किया। इसके बाद मुहम्मद गोरी वापस लौटा परन्तु रास्ते में शत्रुओं ने उसके खेमे में घुस कर उसे मार डाला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत पर प्रभाव—मुहम्मद गोरी भारत में लूटमार से सन्तुष्ट न रहकर अपनी सल्तनत कायम करना चाहता था, इसी से अपनी जीतों के बाद वहाँ अपने नायबों को नियत करता गया। इस प्रकार उसने भारत में तुर्कों के राज्य की जड़ें जमा दीं।

अपने सेनापतियों के प्रति वह बड़ा उदार और स्नेही था। वे भी उसके बड़े भक्त थे। अपने सच्चे सेवकों के कारण मुहम्मद गोरी इस देश में इस्लामी सल्तनत की नींव रखने में सफल हुआ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—महमूद गजनवी कौन था ? उसने भारत पर कब और क्यों तथा कितने आक्रमण किये ?

२—महमूद के आक्रमणों का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

३—मुहम्मद गोरी कौन था ? उसने भारत पर कब और क्यों हमले किये ?

४—पृथ्वीराज कौन था ? उसके बारे में क्या जानते हो ?

५—मुहम्मद गोरी तथा उसके सेनापतियों की विजयों का वर्णन करो। राजपूत राजाओं की हार क्यों हुई ?

६—मुहम्मद गोरी के आक्रमण का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

७—महमूद गजनवी तथा मुहम्मद गोरी के आक्रमणों में अन्तर बताओ।

८—नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर में अशुद्ध उत्तर को काट दो :—

(क) प्रश्न—महमूद गजनवी ने सोमनाथ के मन्दिर को कब लूटा ?
उत्तर—१०२५ ई० में, ११९२ ई० में।

(ख) प्रश्न—मुहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज को कब परास्त किया ?
उत्तर—१०२४ ई० में, ११९२ ई० में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा अध्याय

दिल्ली सल्तनत

पाठ—दिल्ली में तुर्क सल्तनत की स्थापना

कुतुबुद्दीन और इल्तुतमिश

तुमने पिछले पाठ में मुहम्मद गोरी के हमलों और उसके वध का हाल पढ़ा है। उसने अपने जीवन-काल में ही भारत के विविध भागों का अधिकार अपने स्वामिभक्त सेनापतियों को सौंप दिया था। इनमें से दिल्ली कुतुबुद्दीन ऐबक के पास थी।

कुतुबुद्दीन

कुतुबुद्दीन ऐबक पहले मुहम्मद गोरी का गुलाम था। उसकी भक्ति और वीरता से प्रसन्न होकर गोरी ने उसे स्वतन्त्र कर दिया और उस पर बड़ी कृपा करने लगा। गोरी के मरने पर वह दिल्ली का सुल्तान बना (१२०६ ई०)। उसने अपने साथियों से जो भारत के विविध भागों के अधिकारी थे दिल्ली की प्रभुता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वीकार करायी। इस प्रकार लगभग सारा उत्तरी भारत दिल्ली सल्तनत में आ गया। चार वर्षों तक राज्य करने के पश्चात् एक दिन चौगान (आजकल के पोलो की भाँति का खेल) खेलते समय घोड़े से गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी (१२१० ई०)।

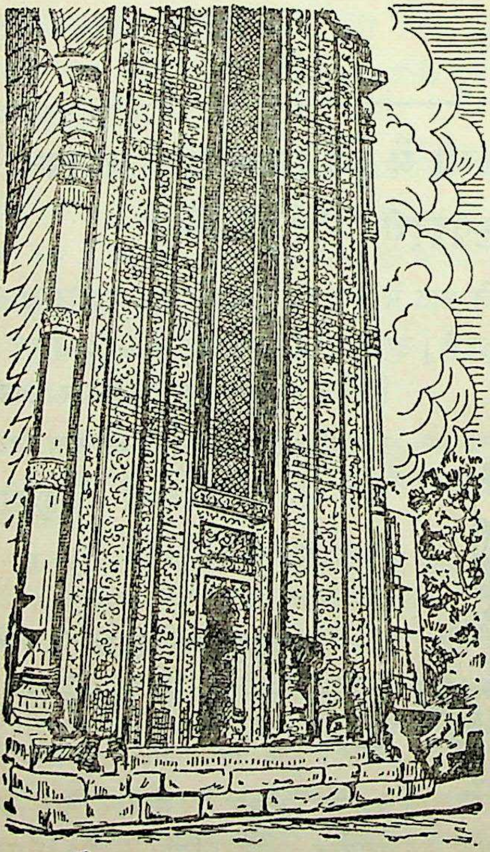

मसजिद कुव्वतुल इस्लाम

कुतुबुद्दीन ने भारत में तुर्कों के एक बड़े राज्य की स्थापना की। दिल्ली और अजमेर में उसने दो मसजिदें बनवायीं। दिल्ली की मसजिद का नाम कुव्वतुल इस्लाम है। सच है कुतुबुद्दीन की वीरता और विजयों ने भारत में इस्लाम की कुव्वत (शक्ति) को ऐसा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जमाया कि कई शदियों तक कोई उसको उजाड़ न सका।

कुतुबुद्दीन के मरने के बाद उसका बेटा सुल्तान बना, परन्तु वह निकम्मा निकला। इसलिए दिल्ली के तुर्कों ने कुतुबुद्दीन के गुलाम और दामाद इल्तुतमिश को सल्तनत सौंपी।

इल्तुतमिश—(१२१०—३६) ने अपने ससुर की दिल्ली सल्तनत को पक्का करके भारत में तुर्कों के साम्राज्य को संगठित किया। उसके सामने तीन काम थे। पहला, प्रान्तों के शासक तुर्क सेनापतियों को दबाना; दूसरा, भारतीय राजाओं का दमन और तीसरा, देश की मंगोलों से रक्षा। इल्तुतमिश तीनों कामों में सफल हुआ।

(१) उसने पंजाब के **तुर्की हाकिम** को युद्ध में हराकर लाहौर पर अधिकार किया। इसी प्रकार सिन्ध के तुर्की हाकिम को भी हराया। बिहार-बंगाल में खिलजी मलिकों ने विद्रोह कर दिया था। उसने उन्हें हराकर दंड दिया। अब कोई तुर्क सेनापति दिल्ली के मुकाबले के लिए शेष नहीं रहा।

(२) देशी राजों में कन्नौज के सामन्त, वत्तु नाम के एक हिन्दू सरदार को अपना नेता बनाकर सल्तनत का कड़ा विरोध कर रहे थे। एक लाख से ऊपर तुर्क सैनिक उनसे लड़ते हुए मारे जा चुके थे। इल्तुतमिश के राज्य-काल में वत्तु मारा गया और सुल्तान का कन्नौज के किले पर अधिकार हो गया।

इसी प्रकार इल्तुतमिश राजपूताना के **राजपूत राज्यों** को दबाने में भी सफल हुआ। उसने रणथम्भौर और ग्वालियर के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किलों को फतह किया तथा मालवा पर चढ़ाई कर उज्जैन को लूटा। उसने मेवाड़ की राजधानी भी उजाड़ दी।

(३) **मंगोलों** के हमलों से भारत की तुर्क सल्तनत का बच जाना इल्तुतमिश के राज्य-काल की बड़ी महत्वपूर्ण घटना

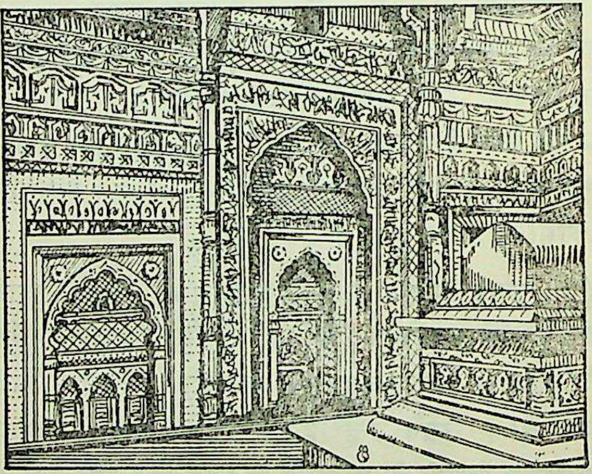

इल्तुतमिश का मकबरा

है। उस समय मंगोल तुर्किस्तान के तमाम मुस्लिम राज्यों को नष्ट कर चुके थे। उन्होंने मसजिदों और महलों को जला दिया था। उनके सरदार चंगेज खाँ ने तुर्कों से अफगानिस्तान छीन लिया था। चंगेज सिन्धु नदी के किनारे तक आ पहुँचा था, परन्तु इल्तुतमिश के सौभाग्य से मंगोल इस देश की तीक्ष्ण गर्मी के कारण लौट गये।

चरित्र—गुलाम वंश के तुर्क सुल्तानों में इल्तुतमिश सबसे योग्य माना जाता है। उस समय के इतिहास-लेखकों ने उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

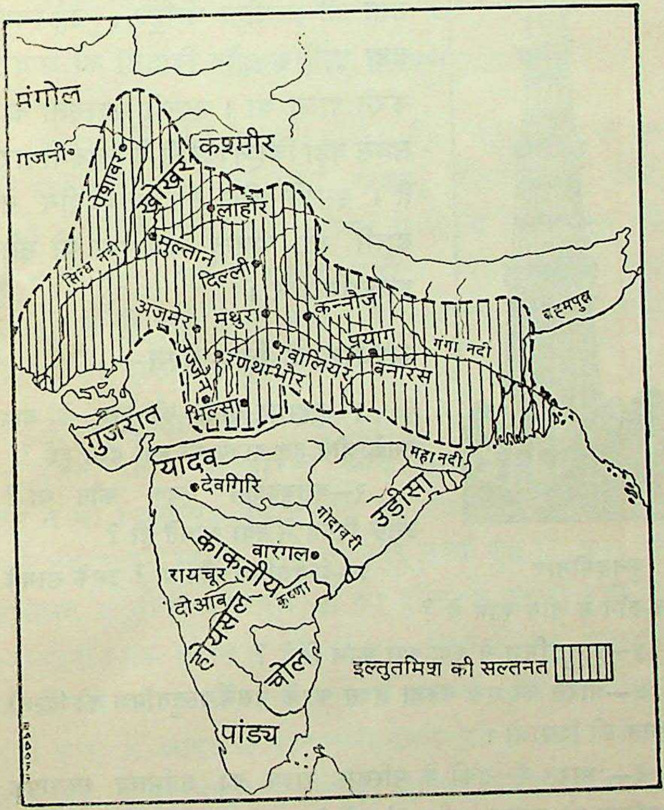

इल्तुतमिश की सल्तनत (१२३६ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बड़ी प्रशंसा की है। बगदाद के खलीफा ने उसे राज्य के पूर्ण अधिकार दिये, अतः भारत में तुर्कों के मुस्लिम राज्य का सर्वमान्य संस्थापक उसी को समझना चाहिए। वह स्वयं बड़ा धार्मिक और विद्वानों का आदर करने वाला था। उसकी महानता का सबसे बड़ा चिह्न दिल्ली में कुतुबमीनार है। इसकी नींव तो कुतुबुद्दीन ने डाली थी, परन्तु बनवाया था उसे इल्तुतमिश ने।

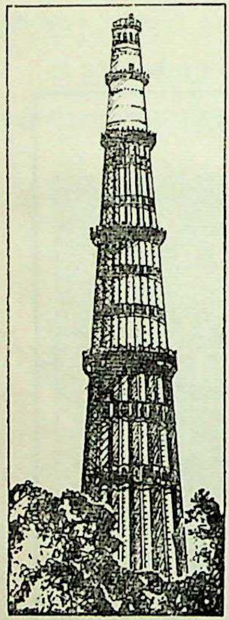

कुतुबमीनार

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—मुहम्मद गोरी की मृत्यु के बाद उसके जीते हुए राज्य की क्या दशा हुई ?

२—कुतुबुद्दीन ऐबक कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

३—इल्तुतमिश कौन था ? उसके सामने कौन-कौन से तीन काम थे ?

४—इल्तुतमिश ने क्या-क्या काम किये ?

५—भारत का एक नक्शा अक्स करके उसमें इल्तुतमिश की दिल्ली सल्तनत को दिखाओ।

६—'भारत में तुर्कों के मुस्लिम राज्य का सर्वमान्य संस्थापक इल्तुतमिश को कहना चाहिए।' क्यों ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—इल्तुतमिश के उत्तराधिकारी

रजिया और बलबन

इल्तुतमिश मरते समय (१२३६ ई०) कह गया था कि मेरे बाद गद्दी पर मेरी पुत्री रजिया को बिठाया जाय, परन्तु दरबारियों ने उसकी वसीयत के विरुद्ध उसके एक बेटे को गद्दी दी। वह बिलकुल अयोग्य निकला और छःह महीनों में ही मार डाला गया। अब दिल्ली की जनता ने रजिया को सुल्तान बनाया।

रजिया सुल्ताना बन तो गयी, परन्तु उसे अनेक कठिनाइयों को झेलना पड़ा। शूरवीरता और शासन-कुशलता में वह कम न थी। तुम पढ़ चुके हो कि वह मर्दाने वस्त्र पहन कर खुले मुँह राज-दरबार में बैठती और स्वयं युद्ध में सेना का संचालन करती थी। दरबारियों की दृष्टि में उसका दोष था स्त्री होना। एक औरत के गद्दी पर बैठते ही तुर्क सेनापति जो दिल्ली की केन्द्रीय सल्तनत से स्वतन्त्र होने का अवसर ढूँढ़ा करते थे, आपस में कानाफूसी करने लगे। अतः रजिया ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए अफ्रीका निवासी सैनिक को अपना वजीर बनाया। अब तुर्कों को विद्रोह का मौका मिल गया। उन्होंने अल्तूनिया नाम के एक अमीर को भड़का कर बगावत करा दी। रजिया का अफ्रीकी वजीर मारा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गया और रजिया गिरफ्तार हुई। दिल्ली की गद्दी उसके हाथ से जाती रही।

चतुर रजिया ने फिर हिम्मत बाँधी और अल्तूनिया से ब्याह करके उसे दिल्ली जीतने को प्रेरित किया। दोनों सेना लेकर बढ़े, परन्तु मारे गये (१२४० ई०)।

रजिया बेगम

अराजकता—दिल्ली की राजगद्दी की इस उलट-फेर में तुर्क सरदारों और सल्तनत के शत्रुओं की बन आयी। भारत में मंगोल घुसे और लाहौर ले लिया। बंगाल और सिन्ध अलग हो गये। पंजाब का बड़ा भाग खोखरों ने दबा लिया। चौहान राजा ने रणथम्भौर ले लिया। गंगा-यमुना के दोआब में हिन्दुओं ने विद्रोह कर दिया। बिहार के हिन्दू सामन्त स्वतन्त्र हो गये। अलवर के मेवाती दिल्ली के निकट पहुँच कर लूट-मार करने लगे।

ऐसी गड़बड़ी में तुर्क सरदारों ने रजिया के छोटे भाई **नासिरुद्दीन** को सुल्तान बनाया (१२४६ ई०)। उसने अपना मन्त्री, इल्तुतमिश के दामाद, गयासुद्दीन बलबन को चुना। अब राजकाज बलबन के हाथ में आ गया।

बलबन एक ऊँचे घराने का तुर्क था और मंगोलों के हाथों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पड़कर उसे दास बनना पड़ा था। भारत में आने पर उसे इल्तुतमिश ने खरीद लिया। उन्नति करते-करते वह दिल्ली सल्तनत का वजीर बन गया। अपनी शूरवीरता से उसने सल्तनत के शत्रुओं–मंगोलों, खोखरों, दोआब के हिन्दू सरदारों, मेवातियों आदि का दमन करके दिल्ली सल्तनत में नये प्राण डाले।

बलबन–नासिरुद्दीन के मरने पर दिल्ली की गद्दी बलबन को मिली (१२६५ ई०)। वह एक कर्मठ और कठोर पुरुष था। सुल्तान बनने पर उसके सामने भी तीन काम थे–पहला, अपने साथी तुर्क सरदारों और अमीरों को वश में करना; दूसरा हिन्दुओं के विरोध पर विजय पाना; और तीसरा, मुगलों का मुकाबला।

(१) तुर्क सरदारों को वश में करने के लिए उसने राजदरबार में व्यवहार के बड़े कठोर नियम बनाये। सबको चुपचाप खड़े रहने, हँसी-मजाक, नाच-रंग आदि बन्द करने एवं स्वयं गम्भीर रहने इत्यादि साधनों से उसका रोब दरबारियों पर छा गया। अपने को बराबरी के दर्जे पर समझने वाले तुर्क तथा अन्य दरबारी उसके पैर चूमने और धरती पर माथा टेक कर सिजदा करने लगे।

उसके समय में ४० तुर्की सरदारों का एक गुट था। बलबन ने उसे नष्ट कर दिया। बंगाल के तुर्क हाकिम तुगरील की बगावत का अन्त करके उससे भीषण बदला लिया। लखनौती के बाजार में दो मीलों तक सूलियाँ गड़वाकर उन पर बागियों को लटका दिया। लौटते समय अपने बेटे को बंगाल का हाकिम बनाया और कहा कि यदि कभी विद्रोह किया तो इसी प्रकार दंड मिलेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२) अपनी सेना का संगठन करके बलबन ने मेवात के हिन्दू सरदारों को चुन-चुन कर मरवा डाला। उनकी लूटमार से इतना आतंक छा गया था कि दिल्ली का पश्चिम द्वार सायं-काल से पहले ही बन्द कर देना पड़ता था। दिल्ली की भावी रक्षा के लिए बलबन ने पश्चिम की ओर एक किला और चारों ओर पुलिस चौकियां भी कायम कर दीं।

बलबन ने दोआब के हिन्दुओं को बड़ी क्रूरता से दबाया। कटेहर के हिन्दुओं के विद्रोह का अन्त करने के लिए तो उसने ८ वर्षों से अधिक आयु के पुरुषों को मरवा डाला और स्त्रियों को दासियां बनने के लिए विवश किया। वह कहा करता था कि प्रजा के असन्तोष और विद्रोह को मैं अपने बल से कुचल दूंगा। किया भी उसने ऐसा ही।

(३) मंगोलों के हमले से सीमान्त की रक्षा करने के लिए उस प्रदेश में बलबन ने जगह-जगह फौजी दस्ते नियुक्त किये तथा मंगोलों को भयभीत रखने के लिए कभी-कभी उन पर चढ़ाइयां करवायीं।

इस प्रकार बलबन ने इल्तुतमिश की दिल्ली सल्तनत को सुरक्षित बनाया।

सीमान्त की रक्षा को बलबन ने सबसे अधिक महत्व दिया और अपने युवराज शाहजादे को सीमा-प्रान्त का प्रबन्ध सौंपा; शाहजादे के ऊपर मंगोलों ने एक भीषण आक्रमण किया। उसने मंगोलों को हरा तो दिया, परन्तु युद्ध में स्वयं भी मारा गया। बलबन उस समय ८० वर्षों का बूढ़ा था। यह शोक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न सह सका। दुख के कारण एक वर्ष के अन्दर उसकी मृत्यु हो गयी (१२८७ ई०)।

उसकी मृत्यु के साथ दिल्ली सुल्तानों में गुलाम वंश का अन्त हो गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—रजिया कौन थी ? उसको किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ? उसकी असफलता का क्या कारण था ?

२—रजिया के शासन-काल की व्यवस्था में दिल्ली सल्तनत की क्या दशा हो गयी ? नासिरुद्दीन के मंत्री बलबन ने व्यवस्था कायम करने के लिए क्या किया ?

३—सुल्तान बनने पर बलबन ने दरबारियों के साथ कैसा व्यवहार किया ? उसका सविस्तार वर्णन करो।

४—बलबन के सामने कौन-कौन से तीन काम थे ? उसने उन्हें किस प्रकार पूरा किया ?

५—बलबन ने (क) मेवाड़ और (ख) बंगाल में विद्रोह को किस प्रकार शान्त किया ? सविस्तार वर्णन करो।

६—मंगोल कौन थे ? बलबन ने मंगोलों के आक्रमणों से दिल्ली सल्तनत की रक्षा किस प्रकार की ?

७—पाठ को दोहराओ और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर में अशुद्ध तिथियों को काट दो—

(क) इल्तुतमिश की मृत्यु (१२३६ ई०, १२४० ई०, १२६६ ई०, १२८७ ई०)।

(ख) रजिया की मृत्यु (१२४० ई०, १२६६ ई०, १२८७ ई०)

(ग) बलबन की मृत्यु (१२३६ ई०, १२६६ ई०, १२८७ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३--सल्तनत का विस्तार

अलाउद्दीन खिलजी

तुमने पिछले दो पाठों में गुलाम वंश के सुल्तानों का हाल पढ़ा है। उनके समय में दिल्ली सल्तनत पश्चिम में मुल्तान और लाहौर से लेकर पूर्व में ढाका तक, तथा उत्तर में हिमालय से लेकर अजमेर, ग्वालियर और गुजरात तक फैल गयी थी। दक्षिण के किसी भाग पर दिल्ली के सुल्तानों ने अभी तक हमले नहीं किये थे। इस काम को अलाउद्दीन खिलजी ने पूरा किया।

अलाउद्दीन खिलजी भी तुर्क वंश का था, परन्तु वह कभी गुलाम न रहा था। बलबन के बाद उसके वंशज से सल्तनत का काम न चल सका। तब सल्तनत अलाउद्दीन के चाचा जलालुद्दीन के हाथ आयी। उसके राज्य-काल में ही अलाउद्दीन ने विन्ध्याचल को लांघकर दक्षिण में देवगिरि को जा घेरा था। प्रसिद्ध इतिहास लेखक फरिश्ता ने लिखा है कि देवगिरि से अलाउद्दीन २२३·२ कुन्तल सोना, २·६ कुन्तल मोती, ७४ कुन्तल हीरे-जवाहरात, ३७२.१ कुन्तल चाँदी आदि कर के रूप में लेकर लौटा था।

अपने भतीजे की अद्भुत सफलता की खबर सुनकर दिल्ली सुल्तान उससे मिलने के लिए गंगापार आया। उसने अलाउद्दीन को छाती से लगाया ही था कि अलाउद्दीन ने बूढ़े सुल्तान का वध करा दिया और स्वयं दिल्ली का सुल्तान वन बैठा (१२९६ ई०)।

उत्तर की विजयें—गद्दी पर बैठते ही अलाउद्दीन को मंगोलों का सामना करना पड़ा। एक लाख मंगोल भारत पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चढ़ आये थे, परन्तु अलाउद्दीन के सेनापति ने, उन्हें हरा कर भगा दिया।

अलाउद्दीन खिलजी

अगले वर्ष अलाउद्दीन ने अपने भाई और एक सेनापति को **गुजरात** जीतने भेजा। उनको सफलता मिली। इधर मंगोल दो लाख सेना लेकर दिल्ली तक आ पहुँचे थे। अलाउद्दीन ने उनको भी हराया।

अब राजपूताना की बारी आयी। **रणथम्भौर** के राना हम्मीर ने भागे हुए मंगोल सरदार को शरण दी थी। उसे लौटाने से इनकार करने पर अलाउद्दीन ने एक वर्ष के कड़े युद्ध के बाद रणथम्भौर को जीता।

मेवाड़ के प्रसिद्ध दुर्ग **चित्तौड़** को जीतने में भी अलाउद्दीन को छह महीने लगे। यहीं पर युद्ध में राजा के मरने के बाद उसकी रानी पद्मिनी ने बहुत सी स्त्रियों के साथ आग में जलकर अपने सम्मान की रक्षा की थी। इतिहास में यह **जौहर** कहलाता है।

दक्षिण की विजयें—अलाउद्दीन इतिहास में अपनी दक्षिण विजयों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। दक्षिण-विजय का चसका तो उसे सुल्तान बनने के पहले ही देवगिरि से दौलत मिलने पर लग चुका था। अब उसने अपने सेनापति मलिक काफूर को उधर भेजा। उसने तीन-चार हमलों में दक्षिणी राजाओं को कर देने के लिए विवश करके रामेश्वरम तक खिलजी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रभुता को पहुँचा दिया। रामेश्वरम में काफूर ने एक मसजिद बनवायी। अपने विविध हमलों से वह अपार धन दिल्ली को लाया। उसके हमलों से दक्षिण में मुस्लिम राज्य कायम करने का रास्ता साफ हो गया।

अलाउद्दीन का शासन बड़ा कड़ा था। उसने प्रजा पर इतने अधिक **कर** और **रुकावटें** लगायीं कि वह अपनी जीविका चलाने के सिवा कुछ और सोच ही न सकती थी। सुल्तान यही चाहता था कि विद्रोह का विचार उनके मन में स्वप्न में भी न आ सके।

विजय के लिए विशाल सेना का संगठन और सैनिकों को सन्तुष्ट रखना जरूरी था। साधारण वेतन जीवन की जरूरतों को पूरा करने के लिए काफी न था। उसने वेतन तो नहीं बढ़ाया क्योंकि उसके लिए धन चाहिए था। **बाजार में** विविध वस्तुओं के भावों पर कंट्रोल लगा दिया। सभी वस्तुओं का भाव राज्य की ओर से नियत किया जाने लगा। फलस्वरूप बाजार में मंदी आ गयी और थोड़े खर्चे में विशाल सेना का रखना सम्भव हो गया।

अलाउद्दीन की सेना ही उसकी महाशक्ति थी। उसने ऐसा प्रबन्ध किया कि हरएक सैनिक अच्छे अस्त्र-शस्त्र और वस्त्र से सजा रहे एवं अपने परिवार का पालन अच्छी प्रकार कर सके। इसके अतिरिक्त हरएक सैनिक एक या दो और कोई-कोई तीन घोड़े भी रख सके।

उद्देश्य और सफलता—अलाउद्दीन के विषय में इस पाठ को पढ़कर तुम उसके उद्देश्य को समझ सकते हो। उसकी इच्छा एक ही थी—प्रजा को दबाये रखना और सारे देश में अपनी प्रभुता बनाये रखना। इसमें उसे सफलता मिली। अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सफलता पर गर्व के कारण ही शायद अलाउद्दीन ने अपने सिक्कों पर अपने को दूसरा सिकन्दर कहा है। यहाँ उसके सिक्के का चित्र दिया गया है उसके चित भाग में यह लेख है—

सिकन्दरुस्सानी यमीनुल खिलाफते नासिरु अमीरुल मोमनीन।

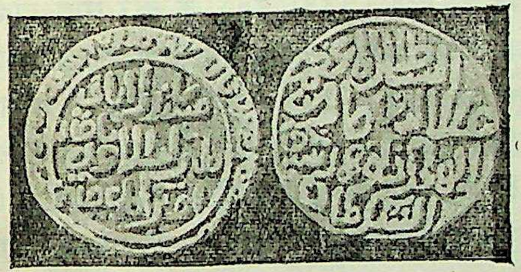

अलाउद्दीन का सिक्का

इस वाक्य का भावार्थ है दूसरा सिकन्दर, खिलाफत का दायां हाथ और मुस्लिमों के अमीर का सहायक। सिक्के के पट भाग में सुल्तान की पदवी अलाउद्दीन एवं नाम मुहम्मदशाह अंकित है।

अलाउद्दीन के राज्य-काल में कला की उन्नति का हाल आगे पढ़ोगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न--

१-अलाउद्दीन खिलजी कौन था? वह कब और कैसे दिल्ली का सुल्तान बना?

२—अलाउद्दीन खिलजी ने सुल्तान बन कर क्या काम किये?

३—अलाउद्दीन के समय में मुस्लिम सेनाएं दक्षिण में कहाँ तक पहुँच गयीं? इसका दक्षिण पर क्या प्रभाव हुआ?

४—अलाउद्दीन के शासन-प्रबन्ध का वर्णन करो।

५—अलाउददीन का लक्ष्य क्या था? उसको पूरा करने में उसे कहाँ तक सफलता मिली?

६—अलाउद्दीन के सिक्के का चित्र अपनी कापी पर बनाओ। बताओ सिक्के पर अंकित लेख का भावार्थ क्या है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—सल्तनत के बुरे दिन—तुगलकों का राज्य

अलाउद्दीन की मृत्यु (१३१६ ई०) के चार साल बाद ही खिलजी वंश की प्रभुता का अन्त हो गया और तुगलक वंश की सल्तनत शुरू हुई (१३२० ई०)। चार वर्षों के इस अरसे में सल्तनत के लिए खूब छीना-झपटी रही और कई प्रदेशों ने अवसर पाकर दिल्ली का जुआ अपने कन्धों से उतार फेंका। अतः तुगलक वंश के संस्थापक गयासुद्दीन को सल्तनत का नये सिरे से संगठन करना पड़ा। गयास का वध उसके पुत्र जूनाखां के षड्यन्त्र से हुआ जो उसके बाद मुहम्मद तुगलक के नाम से दिल्ली का सुल्तान बना।

तुमने अक्सर एक कहावत सुनी होगी कि तुगलकों के राज्य में कभी नहीं रहना चाहिए। इसका क्या रहस्य है? असल में तुगलक वंश ने दो बड़े सुल्तान पैदा किये—मुहम्मद तुगलक और फिरोज तुगलक, परन्तु दोनों के आचार-व्यवहार से प्रजा को सुख नहीं मिला।

मुहम्मद तुगलक बड़ा विद्वान परन्तु जल्दबाज और सनकी था। इसी कारण उसे इतिहास में 'बेमेल बातों का जोड़' कहा जाता है। वह सूझ-बूझ में बड़ा धनी था, परन्तु काम करने में बड़ा जिद्दी और जल्दबाज था। यह बात उसकी योजनाओं से प्रकट है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

योजनाएं—

(१) अपने समय में मुहम्मद तुगलक ने दिल्ली सल्तनत

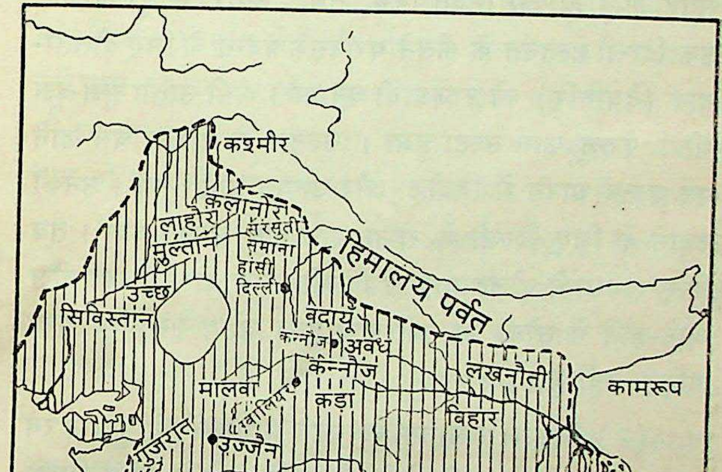

मुहम्मद तुगलक का साम्राज्य (१३३५ ई०)

का साम्राज्य अलाउद्दीन से भी अधिक बढ़ा लिया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अलाउद्दीन ने दक्षिण के राजाओं को अपने वश में करके उनसे केवल कर लेकर सन्तोष कर लिया था। मुहम्मद तुगलक ने सर्वत्र अपने हाकिम नियत किये तथा उत्तर से धुर दक्षिण तक दिल्ली सल्तनत के फैलने पर उसके प्रबन्ध के लिए दौलताबाद (देवगिरि) को राजधानी बनाया। कैसी उत्तम सूझ-बूझ थी! परन्तु फल उल्टा हुआ। सुल्तान के दक्षिण चले जाने पर उत्तर भारत में विद्रोह और उत्पात होने लगे। उनको दबाने के लिए दिल्ली में रहना आवश्यक समझा गया। तब फिर राजधानी दौलताबाद से दिल्ली बदल दी। सैकड़ों मील आने-जाने में लोगों को जो कष्ट हुआ होगा उसकी कल्पना कठिन नहीं है।

(२) विशाल सल्तनत के बढ़ते हुए खर्चे को पूरा करने के लिए वर्तमान कागजी नोटों की भाँति **तांबे के संकेत सिक्के** चलाये। क्या परिणाम हुआ? घर-घर सुनार सिक्के ढालने लगे। सिक्कों की साख जाती रही। व्यापार ठप्प हो गया। तब सुल्तान ने एक उदारतापूर्ण आज्ञा निकाली कि खजाने से संकेत सिक्कों की जगह चाँदी-सोने के सिक्के बदललि ये जायें। लोगों ने ढेरों असली-नकली सब तरह के सिक्कों को बदल कर चाँदी-सोने के सिक्के अपने घरों में भर लिये मुहम्मद तुगलक जाली सिक्कों का निर्माण नहीं रोक सका था, अतः उसकी बुद्धिमानी खजाने की हानि का कारण हुई। खजाना खाली हो गया। संकेत सिक्के आजकल भी चलते हैं, पर उन्हें कोई दूसरा नहीं बना सकता।

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

(३) मुहम्मद तुगलक ने देखा कि दोआब की धरती उपजाऊ है तथा वहाँ के जमींदार और किसान मालदार हैं। अतः उसने राज्य की आय बढ़ाने के लिए कर को दुगुना-तिगुना कर दिया। किसान खेतों को छोड़कर भागने लगे। दमन का परिणाम भी लूटमार और खून-खराबी हुआ। सुल्तान ने चाहा तो था राज्य की आय बढ़ाना, परन्तु फल क्या हुआ ? खेती नष्ट हो गयी और पहले जैसा सामान्य लगान भी न मिल सका।

(४) दिल्ली और दोआब में अकाल पड़ा। सुल्तान ने अति उदारता से अपनी शक्ति भर लोगों की सहायता की, परन्तु, सात वर्षों के निरन्तर अकाल ने सल्तनत की कमर तोड़ दी। माली दशा खराब हो गयी और शासन-प्रबन्ध बिगड़ गया।

अब चारों ओर प्रजा में असह्य कष्टों के कारण असन्तोष बढ़ने लगा। चोरी-डाके पड़ने लगे। हाकिम विद्रोह करने लगे। सुल्तान मुहम्मद तुगलक चिड़चिड़ा हो गया। चारों ओर विद्रोहों को दबाने के लिए दौड़ा-दौड़ा फिरा और इसी दौड़-धूप में दिल्ली से दूर सिन्ध में मर गया (१३५१ ई०)। इस प्रकार दिल्ली सल्तनत के सर्वोत्तम, विद्वान, न्यायशील, परिश्रमी, दानी एवं योद्धा सुल्तान मुहम्मद तुगलक का अन्त हुआ तथा उसे अपनी प्रजा से और प्रजा को उससे छुटकारा मिला।

मुहम्मद तुगलक की मृत्यु पर सिन्ध में ही उसके चचेरे भाई फिरोज को तुगलक बनाया गया।

सुल्तान फिरोजशाह में सैनिक योग्यता न थी, परन्तु वह परोपकारी और धर्म का कट्टर था। उसने दिल्ली सल्तनत से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वतन्त्र हुए दूर-दूर के प्रान्तों को जीतने की विशेष परवाह नहीं की। अतः दिल्ली की सल्तनत का विस्तार कम हो गया।

फिरोजशाह ने प्रजाहित के लिए सैकड़ों बाग-बगीचे लगवाये और सरायें, अस्पताल, मदरसे, महल, मसजिदें आदि बनवायीं, नहरें निकलवायीं एवं कुएं खुदवाये। नदियों पर पुल बँधवाये। अनेक मुस्लिम कन्याओं का ब्याह करवाया तथा बेकार आदमियों को धन्धों में लगाया। उसने कर भी कम कर दिये।

फिरोज तुगलक की दो-एक बातें ऐसी हैं जो पसन्द नहीं की जातीं। हिन्दुओं को मुसलमान बनाने और शिया मुस्लिमों के दमन करने की उसकी नीति ने उस उदार चरित सुल्तान को बदनाम कर दिया। इसके सिवा उसने अपने शासन-काल में गुलामों की संख्या १ लाख ८० हजार तक बढ़ा ली थी। इससे राजकोष को बड़ी हानि हुई।

तैमूर

जब सुल्तान अस्सी वर्षों का बूढ़ा हो गया, तब राज्य-भार अपने पोते को सौंप कर एकान्त सेवन करने लगा। इसी दशा में उसकी मृत्यु हुई (१३८८ ई०)।

फिरोजशाह तुगलक के मरते ही दिल्ली सल्तनत टूट कर बिखरने लगी। तैमूर के हमले ने उसे नष्ट ही कर दिया।

तैमूर भी एक तुर्क सरदार था जो मध्य एशिया के समरकन्द तथा फारस व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अफगानिस्तान को फतह करता हुआ दिल्ली पर चढ़ आया (१३९८ ई०)। दिल्ली में उसके मुकाबले को जब सेना बढ़ी, तब पहले तो उसने अपने साथ के १ लाख बन्दियों में १५ वर्षों से ऊपर के मनुष्यों का वध करवाया और फिर दिल्ली की सेना को परास्त किया। उसके सैनिकों ने कई दिनों तक दिल्ली को लूटा और इतने दास बनाये कि उसके छोटे से छोटे तुर्क सैनिक को भी २० दास मिले। दिल्ली से मेरठ, हरद्वार तक तैमूर ने इसी प्रकार लूटमार की। उसके हमले से दिल्ली सल्तनत की इज्जत मिट्टी में मिल गयी और सारे देश में अराजकता फैल गयी।

अभ्यास के लिए प्रश्न--

१—मुहम्मद तुगलक के विषय में क्या जानते हो ?

२—'मुहम्मद तुगलक की योजनाएं उसकी बुद्धिमानी और मूर्खता को प्रकट करती हैं।' उदाहरण देकर इस बात को अच्छी तरह समझाओ।

३—फिरोज तुगलक ने प्रजा के लिए क्या-क्या काम किये ? किन कामों से उसका नाम बदनाम हो गया ?

४—तैमूर कौन था ? उसके आक्रमण का हाल लिखो। उसके आक्रमण का क्या प्रभाव पड़ा ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ५—दिल्ली सल्तनत की शासन-प्रणाली

तुमने पिछले चार पाठों में दिल्ली की तुर्क सल्तनत के प्रमुख सुल्तानों का हाल पढ़ा है। आओ उनके शासन करने की रीति-नीति पर एक दृष्टि डालें। इस सम्बन्ध में तुम्हें तीन बातें साफ दिखायी देंगी।

(१) **निरंकुश राजशाही**—कहा जाता है कि सुल्तान मुसलमान होने के नाते कुरान शरीफ की शिक्षा और शरीअत के कानूनों के अनुसार शासन करते थे, परन्तु असल बात यह है कि उनकी इच्छा ही कानून थी। अलाउद्दीन खिलजी ने तो यह बात साफ-साफ कह भी दी थी। उसने अपने काजी से कहा था कि 'मैं नहीं जानता कि मेरे काम शरीअत के अनुकूल हैं या प्रतिकूल। जो कुछ भी मैं ठीक समझता हूँ, वैसी ही आज्ञा देता हूँ। कयामत के दिन मेरा क्या होगा यह मैं बिल्कुल नहीं जानता।' मुहम्मद तुगलक ने भी उलमा को सरकारी मामलों और शासन के कामों में दखल नहीं देने दिया।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि उलमा का उस समय बहुत प्रभाव था एवं शासन-प्रणाली में इसलाम का भी पुट था, परन्तु मुस्लिम उलमा के हाथ में कोई ऐसी शक्ति न थी जो सुल्तानों को शरीअत के कानूनों पर अमल करने के लिए वाध्य कर सकती।

निरंकुश राजशाही कायम करने में जब दिल्ली की केन्द्रीय सरकार की यह दशा थी, तब प्रान्तों की सरकारों ने भी उसी की नकल की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(२) **प्रान्तों में सामन्तशाही**—सुल्तानों ने प्रान्तों का शासन अपने सामन्तों को दे रखा था। ये पद वंशगत चलते रहते थे। सामन्त अपने प्रदेशों में निरंकुश शासन करते थे। यदि सुल्तान को उनसे खिराज और आवश्यकता पड़ने पर सैनिक सहायता मिलती रही, तो वे प्रान्तों में अपनी मनमानी करने के लिए बिल्कुल स्वतन्त्र थे। प्रान्तीय शासकों के अधीन जो राजा और जागीरदार थे उन्हें भी इसी प्रकार के अधिकार थे। इसका फल यह हुआ कि प्रजा अपने पास वाले अधिकारी के प्रति तो वफादार रहती थी, परन्तु उससे ऊँचे अधिकारियों से उसे वास्ता ही न था। इसी कारण केन्द्र में सुल्तान के दुर्बल होने पर सूबेदारों का प्रान्तों में विद्रोह और दरबारियों का दिल्ली में एक सुल्तान की जगह दूसरा सुल्तान बनाना आसान हो गया।

(३) **शासन का सैनिक आधार**—शासन प्राय: प्रजा के प्रेम पर नहीं, वरन सेना की शक्ति पर निर्भर था। अत: जहाँ तक सुल्तान की तलवार सफलता से पहुँच सकती थी, वहीं तक उसकी सल्तनत का विस्तार समझना चाहिए। सुल्तान और उनके तुर्क साथी अपने को विदेशी समझते और भारतीयों को घृणा की दृष्टि से देखते थे। तुर्की मुसलमानों और हिन्दुस्तानी मुसलमानों के बीच भी यह भेदभाव बरता जाता था। इसी कारण भारतीय मुसलमानों की हार्दिक राजभक्ति सुल्तानों या उनके तुर्की सामन्तों को नहीं प्राप्त हो सकी।

तुर्कों का शासन-प्रबन्ध

केन्द्रीय शासन में सुल्तान के पास हरएक प्रकार के सर्वोच्च

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिकार थे। वह सेना का सबसे बड़ा अधिकारी और न्याय के विषय में सबसे ऊँचा न्यायाधीश था।

सुल्तान की सहायता के लिए अनेक कर्मचारी होते थे। उनमें से कुछ मुख्य थे—**नायब** को आजकल के प्रधान मन्त्री के समान अधिकार प्राप्त थे। वह सुल्तान के नाम से उसके सब अधिकारों का प्रयोग कर सकता था। **वजीर** के जिम्मे अर्थ विभाग रहता था। उसकी मदद के लिए कुछ अन्य कर्मचारी होते थे जो हिसाब-किताब रखते, उनकी जाँच करते तथा आय-व्यय की देख-रेख करते थे।

सेना विभाग के अध्यक्ष को **आरिज** कहते थे। सेना का संगठन, उसका निरीक्षण और अनुशासन सब सेना के अध्यक्ष का काम था। एक धर्म विभाग का अध्यक्ष था जो मसजिदों, मकबरों, मदरसों, मकतबों आदि के बनाने और रक्षा करने के लिए दान या जागीर मंजूर करता था। धर्म विभाग का प्रायः सब धन केवल मुस्लिम जनता के लाभ के लिए व्यय किया जाता था। धर्म विभाग का अध्यक्ष प्रायः न्याय विभाग के अध्यक्ष (काजी) का भी काम करता था। इन सब विभागों के और उनके अध्यक्षों के पदों के नाम फारसी में होते थे। उन्हें तुम ऊँची कक्षाओं में पढ़ोगे।

प्रान्तीय शासनों पर अंकुश के मामले में दिल्ली सल्तनत कमजोर थी। इसी कारण सुल्तान के दुर्बल होने पर प्रायः प्रान्तीय हाकिम स्वतन्त्र होने की कोशिश किया करते थे। प्रान्तों में वजीर, आरिज और काजी आदि होते थे। उनके कर्तव्य प्रान्तीय सीमाओं में वही थे जो केन्द्र के अधिकारियों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुल्तान ने प्रान्त के हाकिमों को साधारणतः हाथी रखने, छत्र व राजदंड धारण करने की मनाही कर दी थी जिससे कहीं हाकिम अपने को सुल्तान के बराबर न समझने लगें।

स्थानीय शासन में सुल्तान या प्रान्तों के हाकिम विशेष दखल नहीं देते थे। उनको अपने कर की आय से मतलब था। नगरों में शासन के प्रबन्ध के लिए कोतवाल और न्याय के लिए काजी रहते थे। गाँवों का प्रवन्ध दिल्ली सल्तनत के काल में पहले जैसा बना रहा।

सुल्तानों की धर्मनीति—स्पष्ट है कि दिल्ली सल्तनत इस्लामी सल्तनत थी, परन्तु धर्मनीति के मामले में सब सुल्तान एक जैसे न थे। उदाहरण के लिए फिरोज तुगलक बड़ा पक्षपाती था, परन्तु अलाउद्दीन खिलजी एवं मुहम्मद तुगलक ने धर्म और राजनीति को अलग रखने की चेष्टा की।

दिल्ली के सुल्तानों की कुछ बातें ऐसी भी हैं जो प्रायः बराबर चलती रहीं जैसे हिन्दुओं को ऊँचे पद न देना, मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट करना एवं हिन्दुओं से जजिया वसूल करना।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—दिल्ली के सुल्तानों की शासन-प्रणाली के मुख्य तत्व क्या थे?

२—क्या दिल्ली सल्तनत वास्तव में इस्लामी राज्य था? अपने मत को उदाहरण देकर सिद्ध करो।

३—क्या कारण है कि केन्द्र में सुल्तान के दुर्बल होने पर सूबेदारों का प्रान्तों में विद्रोह करना और दरबारियों का एक सुल्तान की जगह दूसरा सुल्तान बनाना आसान हो गया?

४—शासन के सैनिक आधार से दिल्ली सल्तनत की हानि हुई? उदाहरण देकर समझाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ६—साहित्य और कला

सौभाग्य से दिल्ली के तुर्क सुल्तान विद्वानों की सहायता करने और शानदार इमारत बनवाने में अपना गौरव समझते थे। अलाउद्दीन खिलजी इसका उत्तम उदाहरण है। वह स्वयं बेपढ़ा था, परन्तु उसके दरबार में फारस आदि बाहरी देशों से भी आकर बड़े-बड़े विद्वान रहते थे। मुहम्मद तुगलक स्वयं बड़ा विद्वान था और विद्वानों का बड़ा आदर करता था। फिरोज तुगलक मुस्लिम विद्वानों का स्वागत अपने अंगूरी महल में किया करता था। उसे इतिहास से बड़ा प्रेम था और **जियाउद्दीन बरनी एवं शम्स-ए-सिराज अफीफ** उसके दरबारी इतिहास लेखक थे।

दिल्ली के सुल्तानों ने **फारसी** को अपनी राजभाषा बनाया था। अतः स्वाभाविक है कि उस समय फारसी के विद्वानों का विशेष आदर हुआ। उस समय दिल्ली फारसी साहित्य का बड़ा केन्द्र बन गयी थी। इसका एक कारण और भी था। मंगोलों के हमलों से भयभीत फारसी के अनेक विद्वान मध्य एशिया, ईरान, इराक आदि देशों से दिल्ली में शरण लेने के लिए आये और यहाँ सुल्तानों ने उनका खूब स्वागत किया।

फारसी के उस समय के विद्वानों में कुछ तो बहुत ही प्रसिद्ध हैं। उनमें एक **अमीर खुसरो** है जिसने अनेक ग्रन्थ और काव्य लिखे। अलाउद्दीन के समय का महाकवि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शेख निजामुद्दीन हसन संसार में एक प्रसिद्ध विद्वान था। मुहम्मद तुगलक के समय में मौलाना **मोयीउद्दीन उमरानी** ने मुस्लिम धर्मशास्त्र पर अनेक ग्रंथ रचे। फिरोज तुगलक के राजदरबारी इतिहास-लेखकों के नाम पहले आ चुके हैं।

फारसी के सिवा जनसाधारण की भाषा **हिन्दी** में भी उस समय अनेक पुस्तकें लिखी गयीं। चन्दबरदाई आदि वीर गाथा काल के कवि इसी समय में हुए। फारसी के प्रसिद्ध विद्वान अमीर खुसरो ने भी हिन्दी में कविताएं बनायीं। अनेक साधु-सन्तों और मुस्लिम सूफियों की वाणियां भी हिन्दी में रची गयीं। हिन्दी भाषा की जो शैली उर्दू भाषा कहलाती है उसका प्रारम्भ भी इसी युग में हुआ।

इमारतें और उनकी कला—फारस और गजनी की संस्कृति में पले हुए दिल्ली के तुर्क केवल सैनिक ही न थे, वरन इमारतों के भी बड़े शौकीन थे। उनमें कब्रें, मसजिदें और किले बनवाने की रुचि पहले ही से थी। कुतुबुद्दीन ऐबक और इल्तुतमिश ने सैकड़ों मंदिरों को तुड़वाकर उनके पत्थरों से मसजिदें बनवायीं। इनके बनाने वाले थोड़े से विदेशियों को छोड़कर अधिकतर हिन्दू ही थे, अतः उनकी बनावट हिन्दुआनी है। तुर्कों ने हिन्दू शैली में अपनी शैली का ऐसा सुन्दर मेल किया कि उनकी वास्तु-कला ने एक नया और स्वतन्त्र रूप धारण कर लिया जो न तो विशुद्ध हिन्दू है और न विशुद्ध मुस्लिम। दोनों का मिला-जुला रूप है। इतिहास में इसे भारतीय इस्लामी कला कहते हैं। इस कला की बढ़िया मिसालें दिल्ली में कुतुबुद्दीन की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मसजिद तथा इल्तुतमिश का मकबरा और कुतुबमीनार हैं। उनका वर्णन उन सुल्तानों के प्रसंग में हो चुका है।

अलाउद्दीन खिलजी के समय में भारतीय-इस्लामी कला उन्नति के ऊँचे शिखर पर जा पहुँची। कुतुबमीनार के पास अलाई दरवाजा इसका सर्वोत्तम नमूना है। यह एक आयत के

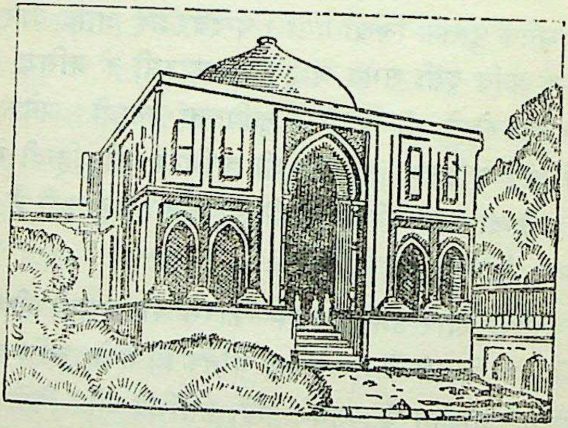

दिल्ली में अलाई दरवाजा

आकार की इमारत है। उसकी चारों दीवारों के बीच में एक दरवाजा है। दरवाजों के अगल-बगल जालीदार खिड़कियाँ और ऊपर स्तूपी छत है। इसमें खोदाई और संगमरमर का सुन्दर काम देखते ही बनता है।

इसी समय की एक दूसरी सुन्दर इमारत दिल्ली में निजाम-उद्दीन औलिया के दरबार में स्थित मसजिद है।

तुगलक सुल्तानों की इमारतों में वह वैभव नहीं पाया जाता जो गुलाम वंश और खिलजियों की इमारतों में है। मुहम्मद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुगलक और फिरोज तुगलक दोनों को इमारतें बनवाने का शौक था। उनके समय में दिल्ली के पास तुगलकाबाद और फिरोजाबाद नगर बसाये गये जिनकी इमारतों के खंडहर अब तक विद्यमान हैं।

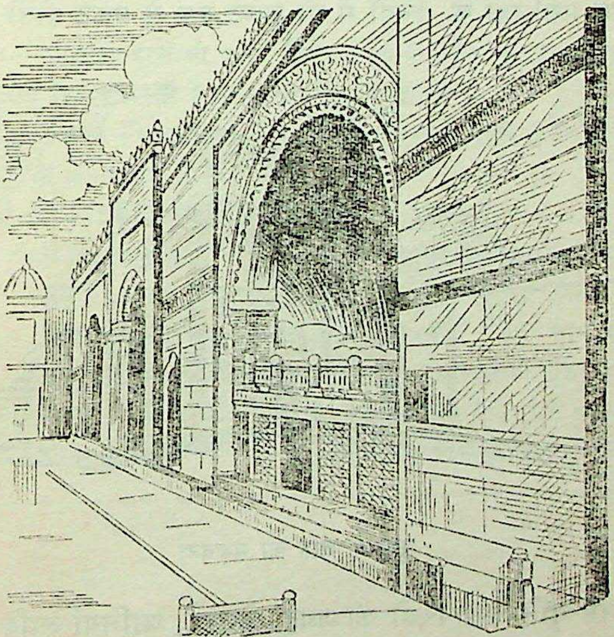

निजामुद्दीन औलिया की दरगाह

तुगलकों के समय में दिल्ली सल्तनत के बुरे दिन आ गये थे। उनकी छाप इमारतों पर साफ झलकती है। यहाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयासुद्दीन तुगलक के मकबरे का चित्र दिया गया है । इसमें सजावट या कारीगरी का अभाव है । उनकी सारी इमारतों में सजावट की अपेक्षा सादगी और गम्भीरता अधिक है ।

भारतीय-इस्लामी कला की विशेषताएं इस पाठ में दिये हुए मसजिदों के चित्रों में भी स्पष्ट रूप से प्रकट होती हैं ।

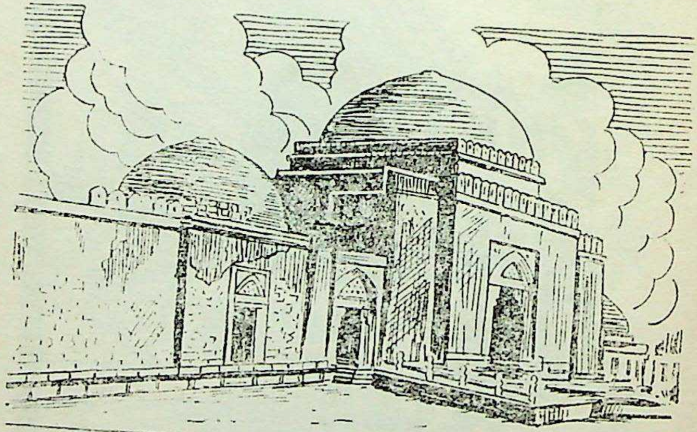

तुगलक शाह का मकबरा

इनमें मूर्तियों या चित्रों की जगह बेलबूटे, जालियां आदि हैं । समूह के साथ नमाज पढ़ने के लिए बड़े दालान या आँगन हैं और ऊपर गुम्बद बने हैं । अजान के लिए ऊँची मीनारें हैं । इमारतों में अनेक मेहराब हैं जो आड़े पत्थरों या ईंटों को जोड़कर बनाये गये हैं । सबसे बड़ी बात यह है कि इनमें हिन्दू-मुस्लिम शैलियों का उत्तम मिलाप है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—नीचे लिखे विद्वान कब हुए ? वे क्यों प्रसिद्ध हैं ?

अमीर खुसरो, शेख निजामुद्दीन हसन, मौलाना मोयीउद्दीन उमरानी, जियाउद्दीन बरनी, शम्स-ए-सिराज अफीफ, चन्दबरदाई।

२—दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों की बनवायी हुई कुछ इमारतों का वर्णन करो।

३—'भारतीय-इस्लामी कला' किसे कहते हैं ? इस कला की क्या विशेषताएं हैं ? इमारतों के उदाहरण देकर समझाओ।

४—तुगलकों की इमारतों में क्या विशेषता पायी जाती है ? उनमें सजावट का अभाव क्यों है ?

५—नीचे लिखे वाक्यों में खाली स्थानों को पूरा करो—

दिल्ली के सुल्तानों ने..............को अपनी राजभाषा बनाया। अमीर खुसरो ने फारसी और..........में कविताएं लिखीं। दिल्ली में भारतीय-इस्लामी कला के नमूने..........नाम की इमारतों में साफ दिखायी पड़ते हैं। इन इमारतों को मूर्तियों या चित्रों की जगह.............से सजाया गया है। इनमें नमाज पढ़ने के लिए............है और अजान देने के लिए........।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिल्ली सल्तनत का पतन-काल

पाठ १—सल्तनत का ह्रास और उसके खंड

तुम पिछले अध्याय में फिरोज तुगलक के विषय में पढ़ चुके हो। उसके मरने के बाद सल्तनत के खंड-खंड हो गये। एक बार तो ऐसा हुआ कि दिल्ली में दो सरकारें बन गयीं। तुगलक वंश के सुल्तान की सरकार तो पुरानी दिल्ली में और दूसरे की उसके पड़ोस में नयी राजधानी फिरोजाबाद में। इनकी घरेलू लड़ाई चल रही थी कि तैमूर ने भारत पर आक्रमण किया। उसके धक्के से बची-खुची प्रतिष्ठा मिट्टी में मिल गयी।

तैमूर के लौटने के कोई सोलह वर्षों बाद मुल्तान में स्थित उसके प्रतिनिधि सैयद खिज्र खाँ ने दिल्ली सल्तनत के उद्धार का प्रयत्न किया, पर वह सफल नहीं हुआ। वह दिल्ली की गद्दी पर **सैयद वंश** का संस्थापक माना जाता है। उसके वंशज भी असफल रहे और दिल्ली **लोदी वंश** के अफगानों के हाथ में आ गयी (१४५१ ई०)। इस वंश के पहले दो सुल्तानों की विजयों के कारण दिल्ली सल्तनत का गौरव कुछ-कुछ पुनः लौटा, परन्तु तीसरे सुल्तान इब्राहीम लोदी के अभिमान ने फिर चौपट कर दिया। भारत में मुगल राज्य के संस्थापक बाबर ने दिल्ली को इब्राहीम लोदी ही से छीना था। (१५२६ ई०)

जब बाबर ने भारत पर आक्रमण करने का विचार ही किया था, उस समय दिल्ली सल्तनत खंड-खंड हो चुकी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
लगभग सभी बड़े-बड़े प्रान्तों में स्वतंत्र राज्य बन गये थे। देश का जो भाग दिल्ली के लोदी वंश के अधिकार में था। उसमें भी सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह की अग्नि जल रही थी।

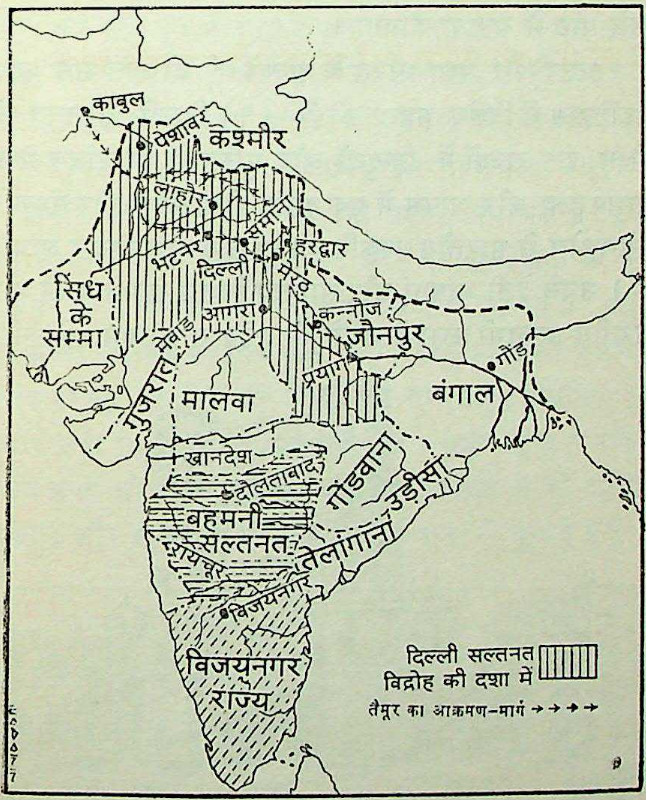

दिल्ली सल्तनत विद्रोह की दशा में

स्वतन्त्र राज्य हिन्दू और मुस्लिम, दोनों प्रकार के थे। मानचित्र में मुख्य राज्यों के नाम पढ़ो (१) उत्तर भारत में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जौनपुर और बंगाल, (२) मध्य भारत में मालवा, गुजरात, मेवाड़, सिन्ध और खानदेश तथा (३) दक्षिण में बहमनी सल्तनत और विजयनगर राज्य। दक्षिण के राज्यों का हाल अगले पाठ में बताया जायगा।

उत्तर और मध्य भारत के राज्यों की दो बातें उस काल के इतिहास में विशेष महत्व की हैं—(१) दिल्ली सल्तनत की अपेक्षा इन राज्यों में हिन्दुओं और मुस्लिमों का अधिक **मेल-मिलाप** हुआ और आपस में एक दूसरे की सभ्यता और संस्कृति के मेलजोल से भारतीय संस्कृति की धारा का रंग निखर आया। (२) उनमें देशी भाषाएं और साहित्य विशेष रूप से पनपे और भारतीय-इस्लामी कला के नमूने की अनेक सुन्दर इमारतें बनीं।

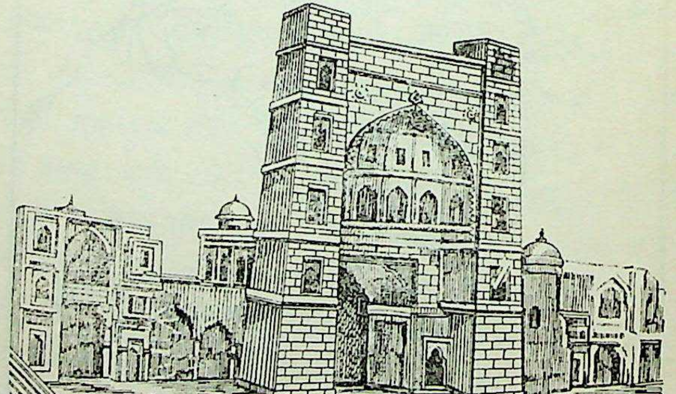

जौनपुर में अताला मसजिद

इस पाठ में स्वतन्त्र रियासतों की दो एक इमारतों का वर्णन आवश्यक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जौनपुर में इब्राहीम शर्की ने कई मन्दिरों की सामग्री से अताला मसजिद बनवायी। इसमें हिन्दू कला का विशेष प्रभाव है। चित्र में देखो कि अन्य मसजिदों के समान अताला मसजिद में मीनारें तक नहीं हैं। जौनपुर में लाल मसजिद नाम की एक इमारत है जिसका रूप हिन्दू शैली से अधिक मिलता है। यही बात कहीं कम कहीं ज्यादा गुजरात, मालवा और बंगाल की उस समय की स्वतन्त्र मुस्लिम सुल्तानों की बनवायी इमारतों में पायी जाती है।

बंगाल में चौदहवीं शती में बनी अदीना मसजिद, पन्द्रहवीं शती में बनी छोटी सोना मसजिद और सोलहवीं शती के शुरू की बड़ी सोना मसजिद अपने ढंग की निराली इमारतें हैं। इनमें बड़ी सोना मसजिद का चित्र यहाँ दिया गया है। अदीना मसजिद में एक दो नहीं, ईंटों के बने छियालिस गुम्बद हैं। मसजिद की चौड़ाई बड़ी विशाल और असाधारण है। बड़ी सोना मसजिद करीब सवा सौ बरसों पुरानी अदीना मसजिद से भी अधिक विशाल और सुन्दर है और उसमें पूरे चार सौ गुम्बद हैं।

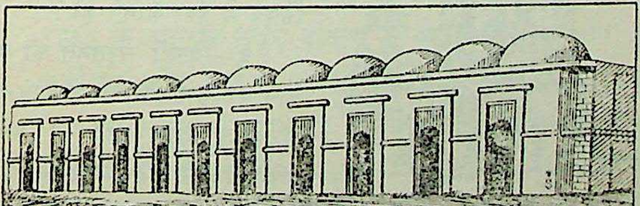

गौड़ (बंगाल) में बड़ी सोना मसजिद

बंगाल के सुल्तानों ने हिन्दू धर्म और साहित्य की उन्नति में बाधा नहीं डाली, वरन सहायता ही दी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेवाड़ उत्तर भारत के हिन्दू राज्यों में सबसे बड़ा और प्रबल था। उसमें अनेक वीर और प्रतापी राजा हुए। महाराणा कुम्भा वीर होने के अतिरिक्त बड़ा विद्वान, कवि और संगीतज्ञ भी था। उस समय मेवाड़ का संघर्ष प्रायः गुजरात, मालवा और दिल्ली के सुल्तानों से होता रहता था। महाराणा कुम्भा ने अपने पड़ोसियों के विरुद्ध कई युद्धों में विजय प्राप्त की। अपनी विजय की याद में उसने चित्तौड़ में कीर्ति-स्तम्भ बनवाया जो वास्तुकला का एक उत्तम नमूना है। इस स्तम्भ पर देवताओं की मूर्तियों के साथ 'अल्लाह' शब्द भी अंकित है।

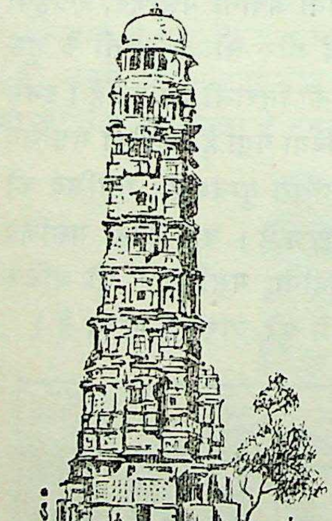

चित्तौड़ का कीर्ति-स्तम्भ

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—तैमूर के आक्रमण के बाद दिल्ली सल्तनत की क्या दशा हुई ?

२—सैयद और लोदी वंशों के विषय में क्या जानते हो ?

३—दिल्ली सल्तनत का पतन होने पर उत्तर भारत में कौन-कौन से मुख्य राज्य खड़े हो गये ? इन राज्यों से हिन्दू-मुसलमानों के आपस में सम्बन्ध कैसे थे ?

४—जौनपुर और बंगाल की कुछ ऐसी इमारतों के नाम लो जो चौदहवीं व पंद्रहवीं शती में बनीं। इन इमारतों की वास्तुकला में क्या विशेषता है ?

५—मेवाड़ के महाराणा कुम्भा के विषय में तुम क्या जानते हो ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—विजयनगर राज्य और बहमनी सल्तनत

पिछले एक पाठ में तुमने अलाउद्दीन के सेनापति मलिक काफूर की दक्षिण विजयों और **लूटमार** का हाल पढ़ा है। इसके फलस्वरूप उस समय से दक्षिण में बड़ी गड़बड़ी मच गयी। मुहम्मद तुगलक भी स्थिति को न संभाल सका। इसका लाभ उठाकर **हरिहर** और **बुक्का** नाम के दो भाइयों ने कृष्णा नदी के दक्षिणी प्रदेश में प्राचीन चोल साम्राज्य के खंडहरों पर स्वतन्त्र **विजयनगर** राज्य की स्थापना की (१३३६ ई०)। दिल्ली की गद्दी पर उस समय तुगलक वंश का राज्य था। उतनी दूर दक्षिण में अपना शासन कायम रखना उस समय तुगलक सुल्तानों के सामर्थ्य के बाहर था। अतः विजयनगर राज्य कृष्णा नदी से कुमारी अन्तरीप तक फैल गया। इसी राज्य के कारण सुदूर दक्षिण में हिन्दू सभ्यता और संस्कृति सुरक्षित और फूलती फलती रही।

उसी युग में तुगलकों के दुर्बल होने पर ताप्ती और कृष्णा नदियों के बीच में एक प्रबल एवं स्वतन्त्र मुस्लिम सल्तनत **'बहमनी'** उठ खड़ी हुई थी। विजयनगर के राजाओं ने उसे कृष्णा के दक्षिण में बढ़ने से रोके रखा। बहमनी एवं विजयनगर इन दोनों राज्यों में कृष्णा और तुंगभद्रा के बीच के रायचूर दोआब के लिए वर्षों तक संघर्ष जारी रहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजयनगर में बुक्का के वंश के अलावा दो अन्य राजवंशों ने भी राज्य किया। तीसरे राजवंश का **कृष्णदेव राय** (१५०६-१५२६ ई०) विजयनगर का सबसे महान और शक्तिशाली राजा हुआ है।

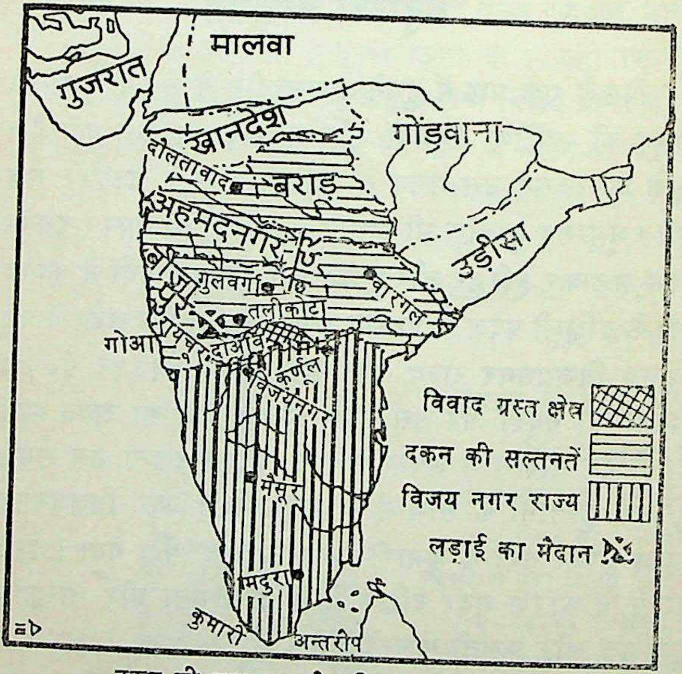

दकन की सल्तनत और विजयनगर राज्य

पन्द्रहवीं शती के अन्तिम भाग में बहमनी राज्य पाँच शक्तियों में बँट गया था। उनमें बीजापुर के आदिलशाही सबसे प्रबल थे। कृष्णदेव राय ने आदिलशाही सुल्तान को भी युद्ध में पराजित किया। उसके प्रताप से विजयनगर का राज्य सौ वर्षों तक बना रहा। बाद में जब दक्षिण के पाँचों सुल्तानों ने मिल कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सामूहिक रूप से मुकाबला किया, तब कहीं विजयनगर के राजा को हरा सके (१५६५ ई० तालीकोट का युद्ध)।

विदेशियों के विवरण तथा वर्णन–विजयनगर राज्य कितना महान था, इसकी गवाही अनेक विदेशी यात्रियों के वर्णनों में मिलती है। नमूने के लिए तुम इस पाठ में तीन यात्रियों के लिखे वर्णन पढ़ोगे। उनसे तुम विजयनगर की समृद्धि और महानता की कल्पना कर सकते हो।

इटली निवासी एक यात्री **निकोलो कोंति** ने लिखा है कि 'विजयनगर की राजधानी ६० मीलों के घेरे में थी। नगर में ६० हजार ऐसे पुरुष थे जो शस्त्र धारण कर सकते थे।' **अब्दुलरजाक** ने, जो कालीकट में तैमूर के पुत्र का राजदूत था, लिखा है कि यह नगर ऐसा था कि जिसके समान दूसरा नगर संसार में न तो सुना गया न देखा। यह नगर सात चहार-दीवारों से घिरा था। राजा के कोष में कितने ही ऐसे कमरे थे जो सोने से भरे हुए थे। साधारण नगर निवासी भी रत्न और सोने के गहने पहनते थे। विजय नगर राज्य के समय में ही भारत का यूरोपीय लोगों से पहला सम्पर्क हुआ था। प्रसिद्ध पुर्तगीज नाविक वास्को-द-गामा की यात्रा का हाल तुम पढ़ चुके हो। एक पुर्तगीज यात्री **पाएस** ने भी जो कृष्णदेव राय के शासन-काल में आया था, लिखा है कि नगर में एक लाख से भी अधिक मकान थे। अनेक सुन्दर तालाबों, नहरों और बाग-बगीचों से नगर की शोभा बढ़ाई गयी थी।

कला और साहित्य—

विजयनगर में अनेक मन्दिर बनाये गये और उन्हें मूर्तियों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
से सजाया गया था। इनमें बिट्ठल स्वामी का मन्दिर वास्तु-कला का एक अत्युत्तम नमूना है। इसी प्रकार काँसे की

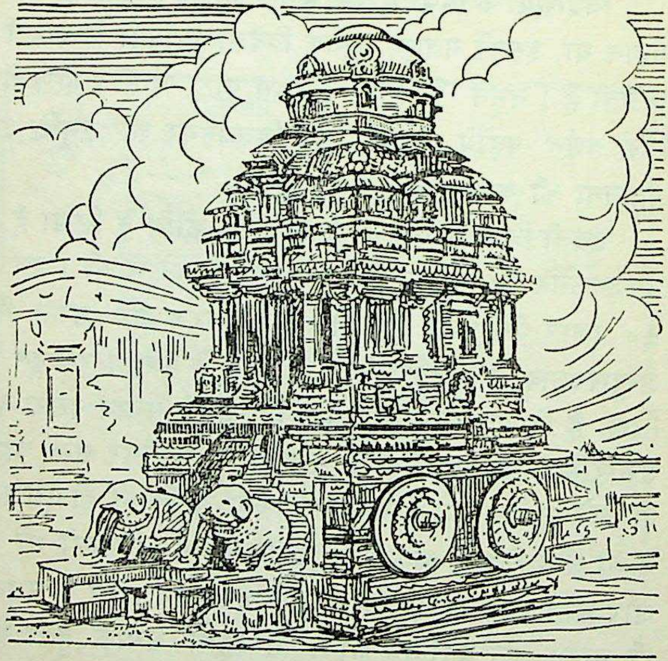

बिट्ठल स्वामी का मन्दिर

कृष्णदेव राय और उसकी रानियों की मूर्तियां भी बड़ी सजीव हैं और कला के उत्तम नमूने हैं। विजयनगर में जो साहित्य लिखा गया था उसका संस्कृत में बड़ा उच्च स्थान है। वेदों का भाष्य लिखने वाले प्रसिद्ध विद्वान 'सायण' को वेदों के पढ़ने वाले अभी तक आदर के साथ याद रखते हैं। उसके भाई माधव ने भी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अनेक संस्कृत ग्रंथ लिखे। राजा कृष्णदेवराय स्वयं विद्वान, कवि और संगीतज्ञ था। उसकी राजसभा विद्वानों से भरी थी।

बहमनी सुल्तानों की इमारतों में तुर्की, मिस्री और ईरानी तत्वों का समावेश होते हुए भी भारतीय वास्तुकला की गहरी छाप है। ये इमारतें प्रायः गुलबर्गा, बीजापुर और बीदर में पायी जाती हैं। उनमें बीजापुर में मुहम्मद आदिलशाह का मकबरा, जो गोलगुम्बद के नाम से प्रसिद्ध है, इस मिली-जुली शिल्पकला का उत्तम उदाहरण है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—दक्षिण में विजयनगर और बहमनी राज्यों की स्थापना के विषय में क्या जानते हो ?

२—विजयनगर का सबसे प्रसिद्ध राजा कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

३—विजयनगर और बहमनी राज्यों में परस्पर संघर्ष के क्या कारण थे ? उनका क्या परिणाम हुआ ?

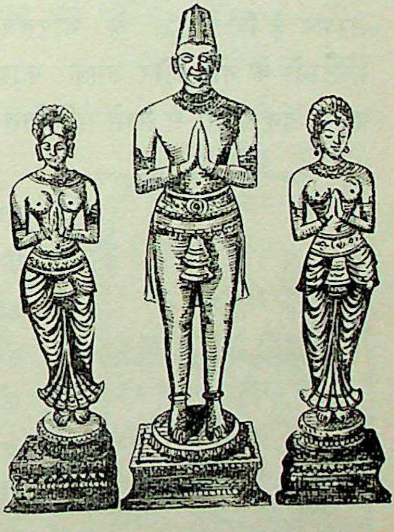

कृष्णदेवराय और उसकी रानियां

४—विजयनगर राज्य के विषय में विदेशियों की सम्मतियां बताओ।

५—विजयनगर में हिन्दू कला और साहित्य की उन्नति का हाल बताओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा अध्याय

धर्म सुधारक

तुमने कबीर, नानक और चैतन्य महाप्रभु के नाम सुने होंगे। ये धर्म-सुधारक महात्मा दिल्ली सल्तनत के काल में हुए। इनका भारत इतिहास में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। सम्भव है कि बहुत से भारतवासी उस समय के दिल्ली सुल्तानों के नाम और उनके कार्यों के विषय में जानते हों, परन्तु इन सन्तों से सभी परिचित हैं।

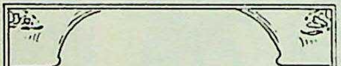

स्वामी रामानन्द

दिल्ली सल्तनत के समय सुल्तानों की विजयों के साथ-साथ भारत में इस्लाम धर्म भी फैल रहा था इस्लाम के मानने वालों को हिन्दू धर्म छोड़ना पड़ता था। अतः उस समय के विद्वानों ने विचार किया कि हिन्दू धर्म में ऐसे क्या दोष और इस्लाम में ऐसे क्या गुण हैं जो अपने देश के सनातन धर्म को छोड़कर विदेशियों के नवीन धर्म को ग्रहण किया जाय। उत्तर भारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
के इन विचारकों में **स्वामी रामानन्द** का नाम स्मरणीय है। प्रसिद्ध धर्म-सुधारक कबीर उन्हीं के शिष्य थे। इन महात्मा ने दोनों धर्मों के सार एक समान पाये, भेद केवल ऊपरी बातों में था और ये ऊपरी बातें न हिन्दू धर्म के मुख्य तत्व थे, न इस्लाम के। अतः इन धर्म-सुधारकों के उपदेशों से धर्म की एक ऐसी धारा बही जिसे जातियों, वर्गों और दोनों धर्मों के नर-नारियों ने सराहा। इसका विशेष फल यह हुआ कि हिन्दू धर्म को एक ऐसा रूप प्राप्त हुआ जिसने मुस्लिम शासकों और मुल्ला-मौलवियों से हिन्दू धर्म की रक्षा की।

महात्मा कबीर

हिन्दू धर्म के इस सुधरे रूप के तीन मुख्य अंग थे:–

(१) भक्ति भावना,
(२) मतों का समन्वय और
(३) उदार दृष्टि।

(१) भक्ति भावना—ज्ञान मार्ग, कर्म मार्ग तथा भक्ति मार्ग भारत के धर्मों में प्राचीन काल से चल आये हैं। अतः इन महात्माओं ने कहा कि ईश्वर पतितपावन है, भक्ति से प्रसन्न होता है, भक्त की रक्षा करता है। किन्तु, जनता के लिए यह कोई नयी बात नहीं थी, वह आसानी से पच गयी। इन धर्म-सुधारकों ने ईश्वर के पाने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुरु को भी बड़ा महत्व दिया। इस विषय में कबीर की प्रसिद्ध वाणी तुमने सुनी होगी :—

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागौं पायँ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।

इस्लाम ने ईश्वर और रसूल पर विश्वास, इन्हीं दोनों बातों पर विशेष बल दिया था। हिन्दू धर्म के सुधरे रूप के सामने इस्लाम की इन बातों में कुछ विशेषता न रही। हिन्दू सुधारकों ने गीता के उपदेशों की याद दिलायी कि दुष्टों के विनाश और साधुओं के परित्राण के लिए ईश्वर मनुष्य शरीर धारण करने में भी संकोच नहीं करता। जनता के हृदय में ईश्वर के लिए अटूट विश्वास उमड़ आया, वह आत्म-विश्वास से ओतप्रोत हो गयी। उधर सुधारकों के पवित्र और निष्काम जीवन ने गुरुओं के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कर दी।

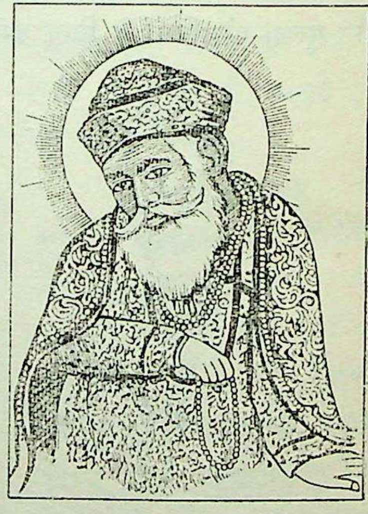
गुरु नानक

(२) **मतों का समन्वय**—कबीर, गुरु नानक आदि धर्म सुधारकों ने बताया कि सभी धर्म एक हैं, उनमें भेद करना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पागलन है। इस विषय में कबीर की वाणी को उद्धृत करना अधिक उचित होगा—

भाई रे दुई जगदीश कहाँ ते आया, कहु कौने बौराया।
अल्लाह राम करीम केशव, हरि हजरत नाम धराया॥
गहना एक कनक ते गहना, यामे भाव न दूजा।
कहन सुनन को दुई कर धाये एक नमाज एक पूजा॥
वही महादेव वही मुहम्मद, ब्रह्मा आदम कहिए।
को हिन्दू को तुरक कहावे, एक जिमी पर रहिए॥
वेद कितैब पढ़े वै कुतुबा, वै मुलना वै पांड़े।
बेभर बेभर नाम धराये, एक मिट्टी के भांड़े॥

नानक ने भी इसी प्रकार ललकार कर कहा:—

बन्दे एक खुदाय के हिन्दू मुसलमान।
दावा राम रसूल कर, लड़ दे बेईमान॥

(३) **उदार दृष्टि**—भक्ति भावना और मतों की एकता के सामने धर्म के विषय में संकुचित विचारों का कोई स्थान नहीं रहा। सुधारकों के इस प्रकार के उपदेशों से लोगों का दृष्टिकोण उदार बन गया। हिन्दुओं में जात-पाँत के भेदभाव जो समाज में घुन की तरह लगे थे वृथा समझे गये। इस सम्बन्ध की उक्तियां अब तक प्रसिद्ध हैं, जैसे '**जात-पाँत पूछे नहि कोय, हरि को भजे सो हरि का होय।**'' यह सब लाभ तो हिन्दू धर्म और हिन्दू समाज को हुए, किन्तु इस्लाम भी इस सुधार-धारा से अछूता न बचा। सुधारकों के उपदेशों का अनेक मुसलमानों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर भी प्रभाव पड़ा। उनका भी दृष्टिकोण उदार बना। सन्तों के उपदेश हिन्दुओं की भाँति मुसलमान भी श्रद्धा के साथ सुनने जाते थे। जो शिष्य गुरु नानक के साथ रहते थे, उनमें एक मुसलमान था। कबीर के मरने पर तो मुसलमानों ने उनके फूलों पर मजार तक बनाया और हिन्दुओं ने समाधि। जो काम सन्तों ने हिन्दुओं के बीच में किया, वही सूफियों ने मुसलमानों में किया। इस प्रकार मध्य युग में दो विरोधी मतों का मेल भारत ही नहीं, अपितु संसार के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—इस्लाम धर्म का प्रभाव हिन्दू धर्म पर क्या पड़ा ?

२—धर्म-सुधारकों ने धर्म के किन तत्वों पर विशेष जोर दिया ?

३—इस पाठ में दी हुई कबीर और नानक की वाणियों के भावार्थ बताओ।

४—हिन्दू सुधारकों के उपदेशों का मुसलमानों पर क्या प्रभाव पड़ा ?

५—नीचे लिखे वाक्यों में खाली स्थान भरो—

दिल्ली सल्तनत के काल में उत्तर भारत में अनेक महात्मा हुए जैसे……। इन महात्माओं के उपदेशों से लोगों का दृष्टिकोण ……बना। हिन्दुओं में……के भेदभावों को वृथा समझा जाने लगा। हिन्दू सुधारकों की भाँति मुसलमानों में अनेक सुधारक महात्मा हुए जिन्हें……… कहा जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवां अध्याय

दिल्ली साम्राज्य के लिए तिकोना संघर्ष—
अफगान, राजपूत और मुगल

पाठ १—बाबर का आक्रमण और विजय

तुमने पिछले एक पाठ में दिल्ली सल्तनत के ह्रास और उसके खंडित होने का हाल पढ़ा है। जब दिल्ली इब्राहीम लोदी के हाथ में थी, तब दिल्ली पर कब्जा करके भारत में अपना राज्य स्थापित करने के लिए दो शक्तियां मैदान में और आयीं—एक राजपूताने में मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंह या साँगा की और दूसरी काबुल के मुगल शाह बाबर की।

बाबर को निमन्त्रण—इस समय बाबर ने अपने को बहुत अच्छी स्थिति में पाया, क्योंकि अभिमानी इब्राहीम लोदी से क्रुद्ध होकर उसके अधीन लाहौर का हाकिम दौलत खां लोदी बाबर को हमले के लिए बुला रहा था। दूसरे इब्राहीम लोदी का चाचा अलाउद्दीन दिल्ली की गद्दी पाने के लिए बाबर के पास जाकर उसकी सहायता माँग रहा था। तीसरे महाराणा साँगा भी, जिसने राजपूताने पर प्रभुत्व जमाकर आगरे के पास तक अपना अधिकार बढ़ा लिया था, चाहता था कि बाबर आकर इब्राहीम लोदी का विनाश कर दे। साँगा समझता था कि तैमूर का वंशज बाबर तैमूर की भाँति लूटमार कर लौट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

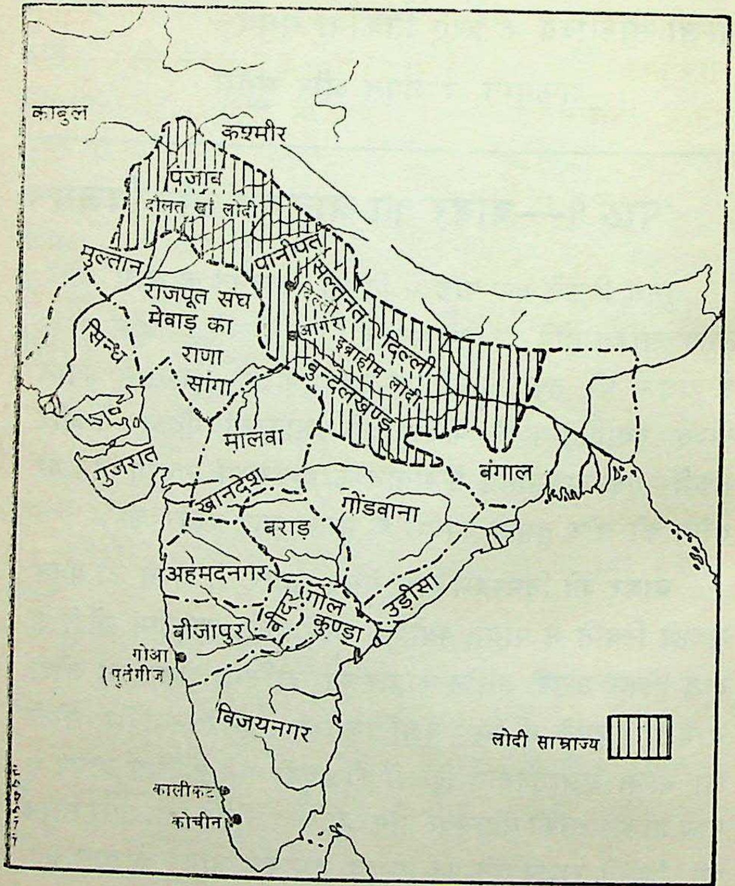

लोदी साम्राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जायगा और उसे राजपूत साम्राज्य बनाने के लिए मैदान साफ मिल जायगा। उसने भी इब्राहीम के विरुद्ध बाबर का साथ देने का विचार प्रकट किया। आपस में ठहरा कि बाबर और साँगा दोनों मिलकर दिल्ली पर एक साथ धावा मारें। बाबर दिल्ली तक का प्रदेश ले ले और साँगा आगरे तक का।

बाबर

इस निर्णय के पहले बाबर तीन बार पंजाब पर चढ़ाई कर चुका और लौट गया था। अब उसने पंजाब पर फिर चढ़ाई की और लाहौर जीत लिया। अगले वर्ष वह दिल्ली तक चढ़ आया।

पानीपत का युद्ध—इब्राहीम लोदी ने पानीपत के मैदान में उसका मुकाबला किया। यद्यपि सुल्तान की सेना मुगल सेना से संख्या में बहुत अधिक थी, परन्तु बाबर युद्धकला में कुशल था और उसके पास ७०० यूरोपीय तोपें थीं। अफगानों की हार हुई (१५२६ ई०)। बाबर ने दिल्ली और आगरा पर अधिकार कर लिया। कई अफगान सरदार बाबर की सेवा में आ गये। उनकी सहायता से बाबर के पुत्र हुमायूँ ने अवध, जौनपुर और गाजीपुर तक विजय कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खानवा का युद्ध—साँगा की आशा के विपरीत बाबर ने भारत में अपना राज्य स्थापित करना शुरू किया। उसने आगरा ले लिया, जिस पर साँगा अधिकार करना चाहता था। अतः बाबर और साँगा में लड़ाई ठन गयी। आगरे के पास खानवा के रणक्षेत्र में राजपूत और मुगल सेनाएं आमने-सामने हुईं। कुछ अफगान सरदार भी साँगा से आ मिले। मुगल सेना घबड़ा गयी थी, लेकिन बाबर ने अपने सैनिकों के धार्मिक भावों को भड़काकर उनको बहुत समझाया। तब उसके साथी सरदारों और सैनिकों ने कुरान हाथ में लेकर कसमें खायीं कि युद्ध से मुँह नहीं मोड़ेंगे।

युद्ध की कला में पारंगत बाबर ने बड़ी बुद्धिमानी से अपनी सेना का संचालन किया। दिन भर घनघोर युद्ध हुआ (१५२७ ई०)। तोपों की मार के सामने राजपूतों की एक न चली। साँगा हार गया। मूर्च्छित अवस्था में उसके कुछ सरदार उसे पालकी में डालकर रणक्षेत्र के बाहर उठा ले गये। सम्भव था कि वह पुनः सेना जुटाकर बाबर से लोहा लेता, परन्तु उसके साथियों ने, जो लड़ते-लड़ते थक गये थे, उसे विष देकर मार डाला। उसके अन्त के साथ भारत में राजपूत राज्य के स्थापित करने के स्वप्न का भी अन्त हो गया। साँगा से निपट कर बाबर ने राजपूतों से चन्देरी भी ले ली। अब बाबर को दिल्ली सम्राट बनने में थोड़ी सी कसर बाकी थी।

घाघरा का युद्ध—अभी पूर्वी भागों में अफगान सरदार पूरी तरह परास्त नहीं हुए थे। इब्राहीम लोदी के भाई महमूद लोदी ने बिहार पर अधिकार कर लिया था। बाबर उधर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बढ़ा। महमूद लोदी बंगाल में जा पहुँचा। बाबर बंगाल पहुँचा और घाघरा के युद्ध में उसने अफगानों की बची-खुची शक्ति का अन्त कर दिया। (१५२६ ई०)।

पानीपत, खानवा और घाघरा की विजयों से बाबर ने उत्तर भारत में मुगल साम्राज्य की नींव रख दी। उसके देहान्त की करुण कथा तुम पिछली एक कक्षा में पढ़ ही चुके हो। अपने प्यारे पुत्र हुमायूँ के रोग को अपने ऊपर ले और राज्य उसे सौंप कर वह इस संसार से चल बसा (१५३० ई०) चार वर्षों की अवधि में नये साम्राज्य की नींव रखना बाबर जैसे पराक्रमी योद्धा का ही काम था।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—अफगाान, राजपूत और बाबर तीनों सोलहवीं शती के शुरू में दिल्ली सल्तनत को जीतना चाहते थे। इनमें से कौन सफल हुआ और कैसे ?

२—पानीपत के मैदान में इब्राहीम लोदी और खानवा के मैदान में महाराणा साँगा की हार के मुख्य कारण क्या थे ?

३—महाराणा साँगा के विषय में क्या जानते हो ?

४—बाबर ने भारत में मुगल राज्य की नींव कैसे रखी ?

५—इब्राहीम लोदी, दौलत खाँ लोदी, महाराणा साँगा और बाबर के चरित्रों के विषय में क्या जानते हो ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—हुमायूँ का बहादुरशाह और शेरशाह से संघर्ष

बाबर का जीता हुआ साम्राज्य हुमायूँ को मिल तो गया, परन्तु उसे अपने अधिकार में रखने के लिए उसके सामने अनेक कठिनाइयां थीं। उसके सगे भाई उससे द्वेष करते थे और साथ देने को तैयार न थे। दूसरे, बंगाल-बिहार में एक नया अफगान सरदार शेरखाँ चमक उठा था। तीसरे, गुजरात में बहादुरशाह ने अपनी शक्ति बहुत बढ़ा ली थी। बाबर ने विशेषतया अपनी यूरोपीय तोपों के बल पर रणक्षेत्रों में विजय पायी थी। बहादुरशाह को भी यूरोपीय तोपें और तोपची बहुत आसानी से मिल सकते थे, क्योंकि उसके राज्य गुजरात का पुर्तगीज सरकार गोआ से सीधा सम्पर्क था।

हुमायूँ

बहादुरशाह से युद्ध—हुमायूँ जब मालवा को विजय करने में लगा था, तब बहादुरशाह चित्तौड़ को घेरे पड़ा था। चित्तौड़ लेकर वह हुमायूँ की ओर बढ़ा। मोर्चाबन्दी हुई। बहादुरशाह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपनी पराजय के भय से एक रात को भाग निकला। मालवा और गुजरात हुमायूँ के हाथ लगे। इसी बीच हुमायूँ के भाई अस्करी ने उत्तर में विद्रोह कर दिया था। हुमायूँ को उधर लौटना पड़ा। उसके लौटते ही बहादुरशाह ने पुनः गुजरात पर अधिकार कर लिया (१५३६ ई०)। मालवा भी निकल गया।

शेरखाँ की जीत—हुमायूँ के बहादुरशाह से युद्ध में फँसे

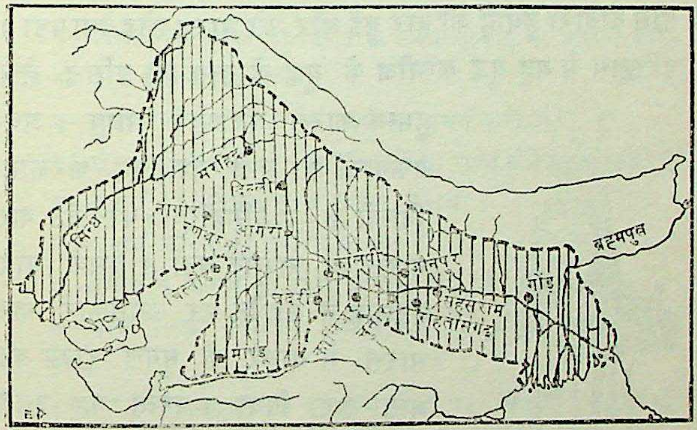

शेरशाह का राज्य (१५४५ ई०)

रहने के समय शेरखाँ ने बंगाल ले लिया था। हुमायूँ उसे परास्त करने के लिए उधर बढ़ा और बढ़ता चला गया। शेरखाँ ने विरोध न किया। यह उसकी चाल थी। बंगाल में बरसात आ गयी और हुमायूँ के लौटने के रास्ते बन्द हो गये। अतः ६ महीने हुमायूँ गौड़ में रुका रहा। इस बीच शेरखाँ ने अपनी स्थिति चुनार, वाराणसी, जौनपुर कन्नौज और पटना में दृढ़ करके हुमायूँ का राजधानी दिल्ली से रास्ता काट दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके अलावा शेरखाँ ने शाह की पदवी धारण की और जौनपुर को भी जीत लिया। अब हुमायूँ घबराया और शेरशाह के विरुद्ध लड़ने के लिए बढ़ा। शेरशाह ने बक्सर के पास **चौसा** में उसको रोका और मुगल सेना को हराया (१५३९ ई०)। हुमायूँ ने एक भिश्ती की सहायता से गंगा पार की और अपनी जान बचायी। अगले वर्ष (१५४० ई०) **हरदोई** के पास दोबारा हुमायूँ की हार हुई और उसे भारत छोड़ देना पड़ा। इतिहास में यह युद्ध **कन्नौज** के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

शेरशाह

हुमायूँ फारस की ओर भागा। अब अफगानों के सूरी वंश का शेरशाह दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठ कर भारत का सम्राट बना। इसके बाद शेरशाह ने लाहौर पर अधिकार कर भारत से बाबर के मुगल राज्य का अन्त कर दिया। परन्तु वह इतने से ही सन्तुष्ट न रहा। उसने पश्चिमोत्तर सीमा पर अधिकार कर वहाँ भी रोहतास नाम का किला बनवाया और मुल्तान पर अधिकार किया। उसने मालवा, मारवाड़, चित्तौड़ और कालिंजर विजय किये। कलिंजर में युद्ध के समय बारुद से जल कर उसकी मृत्यु हो गयी (१५४५ ई०)।

हुमायूँ फारस से लौटा—शेरशाह ने केवल ५ वर्षों तक राज्य किया। उसकी मृत्यु के बाद उसके वंशज दुर्बल निकले और हुमायूं ने शाह फारस की सहायता से ग्यारह वर्षों के बाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत पर आक्रमण करके अफगान सेना को हराया (१५५५ ई०)। इतने कष्ट और आपदाओं के बाद वह अपने पिता बाबर के छोड़े हुए राज्य का मालिक बना और मुश्किल से छह महीने गद्दी पर रहा होगा कि एक दिन अपने पुस्तकालय की सीढ़ी से गिर पड़ा और मर गया (१५५६ ई०)।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—दिल्ली की गद्दी पर बैठने के समय हुमायूं के सामने कौन-कौन सी तीन कठिनाइयां थीं ?

२—हुमायूँ और शेरशाह के संघर्ष का वर्णन करो।

३—शेरशाह कौन था ? उसने दिल्ली का राज्य कैसे प्राप्त किया ?

४—हुमायूँ की असफलता के कारण बताओ।

५—हुमायूँ फारस को क्यों भाग गया ?

६—हुमायूँ ने दिल्ली का राज्य दोबारा कैसे प्राप्त किया ?

७—नीचे लिखी तिथियाँ क्यों प्रसिद्ध हैं। अशुद्ध उत्तरों को काट दो—

(क) १५२६—बाबर की इब्राहीम लोदी पर विजय, शेरशाह की हुमायूँ पर विजय, हुमायूँ की अफगानों पर विजय।

(ख) १५४०—बाबर की इब्राहीम लोदी पर विजय, शेरशाह की हुमायूँ पर विजय, हुमायूँ की अफगानों पर विजय।

(ग) १५५५—बाबर की इब्राहीम लोदी पर विजय, शेरशाह की हुमायूँ पर विजय, हुमायूँ की अफगानों पर विजय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठा अध्याय

शेरशाह सूरी का शासन

शेरशाह सूरी भारत के इतिहास में उस प्रकार चमका और छिप गया जिस प्रकार आकाश में उल्का नक्षत्र, परन्तु वह अपने शासन के गुणों की अमिट छाप अपने पीछे छोड़ गया है और अब तक हमारे देश की शासन-शैली में उसके चिह्न मौजूद हैं। शेरशाह ने मुद्रा में जिस प्रकार का रुपया चलाया, उसी की नकल का रुपया अब तक चला आता है।

राजनीतिक भाग—शेरशाह के समय प्रत्येक प्रान्त **परगनों** में बाँटा गया था। कई परगनों को मिलाकर एक **सरकार** (जिला) बनता था जिसमें दो बड़े सरकारी अफसर रहते थे। उनका काम परगनों के अफसर की देखभाल भी था। हरएक परगने में गाँवों की **पचायतें** थीं जो भीतरी शासन,स्वयं करती थीं। गाँव वालों को चेता दिया गया था कि यदि उनकी सीमा में कोई चोरी आदि अपराध हुआ तो उसकी जिम्मेदारी उन पर होगी। इससे अपराधों में बहुत कमी हो गयी थी।

मालगुजारी—शेरशाह ने धरती की नाप करायी और क्षेत्र-फल के अनुसार मालगुजारी नियत की जो पैदावार का चौथाई भाग होती थी। इस प्रकार किसानों से सीधा सम्बन्ध स्थापित कर जागीरदार का अन्त कर दिया। कर, जिस या

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिक्के दोनों में अदा हो सकता था। **शेरशाह** के सिक्के भी उस समय अनुपम थे। उसने सोने, चांदी और तांबे के अनुपातों का निश्चय करके उनके सिक्के ढलवाये जो कला की दृष्टि से भी बड़े सुन्दर थे। उन पर नागरी और फारसी में उसका नाम होता था और किसी-किसी सिक्के पर तो ऊँ या स्वस्तिका का निशान भी।

शेरशाह के सिक्के

सार्वजनिक हित के काम—पक्की सड़कें, उनके दोनों किनारे पर छायादार वृक्ष, जगह-जगह पर कुएं और सराएं बनवाकर शेरशाह ने यात्रा को सुगम और सुरक्षित बनाया। उत्तर भारत में पूरब से पश्चिम जाने वाली वर्तमान ग्रांड ट्रंक रोड पहले शेरशाह ने बनवायी थी। उसने डाक का भी उचित प्रबन्ध किया।

न्याय में किसी का पक्षपात नहीं किया जाता था, जिसका नमूना यह है कि एक बार एक मामूली स्त्री की फरियाद पर उसने अपने पुत्र को कड़ा दंड दिया। न्याय-शासन के लिए उसने अपने आप कानून भी बनाये। इस प्रकार उसके शासन में कानूनों को मुस्लिम शरीअत के बन्धन से मुक्ति मिली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सेना का प्रबन्ध—सैनिकों की नियुक्ति वह स्वयं करता था। उनको तथा सेनापतियों को नकद वेतन देता था। उसने तोपें ढलवायीं और सेना में एक तोपची दल रखा। सेना को आज्ञा दी कि प्रयाण के समय प्रजा को तनिक भी कष्ट न हो।

शेरशाह की इमारतें—उसने प्राचीन काल के पांडवों के इन्द्रप्रस्थ (इन्द्ररपत गांव) में नयी दिल्ली और पंजाब में रोहतास को बसाया। पटना का फिर उद्धार किया। सहसराम में

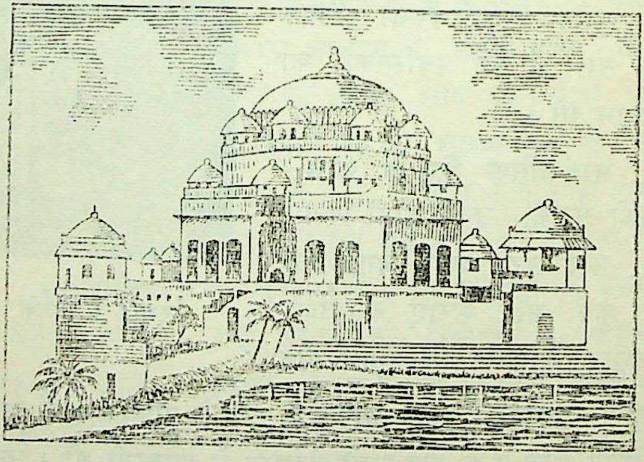

शेरशाह का मकबरा

शेरशाह का मकबरा उसके कला-प्रेम का नमूना है। उसमें हिन्दू और मुस्लिम वास्तुकला का अत्यन्त सुन्दर मिलाप पाया जाता है। यह मकबरा एक तालाब के बीच में ९·१ मीटर ऊँचे चबूतरे पर बनाया गया है। मुख्य इमारत के आठ कोण हैं जिसकी हरएक भुजा १०·६ मीटर लम्बी है। चारों ओर बरामदा है। ऊपर स्तूप की भांति एक विशाल गुम्बद है। चारों ओर कोनों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर अठपहल छतरियां हैं। मुख्य गुम्बद के चारों ओर छोटे-छोटे गुम्बद हैं। प्रसिद्ध कला-समालोचक हैवेल ने इस मकबरे की वास्तुकला की प्रशंसा करते हुए उसे शेरशाह के दृढ़, निर्मल और गम्भीर चरित्र का दर्पण माना है।

महत्व—सभी विद्वान भारत के इतिहास में शेरशाह सूरी के महत्व को स्वीकार करते हैं। न केवल शासन-प्रबन्ध वरन कला के क्षेत्र में भी शेरशाह ने महान सम्राट अकबर को मार्ग दिखलाया था।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—शेरशाह ने अपने राज्य का शासन करने के लिए कौन-कौन से राजनीतिक भाग बनाये थे? उनमें सरकारी कर्मचारियों के क्या कर्तव्य थे?

२—शेरशाह ने मालगुजारी की क्या व्यवस्था की थी?

३—शेरशाह की मुद्रा और न्याय-व्यवस्था का वर्णन करो।

४—शेरशाह के सेना-प्रबन्ध की विशेष बातें क्या थीं?

५—शेरशाह की बनवायी हुई किसी इमारत का वर्णन करो।

६—शेरशाह का भारतीय इतिहास में क्या महत्व है?

७—नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो :—

शेरशाह ने जागीरदारी का……कर दिया। उसने……………………के सिक्के ढलवाये। उसने………से………को जाने वाली सड़क बनवायी। सैनिकों की नियुक्ति वह……करता था। उनको……वेतन देता था। उसके शासन में कानूनों को……के बन्धन से मुक्ति मिली। उसका मकबरा……में बना है और उसमें……और……वास्तुकला का सुन्दर मिलाप पाया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबर का साम्राज्य

पाठ १—साम्राज्य का विस्तार

बालको, तुमने अकबर का नाम सुना है। जिस प्रकार प्राचीन भारत के इतिहास में अशोक सूर्य की तरह चमकता है, उसी प्रकार मध्यकालीन भारत के इतिहास में अकबर भी प्रकाशमान है। उसने यथाशक्ति देश के अनेक प्रान्तों को वश में करके उसे एकता के राजनीतिक बन्धन में बांधा। अनेक धर्मों को मानने वाली भारत की प्रजा को परस्पर प्रेम करना एवं धार्मिक पक्षपातों को छोड़ना सिखाया। वह साहित्य और कला का भी ऐसा अनुपम प्रेमी था कि उसके समय के ग्रन्थ और राजमहलों के नमूने देश का महान गौरव समझे जाते हैं। वास्तव में अकबर भारत का एक राष्ट्रीय सम्राट था। तुम इस अध्याय के तीन पाठों में अकबर के कार्यों का वर्णन पढ़ोगे। आओ, सबसे पहले उसके पचास वर्षों के राज्य-काल की विजयों का अध्ययन करें।

अकबर

आगे दिये हुए नक्शे में अकबर के राज्य की उन सीमाओं को ध्यान से देखो जो उसके पास १५६१ ई० में था। अकबर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की सारी विजयों को दो भागों में बाँट सकते हैं। पहले बीस वर्षों में उसने सिन्धु-गंगा के मैदान को विजय किया और दूसरे तीस वर्षों में उसने पश्चिमोत्तर से काबुल, कश्मीर, सिन्ध और

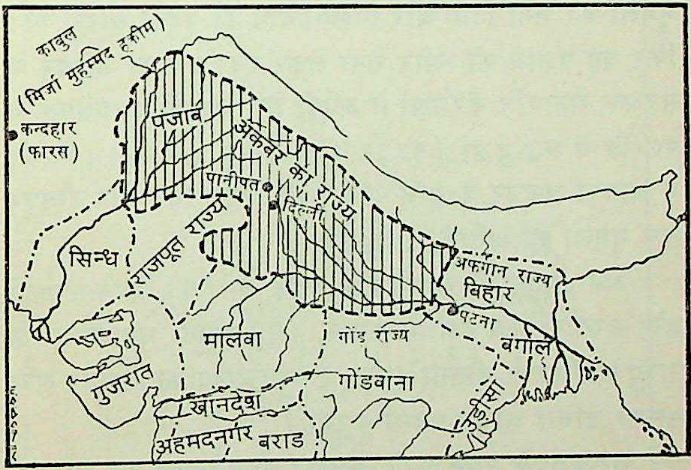

अकबर का राज्य (१५६१ ई०)

कन्दहार, दक्षिण-पूर्व के उड़ीसा तथा दक्षिण के अहमदनगर और खानदेश को जीतकर अपने साम्राज्य में मिलाया।

तुम्हें याद होगा कि हुमायूं को गद्दी लिए कुछ महीने ही बीते थे कि उसकी मृत्यु हो गयी। गद्दी पर बैठने के समय अकबर की आयु केवल तेरह वर्षों की थी। हुमायूं की मृत्यु दिल्ली में हुई, पर अकबर उस समय पंजाब में था। अतः अकबर के सामने जो कठिनाइयाँ आ खड़ी हुई उनकी कल्पना तुम आसानी से कर सकते हो। अकबर को ऐसी बपौती मिली जिसमें झंझट ही झंझट थे। अभी तक सूरी अफगान भी पूरी तरह परास्त नहीं हुए थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शेरशाह के दो भतीजे दिल्ली पर अधिकार करने की घात में थे। उनमें से एक ने अपने मन्त्री हेमचन्द्र को दिल्ली जीतने को भेजा। हेमू ने ग्वालियर, दिल्ली और आगरा से मुगलों को भगा दिया और विक्रमादित्य की पदवी धारण की। फिर वह पंजाब की ओर सेना लेकर बढ़ा। उधर अकबर के संरक्षक सेनापति बैरमखां ने अपनी सेना बढ़ायी। पानीपत के रणक्षेत्र में युद्ध हुआ (१५५६ ई०)। हेमू हार गया। दिल्ली व आगरा अकबर के हाथ आये। फिर ग्वालियर और जौनपुर तक मुगलों का अधिकार हो गया।

अब अकबर के सामने तीन काम थे–(१) अपने संरक्षक और सरदारों को वश में करना, (२) अपने बाप-दादा के राज्य को फिर से जीतना तथा (३) साम्राज्य का विस्तार और उसका उचित शासन-प्रबन्ध करना।

सबसे पहले उसने अपने सरदारों को दबाया। जब बैरमखा बिगड़ा, तब उसे भी बलपूर्वक बाहर निकाला। अपनी संरक्षिका के अत्याचारी पुत्र को तो किले की दीवार से दो बार फिकवाया। इस प्रकार पानीपत के युद्ध के बाद केवल ५ वर्षों के अन्दर अकबर ने अपनी स्थिति दृढ़ कर ली। उसकी आयु भी १८ वर्षों की हो गयी थी।

नीति—अपने बाप-दादा का राज्य प्राप्त करने और भारत में अपने मन का एक देश में एक राज्य स्थापित करने के लिए अकबर ने विलक्षण बुद्धिमानी दिखलायी। उसने राजपूतों से समझौता किया और उनको अपनी ओर मिला लिया। उनके राज-परिवारों में विवाह किये तथा उन्हें ऊँचे-ऊँचे पदों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर नियुक्त किया । इस प्रकार वह राजपूतों का और राजपूत उसके हो गये । अब विजयों का मार्ग सुगम हो गया । यदि

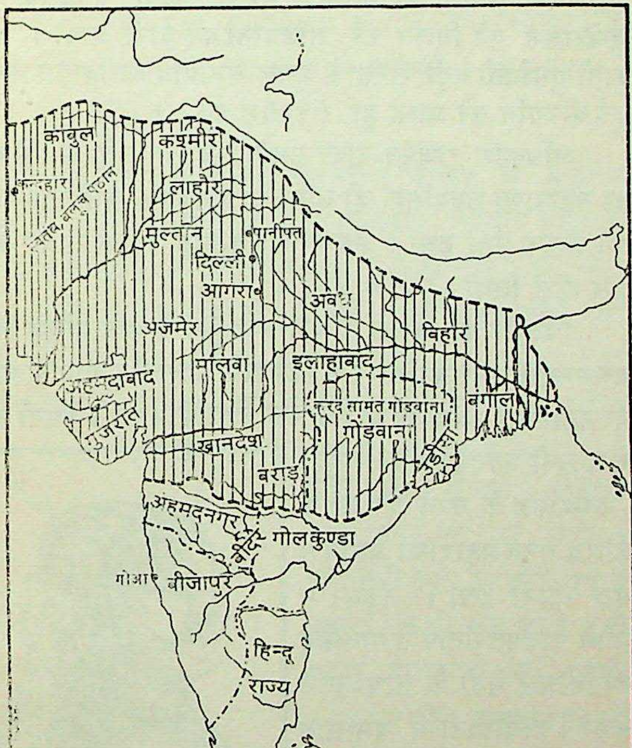

अकबर की मृत्यु के समय मुगल साम्राज्य (१६०६ ई०)
मानचित्र में अकबर के सूबों के नाम लिखे हैं ।

उसके अपने सरदार भी कभी विद्रोह करते, तो राजपूतों की सहायता से उनको कुचला जा सकता था ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर भारत में विजय—तुम ऊपर पढ़ चुके हो कि **ग्वालियर** और **जौनपुर** में अकबर का अधिकार हो चुका था। उसके सेनापतियों ने मालवा भी ले लिया। इसके बाद **बुन्देलखंड** को विजय कर **गोंडवाना** की बारी आयी। वहाँ **रानी दुर्गावती** बड़ी वीरता से मुगल सेनापति का विरोध करती हुई वीरगति को प्राप्त हुई (१५६४ ई०)।

अधिकांश राजपूत राजा उसके मित्र बन चुके थे। मेवाड़ का महाराणा उदयसिंह, जो सांगा का वंशज था, अधीनता मानने को तैयार नहीं हुआ। अकबर ने **चित्तौड़** पर चढ़ाई की और उसे जीत लिया (१५६८ ई०)।

चित्तौड़ की विजय के बाद राजपूतों के अन्य प्रसिद्ध किले **रणथम्भौर** और **कालिंजर** ले लिये गये। चित्तौड़ पतन के पहले ही महाराणा उदयसिंह वहाँ से चला गया था। उसने अपनी नयी राजधानी उदयपुर में बनवायी।

उदयसिंह के मरने पर उसके प्रसिद्ध सुपुत्र **महाराणा प्रताप** ने युद्ध जारी रखा। अकबर ने अपने राजपूत सेनापति मानसिंह को विशाल सेना के साथ लड़ने भेजा। हल्दीघाटी में घमासान युद्ध हुआ (१५७६ ई०)। महाराणा प्रताप का दमन न हो सका और वह आगामी बीस वर्षों तक अपने जीते जी मुगलों से संघर्ष करता रहा। १५९७ ई० में महाराणा प्रताप की मृत्यु हुई।

महाराणा प्रताप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५७६ ई० **के बाद सीमान्त प्रदेश, काश्मीर, सिन्ध कन्दहार** आदि अकबर के अधिकार में आ गये, **बिहार-बंगाल के** सूबेदार मानसिंह ने अकबर के लिए उड़ीसा जीत लिया। अब दक्षिण की बारी आयी।

दक्षिण भारत में विजय—अकबर ने दक्षिण के मुस्लिम राज्यों में अपने दूत भेजकर उनसे अधिकार स्वीकार करने को कहा। **खानदेश** के अतिरिक्त अन्य कोई राजी नहीं हुआ। अतः पहले अहमदनगर पर चढ़ाई की गयी। वहाँ **चाँदबीबी** ने बड़ी वीरता से नगर की रक्षा की। मुगल नगर न ले सके। रसद के चुक जाने से विवश होकर चाँदबीबी को सन्धि करनी पड़ी। वराड़ अकबर को मिला, परन्तु उसके सम्बन्ध में झगड़ा उठ खड़ा हुआ। मुगलों ने दोबारा अहमदनगर को जा घेरा। चाँदबीबी स्वयं तलवार हाथ में लेकर किले की रक्षा करने लगी परन्तु दगाबाजों ने उसकी हत्या कर दी। **अहमदनगर** तो मुगलों के अधिकार में आ गया (१६०० ई०), परन्तु बीरांगना चाँदबीबी का नाम भी इतिहास में अमर हो गया।

सुलताना चांदबीबी

अहमदनगर के बाद **खानदेश** पर भी अधिकार कर लिया गया (१६०१ ई०)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६०५ ई० में अकबर की मृत्यु हो गयी। उसने अपने जीवन-काल में एक विशाल साम्राज्य खड़ा कर दिया। उसको समझने के लिए मुगल साम्राज्य का मानचित्र पृष्ठ ७१ पर ध्यानपूर्वक देखो और उसकी तुलना पृष्ठ ६६ पर दिये मानचित्र से करो।

अभ्यास के लिए प्रश्न–

१—"जिस प्रकार प्राचीन भारत के इतिहास में अशोक सूर्य की तरह चमकता है, उसी प्रकार मध्यकालीन भारत के इतिहास में अकबर प्रकाशमान है" इसको सिद्ध करो।

२—जब अकबर गद्दी पर बैठा, तब उसके सामने क्या कठिनाइयाँ थीं ?

३—अकबर ने (क) उत्तर भारत एवं (ख) दक्षिण भारत में किन भागों पर विजय प्राप्त की ?

४—भारत का एक मानचित्र अवस करो और उसमें अकबर के साम्राज्य की सीमाएँ बताओ।

५—नीचे कुछ घटनाएँ और उनके सामने अनेक तिथियाँ लिखी हैं। अशुद्ध तिथियों को काट दो :—

(क) पानीपत का बाबर-इब्राहीम लोदी युद्ध—१५२६।१५५६।१८५७।

(ख) पानीपत का अकबर-हेमू युद्ध—१५२६।१५५६।१८५७।

(ग) शेरशाह का राज्यकाल—(१५२६-३०)। (१५४०-४५)। (१५५६-१६०५)।

(घ) अकबर का राज्य-काल—(१५२६-३०)। (१५४० ४५)। (१५५६-१६०५)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—शासन सुधार और धर्मनीति

'युद्धों में विजय सच्ची विजय नहीं, वरन् प्रजा के हृदय को जीतकर जो विजय होती है वही असली विजय है।' यह सम्राट अशोक ने कहा था। मुस्लिम शासकों में विजयें तो दिल्ली सुल्तान अलाउद्दीन और मुहम्मद तुगलक ने भी की थीं और शायद अकबर से अधिक, परन्तु उन्होंने प्रजा का हृदय जीतने की कोशिश नहीं की। इसके विपरीत अकबर ने केवल भारत के भूमि-खण्ड ही नहीं जीते, उसने भारत के निवासियों के दिलों पर भी विजय पाने का प्रयास किया। उसके शासन सुधार और धर्मनीति इस बात के साक्षी हैं।

(१) **शासन-सुधार**–अकबर के पहले शेरशाह सूरी ने शासन में बहुत से उपयोगी सुधार किये थे। अकबर ने बिना किसी संकोच के उन सबको अपनाया।

मालगुजारी निश्चित करने के लिए शेरशाह के मन्त्री टोडर-मल को अकबर ने भी अपना मन्त्री चुना। धरती को नापा गया और उपजाऊपन के अनुसार उसे उर्वर, बंजर आदि वर्गों में बाँटा गया। फिर औसत उपज का अनुमान लगाकर एक तिहाई सरकारी मालगुजारी तय की गयी। यह प्रबन्ध पहले वार्षिक था, पीछे दस साला कर दिया गया। किसानों से अनुचित नजराने बन्द कर दिये गये और दीन किसानों को सरकार की ओर से कर्ज दिये गये।

सेना सुधारों में भी शेरशाह का अनुसरण किया गया। सर-कारी काम आने वाले घोड़ों को दागा गया जिससे मनसबदार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धोखा न दे सकें। सरकारी कर्मचारियों को जागीरों की जगह नकद वेतन दिया गया और जागीरों को सरकारी सम्पत्ति माना गया।

उस काल में सरकार के सब कर्मचारी सैनिक समझे जाते थे। वे मनसबदार कहलाते थे। मनसब शब्द का अर्थ हैसियत है। उनका वेतन इस बात पर निर्भर करता था कि वे कितने सवारों के अध्यक्ष होने की हैसियत रखते हैं। मनसब दस से दस हजारी तक थे।

राजनीतिक भाग–अकबर का साम्राज्य १५ सूबों में बँटा था–१२ उत्तर भारत में थे और ३ दक्षिण में। पृष्ठ ७१ पर दिये हुए मानचित्र में इन सूबों के नामों को दिखलाया गया है। उनके नाम पढ़ो और एक मानचित्र अक्स करके उसमें इन नामों को लिखो।

सूबों को सरकारों में और सरकारों को परगनों या मोहालों में बाँटा गया था।

कर्मचारियों को नियुक्त करते समय अकबर हिन्दू-मुसलमान का पक्षपात नहीं करता था। राजा मानसिंह, राजा बीरबल, राजा टोडरमल आदि हिन्दू ऊँचे से ऊँचे पदों तक नियुक्त किये गये थे।

(२) **धर्मनीति**–अकबर मुसलमान था, परन्तु उसमें पक्षपात नहीं था। शासन में शरीअत का दखल न था। उसने जजिया उठा दिया और हिन्दू यात्रियों पर लगने वाला कर बन्द कर दिया (१५६४ ई०)। गोहत्या की मुमानियत कर दी तथा १५६३ ई० में इस प्रकार की आज्ञाएँ निकालीं जैसे:–

(क) बलपूर्वक बनाया गया मुसलमान फिर हिन्दू होना चाहे तो कोई न रोके;

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ख) किसी को धर्म बदलने के लिए विवश न किया जाय;

(ग) धर्म मन्दिर बनाने की स्वतन्त्रता रहे;

(घ) जो हिन्दू विधवा सती न होना चाहे, उससे जबर-दस्ती न की जाय, आदि।

व्यक्तिगत धर्म के विषय में अकबर ने अपने आचरण के लिए सब धर्मों से कुछ-कुछ बातें चुन लीं (१५८२ ई०)। अपने इस धर्म का नाम उसने 'तौहीद-इलाही' रखा, परन्तु इसे मानने के लिए कभी किसी को विवश नहीं किया। फतहपुर सीकरी में उसने धर्म-चर्चा के लिए इबादतखाना बनवाया जहाँ

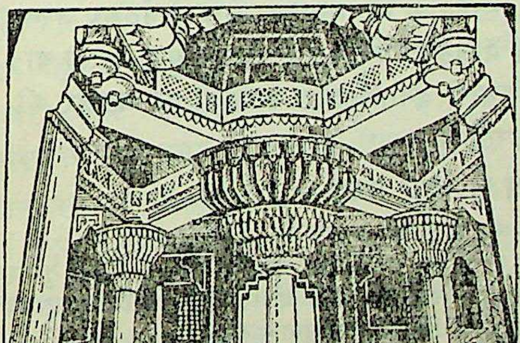

फतहपुर सीकरी में दीवान खास के भीतर स्तम्भ और उनके ऊपर बैठने के स्थान

हिन्दू, जैन, पारसी, ईसाई, मुस्लिम आदि शास्त्रार्थ करते थे और अकबर सुनता था। अकबर की धर्मनीति का कुछ मुल्लाओं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और कट्टर मुसलमानों ने विरोध भी किया, परन्तु अकबर ने उनका दमन कर दिया।

अकबर के हरएक काम में उसके व्यक्तिगत विचार और आदर्श की झलक मिलती है। फतहपुरसीकरी में उसने दीवान खास बनवाया जिसका चित्र पृष्ठ ७७ पर अंकित है। दीवान खास के बीच में एक स्तम्भ है, उसके ऊपर केन्द्र में अकबर के बैठने का स्थान तथा चार दिशाओं में चार गैलरियां हैं जिनमें बैठने के स्थान हैं।

स्तम्भ के निचले भाग में नीचे से ऊपर को विभिन्न धर्मों—हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम, ईसाई, आदि के कला-चिह्न खुदवाये गये हैं। स्तम्भ के शिरोभाग पर केन्द्र में बैठकर अकबर चारों दिशाओं में बैठे हुए विद्वानों के विवाद सुना करता था। दीवान खास की सारी बनावट चारों दिशाओं पर अकबर की प्रभुता प्रकट करती है।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—'युद्ध में विजय सच्ची विजय नहीं, वरन प्रजा के हृदय को जीत कर जो विजय होती है वह असली विजय है,' क्या तुम इस कथन से सहमत हो ? इस विचार से अलाउद्दीन खिलजी, मुहम्मद तुगलक और अकबर की विजयों की तुलना करो।

२—अकबर ने मालगुजारी में क्या सुधार किये ?

३—अकबर ने सेना में कौन-कौन से सुधार किये ? उनका क्या परिणाम हुआ ?

४—'मनसबदार' किसे कहते हैं ? अकबर के उच्च कर्मचारी मनसबदार क्यों कहलाते थे ?

५—अकबर की राजपूत नीति क्या थी ?

६—अकबर की धर्मनीति का वर्णन करो।

७—'तौहीद-इलाही' क्या था ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—संस्कृति और इमारतें

अकबर के समय संस्कृति अपने सारे अंगों—साहित्य, संगीत, कला आदि से खूब फूली फली। राज्य में शान्ति के कारण राज-दरबार और उसके बाहर अनेक ऐसे महापुरुष हुए जो राष्ट्र के गौरव हैं। प्रसिद्ध सन्त कवि जैसे तुलसीदास, सूरदास, सिक्ख, गुरु अर्जुनदेव, दादू, रैदास आदि अकबर के समय में ही हुए हैं। उनके वचन देश की अमूल्य सम्पत्ति हैं।

स्वयं अकबर ने संस्कृति को धनी बनाने के लिए जो कार्य किये, वे भी कम महत्व के नहीं हैं। उसने वेद, रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों के अनुवाद फारसी में कराये। उस समय बहुत से इतिहास फारसी में लिखे गये, इनमें आइन-ए-अकबरी और अकबरनामा सर्वोत्तम हैं। इनका लेखक **अबुलफजल** उस समय का प्रसिद्ध लेखक, कवि, निबन्धकार, समालोचक एवं इतिहासकार था।

संगीत और चित्रकला को अकबर ने खूब बढ़ाया। विश्व-विख्यात **तानसेन** उसका दरबारी गायक था। चित्रकारों में फारस निवासी अबदुस्समद और उसके भारतीय सहयोगी **बसवंत, बसावन** आदि प्रसिद्ध हैं।

इमारतों में यमुना के किनारे आगरा और इलाहाबाद के अकबर के बनवाये हुए किले एवं फतेहपुर सीकरी के महल कभी नहीं भुलाये जा सकते। आगरे के किले में जहाँगीर का महल, मथुरा का सतीबुर्ज और राजपूताने के अनेक मन्दिर भी हिन्दुआनी ढंग पर बनवाये गये थे। फतेहपुर सीकरी की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

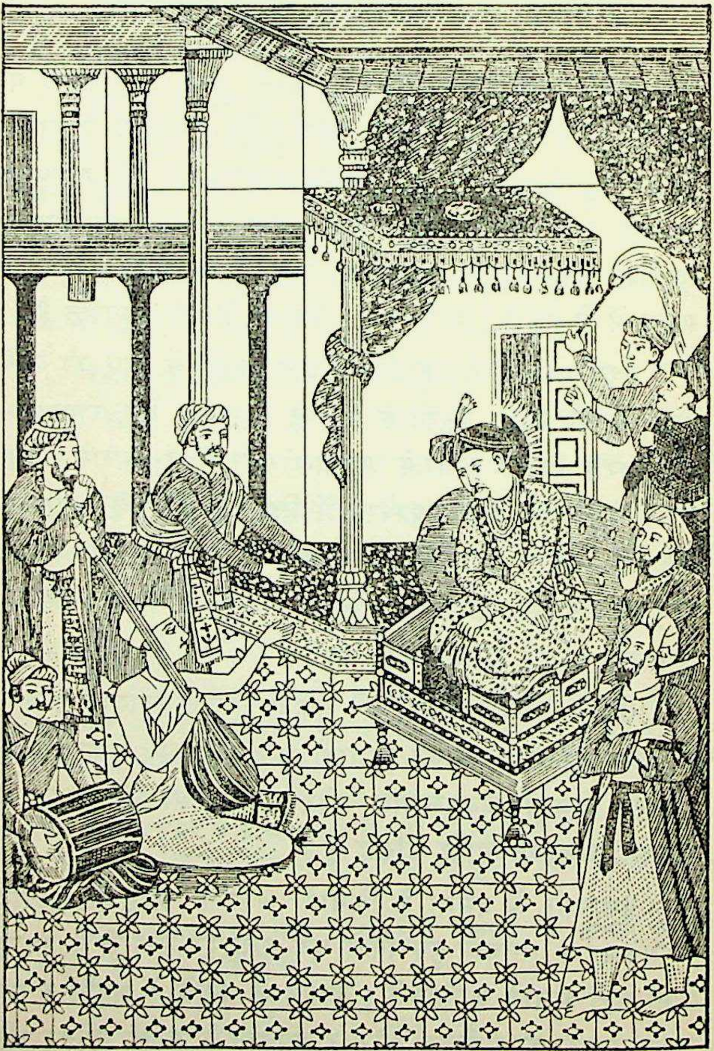

तानसेन अकबर के सम्मुख गा रहा है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इमारतें तो वास्तव में हिन्दू शैली के अद्भुत नमूने हैं । हैवेल

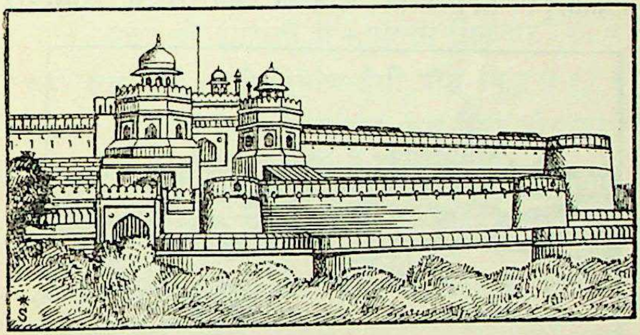

आगरे का किला

ने लिखा है कि ऐसे ऊँचे दर्जे की इमारतें तो शाहजहाँ के समय में भी (ताज के अलावा) नहीं वनीं । इन महलों का हिन्दू, मुसलमान दोनों ने बनाया था । इनकी कला में हिन्दू आदर्श भी साफ-साफ झलकते हैं । दीवारों और

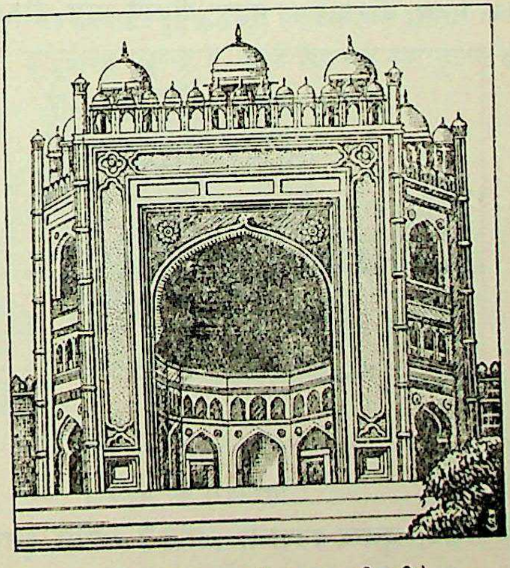

बुलन्द दरवाजा (फतहपुर सीकरी)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खम्भों पर नक्काशी और सजावट देखते ही बनती है।

फतहपुर सीकरी की शानदार इमारतों में जोधाबाई

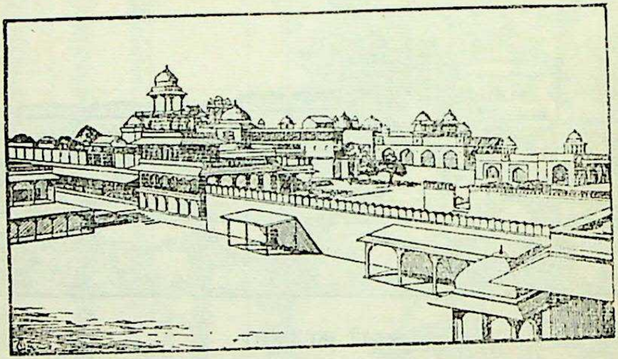

फतहपुर सीकरी की इमारतों का अन्दर से लिया गया चित्र

का महल, बीरबल का महल, दीवाने आम, दीवाने खास, जामा

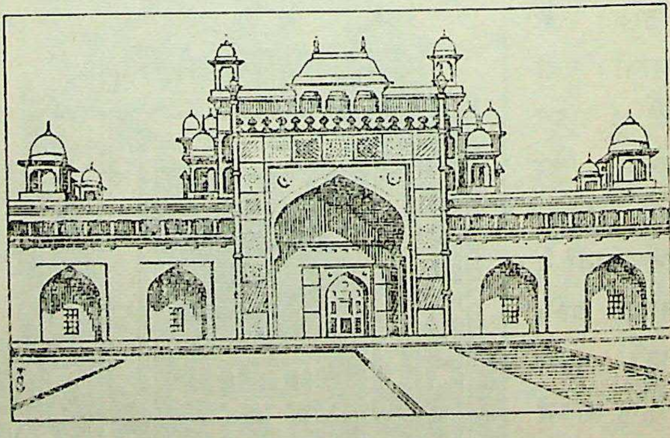

सिकन्दरा का मकबरा

मसजिद, बुलन्द दरवाजा आदि हैं। पीछे बुलन्द दरवाजे का चित्र है। इसे अकबर ने गुजरात-विजय के स्मारक के रूप में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बनवाया था। इसकी ऊँचाई सड़क से ३८·४ मीटर है। भारतवर्ष में इसके समान ऊँचा कोई अन्य दरवाजा नहीं है।

अकबर की इमारतों में सर्वोत्तम सिकन्दर का मकबरा कहा जाता है। इसकी निर्माण-शैली बौद्ध विहारों की सी है। अकबर के समय में इनका बनना शुरू हुआ और जहाँगीर के समय में बनकर पूरा हुआ था।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—अकबर के समय के साहित्य और संगीत की उन्नति का वर्णन करो।

२—अकबर की बनवायी कुछ इमारतों के नाम बताओ। यदि तुमने अकबर की कोई इमारत देखी है तो उसका वर्णन करो।

३—अकबर की बनवायी हुई इमारतों में किस-किस इमारत के चित्र तुमने देखे हैं? वे इमारतें कहाँ हैं? उनके विषय में क्या जानते हो?

४--अकबर की वास्तुकला में क्या विशेषता है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुगल साम्राज्य की शान

पाठ १—जहाँगीर

अकबर ने मुगल साम्राज्य को ऐसा सुदृढ़ बना दिया कि उसकी नीति का पालन करते हुए उसका बेटा जहाँगीर और उसके बाद पोता शाहजहाँ आराम से राज्य करते रहे। जहाँगीर और शाहजहाँ अकबर के समान सुयोग्य नहीं थे, तथापि अकबर के प्रताप से उनके समय में मुगल साम्राज्य की शानो-शौकत दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गयी।

जहाँगीर

जहाँगीर (१६०५-१६२७ ई०) ने अपने पिता अकबर के खिलाफ विद्रोह किया और बुढ़ापे में उसे कष्ट पहुँचाया, परन्तु क्षमा माँगने पर उदार अकबर ने उसे माफ किया और मरते समय अपनी राजसी पगड़ी एवं अपनी पिता हुमायूं की तलवार उसके सुपुर्द कर दी।

न्याय-प्रियता—जहाँगीर ने बादशाह बनते ही बड़ी न्याय-प्रियता दिखलायी। अनेक लोकहित के कानूनों को प्रचलित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया तथा अपने शाहबुर्ज से यमुना के किनारे पर एक पत्थर के खम्भे तक एक जंजीर लटकवा दी। बादशाह तक अपनी फरियाद पहुँचाने के लिए जो चाहे उस जंजीर को खींच सकता था।

राजनीतिक उलट-फेर—जहाँगीर को किन्हीं विशेष राजनीतिक आपत्तियों का सामना करना नहीं पड़ा। उसके पुत्र खुसरो ने तथा बंगाल के एक अफगान सरदार ने विद्रोह किये जो शीघ्र दबा दिये गये। उसने महाराणा प्रताप के पुत्र को अपने वश में किया तथा पंजाब में काँगड़ा को जीता। कन्दहार उसके हाथ से निकल कर ईरानियों के कब्जे में चला गया।

नूरजहाँ का महत्व—जहाँगीर के राज्य की सबसे महत्वपूर्ण घटना नूरजहाँ की प्राप्ति थी। नूरजहाँ ने जहाँगीर की कमियों को पूरा कर दिया। वह अति सुयोग्य साम्राज्ञी साबित हुई। विलासप्रिय जहाँगीर ने सारा राजकाज बुद्धिमती और कर्मशीला नूरजहाँ पर छोड़ दिया था। वह प्रायः कहा करता था कि मुझे तो दो प्याले शराब चाहिए, राज्य का काम नूरजहाँ देखेगी, अतः साम्राज्य के सिक्कों तक में जहाँगीर के साथ नूरजहाँ का नाम अंकित कराया गया था। नूरजहाँ बड़ी बलवती और साहसी स्त्री थी। जहाँगीर के साथ शिकार को जाती, शेरों को स्वयं मारती एवं युद्ध में हाथी पर बैठ तीरों की बौछार करती थी। वह राजकाज को बड़ी सावधानी से करती थी। दर्शन देने के लिए झरोखे में बैठकर लोगों की अर्जियों पर स्वयं निर्णय करती थी। साम्राज्य में उसका प्रभाव यहाँ तक बढ़ गया था कि यूरोपीय यात्री जहाँगीर की अपेक्षा उसे सन्तुष्ट रखना ज्यादा जरूरी समझते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यूरोपीय यात्री–भारत-योरप का व्यापार अकबर के समय पुर्तगालियों के हाथ में था। १६०० ई० में अंग्रेजों ने भी ईस्ट इन्डिया कम्पनी बनाकर भारत से व्यापार करना आरम्भ किया। अंग्रेजों को व्यापार की सुविधाएं देने के लिए इंग्लैंड के राजा ने दो बार अपने दूत जहाँगीर के पास भेजे। इन दूतों के मार्ग में पुर्तगालियों ने बहुत रोड़े अटकाये, परन्तु वे जहाँगीर तक पहुँच ही गये। अंग्रेजों को व्यापार की अनेक सुविधाएं मिलीं। इनमें से दूसरे दूत सर टामस रो के प्रयत्न से व्यापार की सुविधाओं के साथ-साथ अंग्रेजों को अपनी बस्ती के स्वतन्त्र शासन का अधिकार भी मिल गया। इसके बाद एक डच व्यापारी सूरत आया। तब डचों को भी कोठियां खोलने की आज्ञा मिल गयी।

सर टामस रो–मुगल दरबार में ३ वर्षों तक ठहरा। उसने उसकी शानों-शौकत का विस्तार के साथ वर्णन किया है। उसने अपनी डायरी के लेखों में सम्राट की विलासिता और नूरजहाँ के असीम प्रभाव की बात मानी है। उसने जहाँगीर को चित्रकला का प्रेमी और पारखी बताया है। सम्राट की शराबनोशी के विषय में सर टामस रो ने इतना जरूर लिखा है कि वह दिन में कभी शराब नहीं पीता था और न किसी को शराब पीकर राजसभा में आने देता था।

सर टामस रो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर टामस रो ने जहाँगीर के राज्य में प्रजा को दुखी देखा। उसने लिखा है कि प्रजा धनाभाव और अत्याचार के कारण दुखी थी और सरकारी कर्मचारी बड़ी-बड़ी घूस लेते थे। साम्राज्य में डाकुओं का जोर हो गया था। इन कारणों से लोग अकबर को याद करते थे।

अन्तिम दिनों में अशान्ति—नूरजहाँ ने अपने पति की सेवा और सहायता सच्चे दिल से की इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, परन्तु उसकी कूटनीति से राजवंश और दरबारियों में बड़ा असन्तोष फैला।

नूरजहाँ ने अपने भाई को वजीर बनाया। अपने पिता को ऊँचा पद दिया। अपने रिश्तेदारों को मालामाल किया। इस प्रकार के पक्षपात के कारण जहाँगीर के शासन के अन्तिम दिनों में बड़ी अशान्ति मची।

नरजहाँ ने अपने पहला पति से उत्पन्न पुत्री का विवाह जहाँगीर के सबसे छोटे पुत्र से कर दिया था। वह चाहती थी कि जहाँगीर के बाद मेरा दामाद गद्दी पर बैठे। इससे जहाँगीर के दूसरे बेटे खुर्रम का, जो पीछे शाहजहाँ बना, नाराज होना स्वाभाविक था। उसने विद्रोह कर दिया। खैर, जहाँगीर के सेनापति महावत खाँ ने उसे हरा दिया।

उन दिनों महावत खाँ राज्य में सबसे अधिक प्रभावशाली था। खुर्रम को पराजित करने के बाद उसका प्रभाव बहुत बढ़ गया। नूरजहाँ उससे जलने लगी। उसने जहाँगीर को महावत खाँ के विरुद्ध भरना शुरू किया। उसने कहा कि खुर्रम को हराकर महावत खाँ को बड़ा अभिमान हो गया है। इसी कारण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसन बंगाल-बिहार से प्राप्त धन का न तो कोई हिसाब भेजा है और न शाहशाह को कोई भेंट।

जहाँगीर ने महावत खाँ को बंगाल से बुला भेजा। महावत खाँ समझ गया कि अब कुशल नहीं है। वह ५ हजार राजपूतों की सेना के साथ आया और काबुल को जाते हुए सम्राट को झेलम नदी के किनारे कैद कर लिया। नूरजहाँ ने महावत खाँ का मुकाबला किया, पर वह हार गई और कैद हुई।

महावत खाँ ने सम्राट और मलका को हर प्रकार का सुख दिया और उन्हीं की आज्ञा से साम्राज्य का काम चलाया। कुछ समय बाद नूरजहाँ ने वह चाल चली कि सारी सेना उसके पक्ष में हो गयी। महावत खाँ अपनी जान बचाकर भागा और दक्षिण में खुर्रम से जा मिला।

इस घटना के कुछ काल बाद जहाँगीर दमे के रोग में मर गया (१७२७ ई०) और लाहौर के पास शाहदरा में एक विशाल मकबरे में गाड़ा गया।

जहाँगीर की मृत्यु के बाद जब शाहजहाँ गद्दी पर बैठा तब नूरजहाँ का प्रभाव नाममात्र, को भी न रहा, अतः वह लाहौर में रहने लगी और वहीं नौ वर्षों बाद मर गयी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—जहाँगीर की न्याय-प्रियता का क्या प्रमाण है ?

२—जहाँगीर के समय में मुगल साम्राज्य में क्या वृद्धि या क्षति हुई ?

३—भारत के इतिहास में नूरजहाँ का क्या महत्व है ?

४—सर टामस रो कौन था ? उसने जहाँगीर एवं उसके राज्य के विषय में क्या लिखा है ?

५—नूरजहाँ की कूटनीति क्या थी ? उसके कारण राजवंश और दरबारियों में क्यों असन्तोष फैला ?

६—नूरजहाँ से असन्तोष का क्या परिणाम हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—शाहजहाँ

संसार के इतिहास में भारत के मुगल सम्राट शाहजहाँ का नाम ताजबीबी के रौजे (ताजमहल) के कारण अमर है।

राजगद्दी की प्राप्ति–खुसरो के प्राणान्त के बाद शाहजहाँ (खुर्रम) ही अपने पिता का दूसरा बेटा था। अतः पिता के मरने पर राजगद्दी का अधिकारी था, परन्तु नूरजहाँ उसके छोटे भाई शहरयार को बादशाह बनाना चाहती थी। इस संघर्ष में जहाँगीर के मरने के तुरन्त बाद शाहजहाँ को राजगद्दी न मिल सकी। वह १६२८ ई० में अपने भाई भतीजों को मरवा कर बादशाह बना।

राज्य-विस्तार–अपने राज्यकाल में शाहजहाँ ने दक्षिण भारत और मध्य एशिया की विजय की योजनाएं बनायीं। वह अहमदनगर को जीतने तथा बीजापुर और गोलकुंडा से अपनी अधीनता मनवाने में सफल हुआ। मध्य एशिया में उसे आशा-नुसार सफलता नहीं मिली। कन्दहार को लेने के लिए भी तीन बार चढ़ाई की गयी, लेकिन मुगल उसे ईरानियों से न ले सके।

यूरोपीय बस्तियां—शाहजहाँ के राज्यकाल में अंग्रेजों ने पूर्वी तट पर मसुलीपत्तन, मद्रास आदि कई तटीय नगरों में अपनी कोठियां बना लीं। उन्हें बंगाल में बिना चुंगी दिये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

व्यापार की आज्ञा भी मिल गयी (१६३४ ई०)। अंग्रेज अभी तक शान्त व्यापारी थे, परन्तु पुर्तगाली पाजीपन करने लगे थे। वे भारतीयों को गुलाम बनाकर उनको बेचते तथा उनके पादरी गोआ, हुगली आदि स्थानों के निवासियों को जबरदस्ती ईसाइ बनाते। उन लोगों ने हुगली में तोपों से किलाबन्दी भी कर ली। शाहजहाँ की आज्ञा से पुर्तगालियों का पूर्णतया दमन किया गया।

शासन की प्रशंसा—शाहजहाँ के समय में अंग्रेज, फ्राँसीसी, इटालियन आदि अनेक विदेशी यात्री भारत में आये। उसके शासन के विषय में उनके विचार पढ़ने योग्य हैं। फ्राँसीसी यात्री **ट्रैवर्नियर** ने लिखा है कि शाहजहाँ का शासन अपने पूर्वजों के समान था। देश में समृद्धि थी तथा शान्ति-रक्षा का कड़ा प्रबन्ध था। हिन्दू और मुसलमान इतिहासकारों ने भी ऐसा ही लिखा है।

मुमताज महल

शासन की दशा अन्तिम दिनों में बिगड़ गयी थी। शाहजहाँ ने इमारतों और युद्धों में इतना व्यय कर दिया कि साम्राज्य की माली-हालत खराब हो गयी एवं **अपराध** बढ़ गये। फ्राँसीसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यात्री **ट्रैवर्नियर** ने मनसबदारों के अत्याचारों तथा किसान और कारीगरों के बढ़ते हुए कष्टों का वर्णन किया है।

इमारतें—शाहजहाँ की शानो-शौकत का सजीव प्रमाण उसकी इमारतें हैं। कहा जाता है कि **ताजमहल**, जिसको उसने अपनी बीवी मुमताज महल की यादगार में बनवाया था, संसार में सर्वोत्तम मकबरा है। ट्रैवर्नियर लिखता है कि ताजमहल **२२ वर्षों में** ३ करोड़ रुपयों की लागत से बनकर तैयार हुआ था। पूरा मकबरा संगमरमर का बना है और मोती की तरह चमकता है। उसकी पत्थर की नक्काशी, बेलबूटे, विशालता

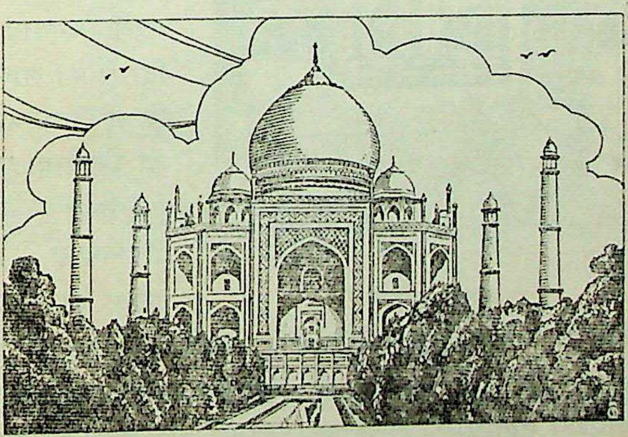

संसार में संगमरमर का सर्वोत्तम मकबरा—ताजमहल (आगरा)

और फिर भी सादगी इतनी शोभा देती है कि शब्दों में वर्णन करना असम्भव है। अकबर के आगरे के किले में **मोतीमसजिद** भी शाहजहाँ की रचना है। शाहजहाँ की दूसरी इमारतों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिल्ली की **जामा मसजिद** बहुत ही ऊँचे चबूतरे पर अति विशाल रूप में बनायी गयी है। यह लाल पत्थरों से ६ वर्षों में बनकर तैयार हुई थी। दिल्ली को शाहजहाँ ने अपनी राजधानी बना कर उसका नाम शाहजहाँनाबाद रखा। १० वर्षों तक उसने अनेकानेक महल बनवाये। दिल्ली का **लालकिला** शाहजहाँ का बनावाया हुआ है। उसमें बने हुए दीवानखास की तुलना तो उसने पृथ्वी पर स्वर्ग से की है। उसकी दीवार पर फारसी में यह शेर भी अंकित है—'अगर फिरदौस बररुए जमीनस्त, हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त' अर्थात यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

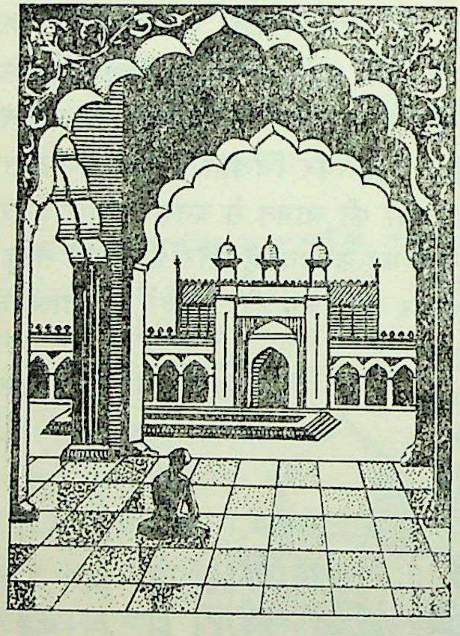

मोती मसजिद

शाहजहाँ ने सचमुच स्वर्ग को पृथ्वी पर उतार लिया था, जिसका गवाह उसका तख्तेताऊस (मयूरासन) था। यह तख्त २·२८ मीटर लम्बा, २·२८ मीटर चौड़ा और ४·५७ मीटर ऊँचा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

था। यह ठोस सोने का बना था और वजन में ११·६ कुन्तल था। इसमें बाहर-भीतर मीनाकारी की गयी थी और विविध रंगों के रत्न तथा मणियां जड़ी गयी थीं। चन्दोवा बारह खम्भों पर खड़ा था। हरएक में ऊपर से नीचे तक पन्ने जड़े थे। हर खम्भे पर दो रत्नों से जड़े हुए मोर बने थे, तथा दो मोरों के बीच में हीरा, लाल, पन्ना और मोतियों से जड़ा

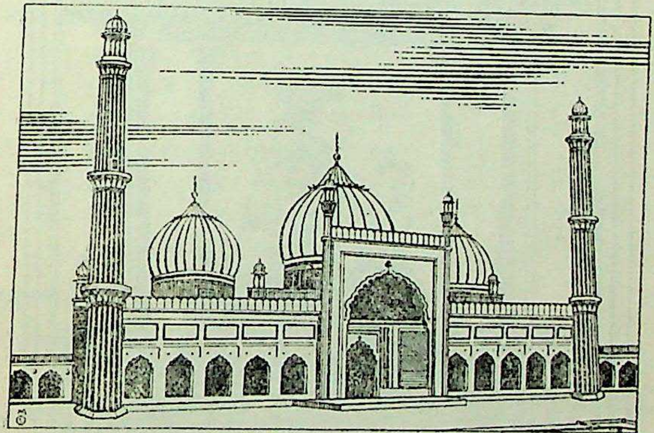

दिल्ली की जामा मसजिद

एक वृक्ष लगा था। तख्तेताऊस क्या था मानों मुगल दरबार में भारत की रत्नराशि आ बैठी थी। इसे दुर्बल मुगल सम्राट मुहम्मदशाह के समय नादिरशाह फारस ले गया। यहाँ तख्तेताऊस का क्या हुआ यह पूरी तरह नहीं मालूम।

शाहजहाँ का पृथ्वी पर स्वर्ग के समान दीवानखास, उसमें रखा हुआ तख्तेताऊस, उस पर बैठा हुआ सम्राट, सजधज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के साथ उपस्थित दरबारी—ये सब बातें भारत तो क्या, संसार

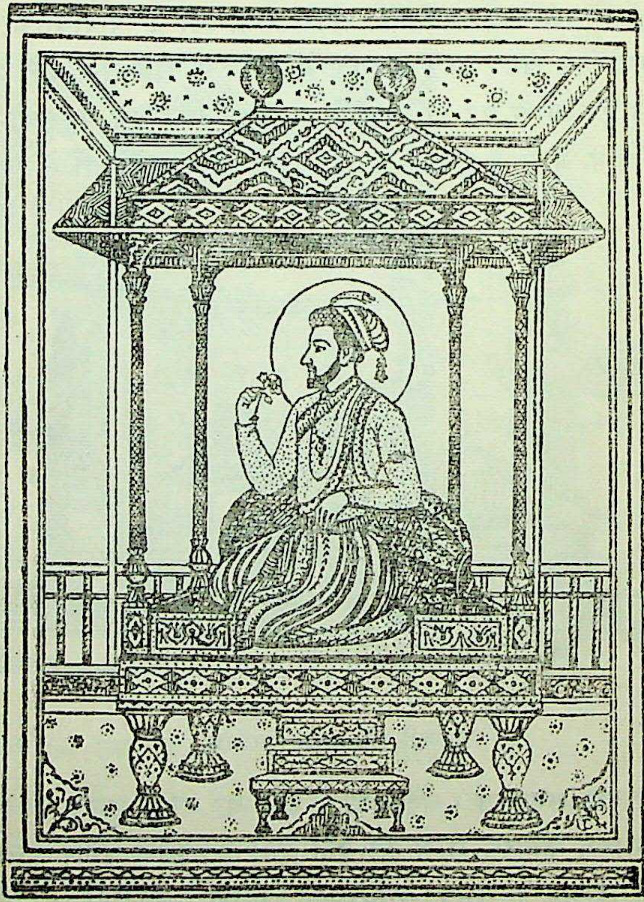

शाहजहाँ

के इतिहास में शानो-शौकत के विचार से अनुपम हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—शाहजहाँ ने राजगद्दी कैसे प्राप्त की ?

२--शाहजहाँ के समय मुगल राज्य की वृद्धि या क्षति का वर्णन करो।

३—यूरोपियों के साथ शाहजहाँ के सम्बन्धों के विषय में क्या जानते हो ?

४--शाहजहाँ के शासन के विषय में किसी यूरोपीय यात्री का लिखा वर्णन सुनाओ।

५—यहाँ मुगल बादशाहों की कुछ इमारतों और उनके निर्माताओं के नाम दिये हैं। जो गलत हों उन्हें काट दो--

(क) आगरे का किला— अकबर। जहाँगीर। शाहजहाँ।
(ग) इलाहाबाद का किला— अकबर। जहाँगीर। शाहजहाँ।
(ख) दिल्ली का किला— अकबर। जहाँगीर। शाहजहाँ।
(घ) दिल्ली की जामा मसजिद— अकबर। जहाँगीर। शाहजहाँ।
(ङ) सीकरी का बुलन्द दरवाजा—अकबर। जहाँगीर। शाहजहाँ।
(च) सीकरी का इबादतखाना— अकबर। जहाँगीर। शाहजहाँ।

६—'शाहजहाँ ने सचमुच स्वर्ग को पृथ्वी पर उतार लिया था।' उदाहरण देकर इसे सिद्ध करो।

७—शाहजहाँ का संसार के इतिहास में क्या महत्व है ?

८—नीचे लिखे शब्दों की सहायता से खाली स्थानों की पूर्ति करो–

दीवानखास, शाहजहाँनाबाद, लाल किला, ताजमहल, जामा मसजिद, मोती मसजिद।

शाहजहाँ की शानो-शौकत के सजीव प्रमाण उसकी इमारतें हैं। उसने अपनी बीबी की यादगार में संसार में सर्वोत्तम मकबरा......... बनवाया। पूरी इमारत सफेद पत्थर की बनी है और मोती की तरह चमकती है। आगरे के किले में उसकी बनवायी..........अनुपम है। दिल्ली में लाल पत्थरों से उसने बहुत ऊँचे चबूतरे पर.................. बनवायी। उसने दिल्ली का नाम................ ....रखा और वहाँ किला बनवाया जिसकी इमारत..........की उसने स्वर्ग से तुलना की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ १—साम्राज्य का विस्तार

मुगल वंश में जैसे अकबर का नाम प्रसिद्ध है वैसे ही औरंगजेब का भी। औरंगजेब अकबर से कम कुशल योद्धा नहीं था। उसने बड़े धैर्य और वीरता से मुगल साम्राज्य का विस्तार करके अकबर के एक देश में 'एक राज्य' के स्वप्न को साकार कर दिखाया। विद्या के विषय में औरंगजेब अकबर से कहीं अधिक विद्वान था, पर इस्लाम का कट्टर अनुयायी था और चाहता था कि उसकी प्रजा भी वैसी ही बन जाय। क्या ही अच्छा होता यदि वह अपने धार्मिक विश्वासों को साम्राज्य की राजनीति से अलग रखता।

राज्य प्राप्ति–औरंगजेब को दिल्ली की गद्दी आसानी से नहीं मिली। शाहजहाँ का बड़ा बेटा दारा था और उसी को वह बादशाह बनाने वाला था, परन्तु उसका वश नहीं चला। वह बीमार पड़ा और उसके चारों पुत्रों में उत्तराधिकार के लिए युद्ध छिड़ा। चारों के सामने 'तख्त' या 'तख्ता' था अर्थात यदि राजगद्दी नहीं मिलती तो, फांसी पर लटकना पड़ता। अन्त में युद्धकला और दाँव-पेंच में प्रवीण औरंगजेब विजयी हुआ। दारा मारा गया और उसके पक्षपाती पिता को आगरे के किले में बन्दी बनना पड़ा (१६५८ ई०)। औरंगजेब मुगल साम्राज्य का स्वामी बनकर तख्तेताऊस पर बैठा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पूर्वी सीमान्त नीति—आसाम में उस समय मंगोल जाति के अहोम लोगों का जोर था। अहोम हिन्दू थे और बंगाल पर आक्रमण करते थे। उससे बंगाल को खतरा था अतः अहोमों का दमन करने के लिए चढ़ाइयां की गयीं। फिर समुद्र-तट के नगर चटगाँव को विजय करके पुर्तगीज-डकैतों को दबाया गया। बंगाल इस प्रकार सुरक्षित हुआ।

पश्चिमी सीमान्त नीति—पश्चिमोत्तर में पठानों ने काबुल, पेशावर और अटक में लूटमार मचा रखी थी। तीन वर्षों की चढ़ाइयों के बाद वहाँ शान्ति स्थापित हुई। आगे पठानों को काबू में रखने के लिए औरंगजेब ने जोधपुर के राजा जसवन्तसिंह को सीमान्त का थानेदार नियत किया। पठानों से उसके कई युद्ध हुए। अन्त में औरंजेब ने पठानों के एक दल को दूसरे दल से भिड़ाकर अर्थात भेद नीति से अपना काम निकाला।

राजस्थान नीति—अकबर के बनाये हुए साम्राज्य के राजपूत लोग दृढ़ खम्भे थे। औरंगजेब को यह बुरा लगा कि मुस्लिम मुगलों का राज्य हिन्दू राजपूतों के सहारे संचालित हो। राजपूतों की शक्ति तोड़ने के लिए उसने बड़ी कूटनीति से काम लिया। उस समय जयपुर और जोधपुर के राज्य बड़े प्रबल और उनके राजा मुगल दरबार के बड़े मुँह लगे थे। औरंगजेब ने जयपुर के राजा जयसिंह को तो दक्षिण में मराठों के सर्वस्व शिवाजी से भिड़ाया और जोधपुर के राजा जसवन्तसिंह को पश्चिमोत्तर में पठानों से उलझाया।

राजा जसवन्तसिंह का उधर पठानों के प्रदेश में ही देहान्त हुआ। उसके कोई सन्तान न थी, अतः औरंगजेब ने उसके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राज्य मारवाड़ को जब्त कर लिया । संयोगवश जसवन्त की विधवा पत्नी के पुत्र पैदा हुआ । औरंगजेब ने राजा के मन्त्री दुर्गादास राठौर से वह बालक माँगा । दुर्गादास रानी और बालक दोनों को साथ लेकर जोधपुर पहुँचा । औरंगजेब का राजपूतों से युद्ध ठन गया । मेवाड़ के महाराणा ने मारवाड़ का साथ दिया । इस युद्ध में विजय तो औरंगजेब की हुई, परन्तु अब भविष्य में वह राजपूतों की सेवाओं से वंचित हो गया ।

विन्ध्याचल और हिन्दूकोह व हिमालय के बीच की विशाल भूमि को मुगल साम्राज्य के अधीन करके औरंगजेब ने दक्षिण की ओर ध्यान दिया ।

दक्षिण नीति—औरंगजेब की दक्षिण नीति के दो अंग थे—

(१) वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था और दक्षिण के बीजापुर व गोलकुण्डा के सुल्तान शिया मुसलमान थे । औरंगजेब उनका अन्त करके मुगल साम्राज्य की वृद्धि करना चाहता था ।

(२) पूना के समीप पहाड़ी प्रदेश में मराठों की एक नयी शक्ति का उदय हो गया था जिसका नेता शिवाजी था । मराठा और मुगल सेनाओं की मुठभेड़ कई बार हुई थी, परन्तु मुगल सेनाएं मराठों का दमन न कर सकी थीं । शिवाजी के मरने (१६८० ई०) के बाद भी मराठे वश में नहीं आ सके थे । उनसे मुगल साम्राज्य को भारी खतरा था ।

इन दो काँटों को मुगल साम्राज्य के मार्ग से दूर करने के लिए औरंगजेब स्वयं दक्षिण को गया (१६८१ ई०)। दक्षिण में ही २६ वर्षों के बाद उसकी मृत्यु हुई (१७०७ ई०), और वहीं औरंगाबाद में दफनाया गया ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दक्षिण में पहले दस वर्षों में उसने बीजापुर एवं गोलकुण्डा विजय कर लिये और शिवाजी के पुत्र सम्भाजी का वध और

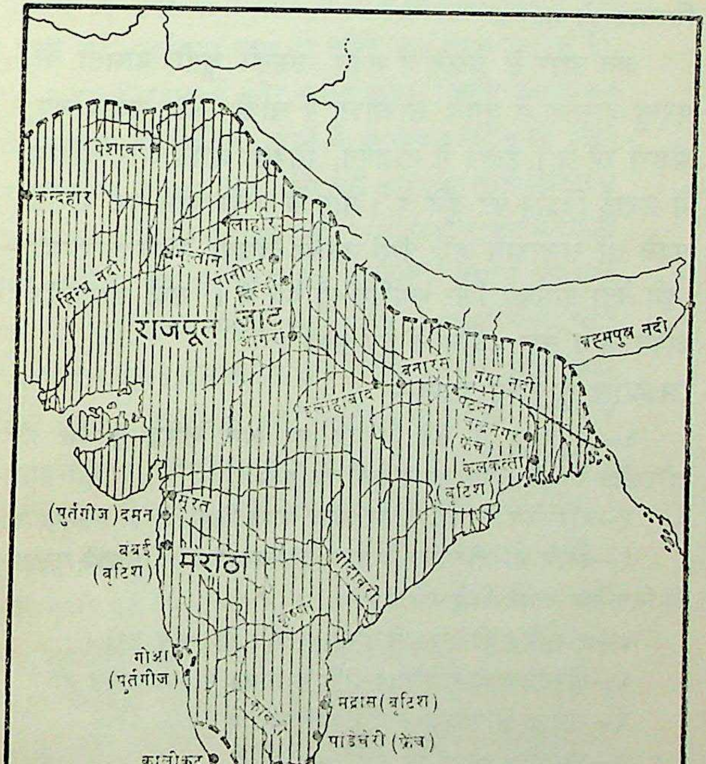

मुगल साम्राज्य (१६९० ई०)

उसके पुत्र साहू को कैद कराकर तंजाउर और तिरुचिरापल्ली के हिन्दू राज्यों से कर वसूल किया। मानचित्र में देखो कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६६० ई० में औरंगजेब की शक्ति अपनी चरम उन्नति को पहुँच गयी और काश्मीर से कावेरी तक मुगल साम्राज्य का विस्तार हो गया।

अब ऊपर से देखने में सर्वत्र उसकी तूती बोलती थी, परन्तु वास्तव में मुगल साम्राज्य में चारों ओर उसके शत्रु मँडरा रहे थे। उत्तर में राजपूत, सिक्ख आदि और दक्षिण में मराठे विद्रोह पर तुले थे। साहू के बन्दी होने पर मराठे पहले तो राजाराम और पीछे उसकी विधवा पत्नी ताराबाई को नेता बनाकर फिर संगठित हो गये थे। उन्हें औरंगजेब अपने अन्त तक अधीन न कर सका।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—'मुगलवंश में जैसे अकबर का नाम प्रसिद्ध है वैसे ही औरंगजेब का भी।' यह कथन कहाँ तक सत्य है ?

२—औरंगजेब ने किस प्रकार राज्य प्राप्त किया ?

३—बंगाल को औरंगजेब के समय क्या खतरा था ? उसकी सुरक्षा के लिए क्या उपाय किये गये ?

४—औरंगजेब की पश्चिमी सीमान्त नीति का वर्णन करो।

५—औरंगजेब की राजस्थान नीति के विषय में क्या जानते हो ?

६—राजपूत औरंगजेब के शत्रु क्यों बन गये ?

७—औरंगजेब की दक्षिण नीति क्या थी ?

८—औरंगजेब की दक्षिण नीति का क्या परिणाम हुआ ?

९—उसने दक्षिण में किन-किन राज्यों को जीता ?

१०—भारत का एक मानचित्र अक्स करो और उसमें औरंगजेब के मुगल साम्राज्य की सीमाएं दिखाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—औरंगजेब की नीति

तुम जानते हो कि औरंगजेब के यत्नों से सारा भारत उसके अधिकार में आ गया था। इतने विशाल साम्राज्य का शासन सुगम नहीं था। वर्तमान काल की भाँति उस समय न रेलें थीं, न तार, न हवाई जहाज थे और न टेलीफोन, जिसके फलस्वरूप देश के विविध भौगोलिक भागों में आजकल की तरह पारस्परिक सम्बन्ध न था। अतः ऐसे देश का एक केन्द्र दिल्ली में बैठकर शासन तभी सम्भव हो सकता था, जब राजा को प्रजा के सभी वर्गों का सहयोग प्राप्त हो, अकबर के सामने भी यही समस्या थी जिसे उसने अपनी उदार नीति से सुलझा लिया था।

अकबर ने अपने शासन का रूप पूर्णतः राष्ट्रीय बना लिया था जिसे हिन्दू, मुसलमान सब अपना कह सकें। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय तक शासन का यह रूप कायम रहा।

औरंगजेब ने अकबर की उदार नीति को उलट दिया। उसने एक पक्के सुन्नी मुसलमान के रूप में राज्य करना चाहा। अपने विचारों को अमल में लाने के लिए उसने संकोच नहीं किया। जब उसे अवसर मिला, वह गैर सुन्नियों जैसे हिन्दुओं एवं शिया व सूफी मुस्लिमों के विरुद्ध कदम उठाने में न चूका।

१६६९ ई० में औरंगजेब ने आज्ञा दी कि हिन्दुओं के मन्दिरों को गिरा दिया जाय एवं उनके धर्म, उनकी शिक्षाओं और उनके रीति-रिवाजों का दमन किया जाय। इसके दस वर्षों बाद (१६७९ ई०) जजिया कर गैर-मुस्लिमों पर फिर लगा दिया। यही नहीं, मुसलमानों के मुकाबले हिन्दुओं पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दोगुनी चुंगी लगायी गयी। हिन्दुओं को सरकारी नौकरी से वंचित करना आरम्भ किया एवं मुसलमान बनने के लिए उन्हें ऊँचे पद देने के लालच दिये, इत्यादि।

सूफी लोग भी मुसलमान ही होते हैं, परन्तु उनकी धार्मिक दृष्टि बड़ी उदार होती है। औरंगजेब सूफियों को बुरा समझता था। उसने उनके एक सन्त सरमद को फाँसी पर लटकवा दिया। इसी प्रकार दक्षिण के शिया राज्य भी उसके शिकार हुए।

अपनी धार्मिक कट्टरता के जोश में औरंगजेब ने राज-दरबार में संगीत, सिजदा आदि एवं झरोखे से दर्शन देना तक बन्द कर दिया।

इतिहास के विद्वान जब औरंगजेब की इस प्रकार की घातक नीति की तुलना उसके उच्च गुणों से करते हैं, तब उन्हें बड़ा दुख होता है। औरंगजेब वीर और साहसी योद्धा एवं कुशल सेनापति था। उसका जीवन सादगी और पवित्रता का एक नमूना था। वह परिश्रमी, विद्वान, दृढ़प्रतिज्ञ और न्यायप्रिय सम्राट था। यदि वह किसी सुन्नी मुस्लिम देश का सम्राट होता तो संसार के इतिहास में उसके समान आदर्श सम्राट न मिलता। इसी कारण मुसलमान तो उसे 'आलमगीर जिन्दापीर' कहते भी थे, परन्तु वह सम्राट बना एक ऐसे देश का जहाँ उसके मत को मानने वाले बहुत कम थे। देश इतना विशाल था कि उसका शान्तिपर्वक शासन प्रजा के सहयोग के बिना असम्भव था।

औरंगजेब की नीति के कारण साम्राज्य के अनेक शत्रु हो गये। वह उनको अपने बल से हरा देता था, पर उनका समूल अन्त नहीं कर पाता था। औरंगजेब के शत्रु उसकी असन्तुष्ट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रजा के वल पर फिर अपनी शक्ति का संचय कर लेते थे।

अपने चारों ओर विद्रोहों को देखकर वह अपने लोगों पर भी सन्देह करने लगा। दक्षिण में जाने के बाद तो उत्तर एवं मध्य भारत में अराजकता ही फैल गयी। युद्धों में अपार व्यय के कारण खजाना तक खाली हो गया। वेतन न मिलने से उसके साथ के सैनिक विद्रोह के लिए उद्यत हो गये। अपने अन्तिम दिनों में शायद उसे अपनी भूलों की याद आयी और निराशा में उसने अपने पुत्र को लिखा कि "मैं यहाँ अकेला आया था और अकेला जा रहा हूँ। मैंने देश और प्रजा का भला नहीं किया। भविष्य के लिए कोई आशा नहीं है।"

औरंगजेब

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—औरंगजेब और अकबर की धर्मनीति की तुलना करो।

२—औरंगजेब की नीति का क्या परिणाम हुआ?

३—औरंगजेब के गुणों और चरित्र के विषय में क्या जानते हो?

४—अपने राज्य के अन्तिम दिनों में औरंगजेब को किन कष्टों का सामना करना पड़ा।

५—अपने जीवन के अन्तिम दिनों में औरंगजेब के लिखे पत्रों में से किसी पत्र का सारांश बताओ। उस पत्र से उसके हार्दिक भावों के विषय में क्या प्रकट होता है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—औरंगज़ेब की नीति का विरोध

औरंगजेब की नीति से त्रस्त होकर राज-शक्तियों में सिक्खों, राजपूतों और मराठों ने तथा जनसाधारण में सतनामियों, जाटों और बुंदेलों ने खूब डटकर उसका मुकाबला किया और मुगल साम्राज्य की जड़ें हिला दीं।

(क) सिक्खों, राजपूतों और मराठों का विरोध

(१) **सिक्ख**—गुरु नानक के उपदेशों से पन्द्रहवीं शती में सिक्ख सम्प्रदाय चला था। पंजाब में उनके गुरु तेगबहादुर ने औरंगज़ेब के धार्मिक अत्याचारों से तंग आकर सम्राट का विरोध किया। वह कैद करके दिल्ली लाये गये और उनसे मुसलमान होने या सिर देने के लिए कहा गया। गुरुजी ने सिर दे दिया, पर सार अर्थात धर्म न दिया (१६७५ ई०)। उनके वध के समाचार से सिक्खों में सनसनी फैल गयी। अपने गुरु के वध का बदला लेने के लिए

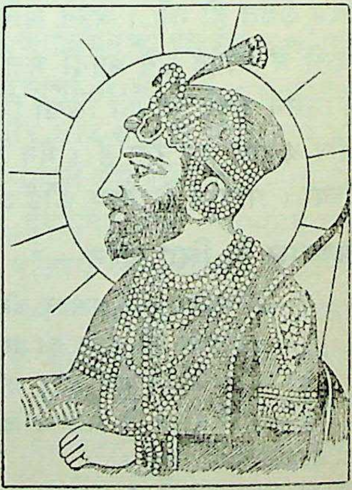
गुरु गोबिन्दसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उन्होंने कमर कस ली। गुरु तेगबहादुर के पुत्र **गुरु गोविन्दसिंह** ने सिक्खों का संगठन करके उन्हें एक प्रबल सैनिक शक्ति (खालसा) बना दिया। सिक्खों ने मुगलों को कई जगह परास्त किया। एक बार गुरु के दो पुत्र सरहिन्द के फौजदार के हाथ में पड़ गये। उसने उनको जिन्दा ही दीवार में चुनवा दिया। फिर भी मुगल सरकार के अत्याचारों से न तो सिक्ख भयभीत हुए और न उन्होंने हिम्मत हारी। उन्हें अनेक कष्ट सहने पड़े, पर औरंगजेब के जीवन-काल में बराबर संघर्ष जारी रखा।

(२) **राजपूत**—राजपूतों में शत्रुता की अग्नि उस समय भड़की, जब औरंगजेब ने राजा जसवन्तसिंह के पुत्र अजितसिंह को अपने यहाँ रखना चाहा (१६७६ ई०)। दुर्गादास राठौर के नेतृत्व में जो युद्ध राजपूतों ने शुरू किया वह अनेक वर्षों तक चलता रहा। औरंगजेब का अकबर नामक एक पुत्र जिसे उसने राजपूतों से लड़ने भेजा था, शत्रुओं से जा मिला। इस संकट के समय औरंगजेब ने बड़ी कूटनीति से काम लेकर स्थिति को अपने अनुकूल बनाया। राजपूत उस समय हरा तो दिये गये, परन्तु मुगल सम्राट उनकी सेवाओं से वंचित हो गया। मराठों की भाँति राजपूत भी बार-बार हारते और पुनः अपना संगठन कर लेते थे। अन्त में औरंगजेब के मरते ही जोधपुर में अजितसिंह का अधिकार हो गया।

(३) **मराठा**—औरंगजेब के सबसे प्रबल शत्रु मराठे सिद्ध हुए। सल्तनत-काल के विजयनगर राज्य के समान, मुगल राज्य में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए छत्रपति शिवाजी ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मराठों को संगठित करके महाराष्ट्र में एक नये राज्य को स्थापित किया (१६७४ ई०)।

शिवाजी के विषय में तुम विस्तार के साथ अगले अध्याय में पढ़ोगे। यहाँ इतनी बात जान लेना आवश्यक है कि औरंगज़ेब की भेजी हुई मुगल सेनाएं शिवाजी का अन्त न कर सकीं। औरंगजेब पहले उसे कुछ भी न समझता और पहाड़ी चूहा कहा करता था, परन्तु शिवाजी को महाराष्ट्र के प्रजाजनों का ऐसा सहयोग प्राप्त हुआ कि उसने मुगल साम्राज्य के भीतर अपना स्वतन्त्र राज्य कायम कर लिया।

छत्रपति शिवाजी के मरने के बाद जब औरंगजेब स्वयं दक्षिण को गया तब उसने मराठों को कुचलने के अनेक यत्न किये। तुम पढ़ चुके हो कि उसने शिवाजी के पुत्र सम्भाजी को अन्धा कराकर उसका वध करा दिया तथा पोते साहूजी को कैद कर लिया था। इतने पर भी महाराष्ट्र में स्वतन्त्रता का युद्ध बन्द नहीं हुआ, क्योंकि यह किसी राजा का युद्ध नहीं वरन् जनता का युद्ध था। मराठों ने अपना नया राजा चुना तथा उनके सेनापतियों और नायकों ने मुगल फौजों पर इधर-उधर छापे मार कर उनको नष्ट करना शुरू कर दिया। दशा यहाँ तक बिगड़ गयी कि मुगल सेनाएं तो स्वयं चढ़ाइयां क्या करतीं उन्हें मराठों के धावों से अपनी रक्षा की फिक्र पड़ गयी।

सम्राट के मरने के पहले ही दक्षिण के अधिकांश भागों में मुगलों की प्रभुता केवल नाममात्र को रह गयी थी। मराठों ने मुगल साम्राज्य के दक्षिणी प्रान्तों से चौथ वसूल करना शुरू कर दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(ख) सतनामियों, जाटों और बुन्देलों का विद्रोह

औरंगजेब की नीति से साधारण हिन्दू प्रजा तक कितनी दुखी और असन्तुष्ट थी, इसकी झलक तुम्हें सतनामियों, बुन्देलों और जाटों के विद्रोह से मिल सकती है।

सतनामियों के विद्रोह—सतनामी साधारण गृहस्थ लोग थे जो खेती, व्यापार आदि करते थे। उनके निवास-स्थान दिल्ली से दक्षिण-पश्चिम में पटियाला और अलवर प्रदेशों में थे। औरंगजेब के एक कर्मचारी ने उनके एक धर्मभाई को मार डाला। सम्राट की धर्मनीति से ये लोग पहले से ही नाराज थे, अतः विद्रोह करके लूटमार करते हुए दिल्ली के समीप तक जा पहुँचे। औरंगजेब को स्वयं इनसे मोर्चा लेना पड़ा। बड़ी कठिनता से मुगल तोपें और सेना उन्हें दबा पायीं (१६७२ ई०), परन्तु जाटों और बुन्देलों का विद्रोह औरंगजेब के जीवनकाल में चलता ही रहा।

जाटों का विद्रोह—१६६९ ई० में जब औरंगजेब की आज्ञा से मथुरा मन्दिरों को नष्ट किया गया, तब वहाँ के जाट बिगड़ खड़े हुए। उन्होंने **गोकला जाट** को अपना नेता बनाकर विद्रोह किया। मथुरा का फौजदार उससे लड़ता हुआ मारा गया। विद्रोह चारों ओर फैल गया और उसका दमन करने के लिए बादशाह को खुद क़दम बढ़ाना पड़ा। जाटों की हार हुई और उनका नेता मारा गया, परन्तु औरंगजेब ने जैसे सतनामियों को दबा लिया था वैसे ही वह जाटों का दमन न कर सका। गोकला का स्थान दूसरे नेताओं ने ले लिया। १६८६ ई० में जब बादशाह दक्षिण में था, **राजाराम** जाटों का नेता बना और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्रोह जोर पकड़ गया। उसने सिकन्दरा (आगरा) में अकबर के मकबरे को लूट लिया। शाही सेना से लड़ते हुए वह भी मारा गया। तब उसका भतीजा **चूड़ामन** नेता बना। जाट उसके नेतृत्व में औरंगजेब के अन्त काल तक शाही सेना से लड़ते रहे। औरंगजेब की मृत्यु के बाद जाटों ने अपना एक स्वतन्त्र राज्य भी स्थापित कर लिया जिसकी राजधानी भरतपुर थी। भविष्य में जाट मुगल साम्राज्य के नाश का एक मुख्य कारण बन गये।

बुन्देलों का विद्रोह—बुन्देलखंड में कुछ बुन्देले सरदार शाहजहाँ के समय से ही शाही सेना से लड़ रहे थे। औरंगजेब के राज्य-काल में उनका नेता चम्पतराय और उसकी स्त्री युद्ध नें मारे गये, पर उनका बालक **छत्रसाल** बचकर निकल भागा। (१६६१ ई०)। दस वर्षों के बाद महाराष्ट्र जाकर वह शिवाजी से मिला। शिवाजी ने उसे बुन्देलखंड जाकर मुगल सम्राट के विरुद्ध विद्रोह करने की सम्मति दी। ५ सवारों और २५ पियादों की सेना के साथ छत्रसाल बुन्देलखंड गया, जहाँ शाही फरमान के अनुसार अनेक मन्दिर नष्ट किये जा चुके थे। बुन्देलों के हृदयों में विद्रोह की अग्नि धधक रही थी, उन्हें एक नेता की आवश्यकता थी और छत्रसाल को वीर बुन्देलों की। अतः विद्रोहियों ने छत्रसाल को अपना राजा बनाया (१६७१ ई०)। उसकी सेना में धर्मरक्षा के लिए बहुत से बुन्देले और लूटमार में हिस्सा पाने के लिए अनेक अफगान भी शामिल हो गये। मुगलों के फौजदार उनके सामने नहीं टिक पाये। अब तो अन्य छोटे-छोटे सरदार छत्रसाल से आ मिले।

छत्रसाल ने मराठों की भाँति मुगलाई से चौथ वसूल करनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुरू कर दी। उधर औरंगजेब उस समय दक्षिण में फँसा था, इधर छत्रसाल मालवा पर छापे मारता था। उसने कालिंजर पर अधिकार कर लिया। किन्तु अपनी मृत्यु के दो वर्षों पूर्व एक शाही सेनापति के समझाने पर विवश होकर औरंगजेब से छत्रसाल ने सन्धि कर ली और उसे चार हजारी मनसबदार का दक्षिण में शाही पद मिला। परन्तु बादशाह के मरने के बाद छत्रसाल पुनः अपने घर बुन्देलखंड लौटकर स्वतन्त्रता के युद्ध का संचालन करने लगा।

(ग) औरंगजेब का अंग्रेजों से संघर्ष

तुम जानते हो कि जब भारत में सम्राट अकबर का राज्य था, तब इग्लैंड के कुछ व्यापारियों ने भारत से व्यापार करने के लिए 'ईस्ट इंडिया' कम्पनी नाम की एक संस्था बनायी थी। जहाँगीर के समय में इंग्लैंड के दो राजदूतों ने शाही दरबार से व्यापार की विशेष सुविधाएं प्राप्त कीं और अंग्रेज भारत के साथ शांति से व्यापार करते रहे, परन्तु औरंगजेब के राज्य-काल में राजनीतिक उथल-पुथल एवं अशांति से लाभ उठाकर कम्पनी ने अपनी नीति में परिवर्तन करने का विचार किया। अतः इंग्लैंड से कम्पनी के डाइरेक्टरों ने अपने कर्मचारियों को लिखा कि अब समय आ गया है कि भारत में भावी अंग्रेजी राज्य की स्थापना के लिए एक सैनिक शक्ति का संगठन किया जाय (१६८७ ई०)।

इस नीति को अमल में लाने के लिए कम्पनी के एक अंग्रेज अधिकारी ने बम्बई और पश्चिमी तट के बन्दरगाहों पर घेरा डाल कर अनेक मुगल नावों को पकड़ लिया तथा अपने कप्तान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

को लाल समुद्र व फारस की खाड़ी में मक्का आने-जाने वाले यात्रियों को गिरफ्तार करने भेजा। औरंगजेब अंग्रेजों की इस धृष्टता को सहन न कर सका। उसने उन्हें अति कठोर दंड देने की आज्ञा दी। तब अंग्रेजों के होश ठिकाने आये और कम्पनी के डाइरेक्टरों ने औरंगजेब से क्षमा माँगी (१६६० ई०)। सम्राट ने उन्हें तब क्षमा प्रदान की जब उन्होंने सब मुगल नावों को मुक्त कर दिया और मुगल सम्राट को डेढ़ लाख रुपया हरजाने का दिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—औरंगजेब और सिक्खों के संघर्ष का वर्णन करो।

२—औरंगजेब और राजपूतों में संघर्ष क्यों छिड़ गया ?

३—शिवाजी की मृत्यु के बाद औरंगजेब और मराठों के सम्बन्ध के विषय में क्या जानते हो ?

४—(क) 'ईस्ट इण्डिया कम्पनी' क्या थी और कब स्थापित हुई ?

(ख) औरंगजेब से ईस्ट इंडिया कम्पनी के संघर्ष का क्या कारण था ?

(ग) इस संघर्ष की मुख्य घटनाओं का वर्णन करो।

(घ) संघर्ष का क्या परिणाम हुआ ?

५—'क्या ही अच्छा होता यदि औरंगजेब अपने धार्मिक विश्वासों को साम्राज्य की राजनीति से अलग रखता।' तुम इस बात से सहमत हो या नहीं ? अपने विचार को सिद्ध करो।

६—औरंगजेब के विरुद्ध सतनामियों और जाटों के विद्रोहों का वर्णन करो।

७—नीचे लिखे हुए व्यक्ति इतिहास में क्यों प्रसिद्ध हैं :—

(क) दुर्गादास (ख) ताराबाई (ग) सरमद (घ) गुरु नानक (ङ) गुरु गोविन्दसिंह (च) गोकला (छ) चूड़ामन (ज) छत्रसाल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दसवाँ अध्याय

शिवाजी

तुमने पिछले पाठ में औरंगजेब और मराठों के संघर्ष तथा उनके नेता शिवाजी की स्वाधीनता के विषय में पढ़ा है। शिवाजी का जन्म १६२७ ई० में हुआ था। महाराष्ट्र के इतिहास में सत्रहवीं शती के ये चरण बड़े महत्व के हैं। उन दिनों वहाँ समर्थ गुरु रामदास ने अलख जगाकर विलक्षण राष्ट्रीय जागृति पैदा कर दी थी। उनकी घोषणा थी कि 'जो मराठे हैं उन सबको मिलाकर एक कर दो। धर्म के लिए बलि देने को तैयार रहो। धर्म के शत्रुओं से संघर्ष करो।

बालक शिवाजी और उनके खेल के बालसाथी इन विचारों के वायुमंडल में पले और बड़े हुए। शिवाजी के पिता, जो अहमदनगर के सुल्तान के सामन्त थे, उनकी देखरेख का भार माता जीजाबाई के ऊपर छोड़ कर स्वयं दरबार में रहने लगे थे। पति-स्नेह को न पाकर माँ ने अपना सारा प्यार, ध्यान और आशाएँ अपने बच्चे पर लगा दीं और रामायण व महाभारत की कथाएँ सुना-सुना कर शिवाजी के हृदय में बड़ी ऊँची उमंगें भर दीं।

अभी शिवाजी केवल उन्नीस वर्षों के थे कि उन्होंने मराठा युवकों को संगठित करना और बीजापुर राज्य के पहाड़ी दुर्गों को छीनना शुरू कर दिया। उसके बदले में बीजापुर के सुल्तान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ने उसके पिता को कैद कर लिया और कुछ समय बाद इस शर्त पर छोड़ा कि वह शिवाजी को वश में रखेगा। शिवाजी कई वर्षों तक कुछ न बोला। उसे दक्षिण के सुल्तानों की दुर्बलता और अपने साथियों के साहस का अनुभव हो गया था। उसने आगामी बड़े संघर्ष के लिए अपने दुर्गों और सेना का संगठन किया। इसके लिए उसे बहुत अच्छा अवसर भी मिल गया था, क्योंकि बीजापुर का सुल्तान उस समय शाहजहाँ के दकन के सूबेदार शाहजादा औरंगजेब से उलझा था।

छत्रपति शिवाजी

बीजापुर की सेना की चढ़ाई—शाहजहाँ की बीमारी का समाचार पाकर जब औरंगजेब उत्तर भारत को रवाना हुआ, तब बीजापुर के सुल्तान ने सेनापति अफजल खां को एक बड़ी सेना के साथ शिवाजी का दमन करने के लिए भेजा। अभिमानी अफजल खां सतर्क शिवाजी के हाथों मारा गया। मराठों ने उसकी सेना को भी भगा दिया। इस विजय से उत्साहित होकर शिवाजी ने बीजापुर राज्य के कई दुर्गों को छीन लिया।

मुगल सेना की चढ़ाई—अब उसका संघर्ष मुगल सेना से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी शुरू हो गया। मुगल सेना ने शिवाजी की पैतृक जागीर पूना पर अधिकार कर लिया था, एवं मुगल सेनापति शाइस्ताखाँ ने वहाँ अपनी छावनी भी डाल दी थी। शिवाजी एक रात को मुगल छावनी में पहुँच कर शाइस्ताखां के घर में जा घुसा। खिड़की के मार्ग से भाग कर खां ने अपने प्राण बचाये।

अब क्या था! एक वर्ष बाद शिवाजी ने सूरत पर धावा बोला। मुगल सेना किले में छिप गयी। शिवाजी १ करोड़ रुपया लूटकर लौट आया। औरंगजेब उसकी लूटमार और विजयों के समाचार से घबराया। दूसरी बार उसने अपने एक पुत्र और सेनापति जयसिंह को भेजा। शिवाजी और जयसिंह की सन्धि, आगरा जाना, वहाँ से भाग निकलना एवं फिर स्वदेश पहुँचने का इतिहास तुमने सुना होगा।

शासन-प्रबन्ध

आगरा से लौटकर शिवाजी अपने राज्य के प्रबन्ध में जुट गये और राज-गद्दी पर बैठ छत्रपति शिवाजी कहलाये (१६७४ ई०)। उसने शासन की बहुत ही उत्तम व्यवस्था की थी। अपने शासन का आधार उसने प्राचीन हिन्दू पद्धति को बनाया तथा मुगलों के शासन के गुणों को ग्रहण करके उसके दोषों को दूर रखा।

शिवाजी के शासन की मुख्य बातें नीचे लिखी हैं:—

(१) **अष्ट प्रधान**—आठ मन्त्रियों की एक परिषद बनायी जिसमें मुख्य मन्त्री पेशवा कहलाता था। उसका काम सलाह देना था।

(२) **धार्मिक उदारता**—शिवाजी ने अपनी सेना को आज्ञा दे रखी थी कि लूट के समय भी मसजिदों या धर्म पुस्तकों को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घ बिगाड़ें और न स्त्रियों व बच्चों को पकड़ें। मुस्लिम इतिहासकार खफी खाँ ने लिखा है कि यदि कभी कुरान की कोई प्रति लूट में किसी सैनिक के हाथ पड़ जाती थी, तो वह मुसलमानों को वापस कर दी जाती थी।

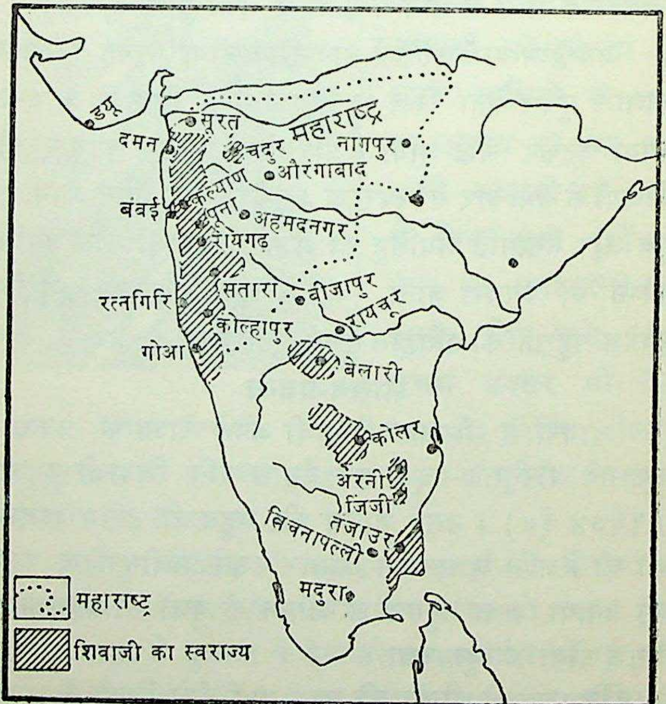

छत्रपति शिवाजी का स्वराज्य

(३) **सेना में संयम**—युद्धकाल में सेनापतियों अथवा सैनिकों को स्त्रियां साथ न रखने की ताकीद थी। मुगल सेनाओं में यह दोष बहुत था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार अपने राज्य की सुव्यवस्था करके शिवाजी ने मुगलों और दक्षिण के सुल्तानों के साथ फिर युद्ध छेड़ दिया और अनेक प्रदेश विजय कर वहाँ स्वराज्य कायम किया। उसके स्वराज्य को पीछे मानचित्र में दिखाया गया है। स्वराज्य के अलावा बहुत से ऐसे प्रदेश भी थे जो समय-समय पर जीते गये, परन्तु स्वराज्य में शामिल नहीं किये गये। ऐसे प्रदेशों से उसने 'चौथ' (आय का चौथाई भाग) वसूल किया।

शिवाजी का देहान्त (१६८० ई०) ५३ वर्षों की आयु में हुआ। वह भारतवर्ष की महान विभूतियों में से था। उसने महाराष्ट्र में ऐसे प्राण फूँके कि मराठे आगे चल कर सारे भारत की राजनीति पर छा गये। उनकी इस उन्नति का आधार शिवाजी ही थे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत के राष्ट्रीय इतिहास में शिवाजी क्यों प्रसिद्ध हैं ?

२—शिवाजी के आरम्भिक जीवन के विषय में क्या जानते हो ?

३—शिवाजी और बीजापुर के संघर्ष का वर्णन करो।

४—शिवाजी ने शाइस्ताखाँ को कैसे परास्त किया ?

५—शिवाजी और औरंगजेब में मित्रता क्यों न हो सकी ?

६—शिवाजी के शासन के मूल तत्व क्या थे ?

७—नीचे कुछ घटनाएं और सन् दिये हैं। बताओ कौन सी घटना किस सन् में हुई:—

घटनाएँ	सन्
१—शिवाजी का जन्म	१६८०
२—शिवाजी की राजगद्दी	१६२७
३—शिवाजी की मृत्यु	१६७४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्यारहवां अध्याय

मुगल साम्राज्य का अन्त

पाठ १—मुगल साम्राज्य का विघटन

मरते-मरते औरंगजेब साम्राज्य को तीन भागों में बांट कर अपने तीन पुत्रों के नाम कर गया था तथा यह कह गया था कि मेरे पुत्र आपस में लड़ें नहीं। परन्तु कौन सुनता है! तीनों में घमासान लड़ाई हुई और विजयी पुत्र बहादुरशाह के नाम से गद्दी पर बैठा।

बहादुरशाह उदार था। उसने अपने पिता की नीति को बदल दिया तथा **राजपूतों** और **मराठों** से मेल कर लिया। **सिक्खों** के विरुद्ध उसे लड़ना पड़ा, जिसका एक विशेष कारण था।

राजगद्दी के लिए युद्ध के समय बहादुरशाह ने सिक्खों के गुरु गोविन्दसिंह को भी अपना बना लिया था। उन्हें सेना की एक टुकड़ी सौंप कर अपने साथ दक्षिण को ले जा रहा था कि रास्ते में एक पठान ने उनकी हत्या कर दी। सिक्खों के हृदय के घाव फिर हरे हो गये और वे लोग बन्दा बैरागी को खालसा का अध्यक्ष बना कर लूटमार करने लगे। बन्दा ने सिक्खों की एक बड़ी सेना संगठित की और सरहिन्द के उस सूबेदार का काम तमाम किया जिसने गुरु गोविन्दसिंह के बच्चों को दीवार में जिन्दा चुनवाया था। इसके बाद उसने कुछ दूसरे प्रदेशों को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विजय कर अपना राज-दरबार लगाना और अपने सिक्के चलाना शुरू कर दिया। बहादुरशाह स्वयं उसका दमन करने के लिए पंजाब गया, परन्तु बन्दा हाथ न आया। इतने में बूढ़े बहादुरशाह की मृत्यु हो गयी (१७१२ ई०)। बन्दा बाद को तीन वर्षों पीछे कैद कर लिया गया और निर्दयता से उसका वध किया गया।

बहादुरशाह की मृत्यु के बाद फिर राजगद्दी के लिए युद्ध छिड़ा। साम्राज्य के सूबेदारों और दरबारियों की बन आयी। वह मुगल राजकुमारों को शतरंज की मुहरें बनाकर स्वयं **हार - जीत का** खेल खेलने लगे। इनमें दो **सैयद बन्धु** सफल हुए। इतिहास में वे **'बादशाह बनाने वाले'** प्रसिद्ध हैं। पहले उन्होंने **फर्रुखसियर** को गद्दी पर बिठाया, फिर पाँच छह वर्षों बाद उसका वध कराकर **मुहम्मदशाह** को बादशाह बनाया। सैयद बन्धु मराठों से जा मिले थे **और** उन्हीं के बल पर

मुहम्मदशाह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वे दिल्ली की गद्दी के साथ खेलते रहे। सयद बन्धुओं का यह गौरव दूसरे सूबेदारों को बहुत अखरता था। अन्त में हैदराबाद के सूबेदार ने विद्रोह कर दिया। सैयद हुसेनअली उसका दमन करने चला, परन्तु मार्ग में ही मार डाला गया। उसका भाई सैयद अब्दुल्ला भी हरा दिया गया और बन्दी हुआ।

मुहम्मदशाह के शासन-काल में साम्राज्य के खंड-खंड होने लगे। साम्राज्य में अराजकता फैल गयी। इस प्रकार की दुर्दशा में फारस के बादशाह **नादिरशाह** ने भारत में घुसकर दिल्ली पर आक्रमण कर दिया (१७३९ ई०)। उसके सामने मुगल सेना बुरी तरह हारी। विजयी नादिरशाह ने दिल्ली में प्रवेश किया और दीवानखास के समीप शाही महल में ठहरा। अब नगर में लूटमार हुई। अन्त में ७० करोड़ रुपया और तख्तेताऊस के साथ नादिरशाह अपने देश को लौट गया। मुहम्मदशाह की गद्दी तो बची रही, परन्तु नादिरशाह के धक्के से मुगल साम्राज्य का मान-सम्मान सब धूल में मिल गया। अवध, बंगाल और हैदराबाद के सूबेदार स्वतन्त्र हो गये और देश में मराठों की तूती बोलने लगी। दिल्ली की गद्दी पर मुगल सम्राट केवल नाममात्र को बच रहा, तब मराठों का प्रभाव दिल्ली दरबार में भी सर्वोपरि हो गया। उन्होंने पंजाब भी जीत लिया (१७६० ई०)।

नादिरशाह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब **अहमदशाह अब्दाली** ने १७६१ ई० में भारतपर आक्रमण किया, तब पानीपत के रणक्षेत्र में उसका सामना नाममात्र के मुगल सम्राट शाहआलम ने नहीं, वरन भारत की प्रमुख शक्ति मराठों ने किया था। इस युद्ध में मराठे हार गये। शाहआलम को अब्दाली ने सम्राट बना रहने दिया। इसके चार वर्षों बाद शाहआलम को पेंशन मिली (१७६५ ई०), जिसको मंजूर करने वाली भारतीय राजनीति में एक नयी विदेशी शक्ति अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी थी। इसी कम्पनी ने अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाह द्वितीय को बन्दी बनाकर रंगून निर्वासित कर दिया (१८५७ ई०)। वहीं छह वर्षों बाद उसका देहान्त हुआ और इस प्रकार मुगल सम्राट का नामोनिशान मिट गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—बहादुरशाह कौन था? उसके राज्य-काल में मुगल साम्राज्य की क्या दशा थी?

२—बन्दा वैरागी कौन था? उसके विषय में क्या जानते हो?

३—'सैयद बन्धु' कौन थे? वे क्यों प्रसिद्ध हैं?

४—मुहम्मदशाह के समय मुगल साम्राज्य की दशा का वर्णन करो।

५—नादिरशाह कौन था? उसके भारत पर आक्रमण के विषय में क्या जानते हो?

६—अहमदशाह अब्दाली कौन था? उसका किसने मुकाबला किया और क्यों?

७—शाहआलम द्वितीय कौन था? उसकी क्या गति हुई?

८—अन्तिम मुगल सम्राट का नाम बताओ। उसके विषय में क्या जानते हो?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—सामाजिक जीवन और आर्थिक दशा

तुम पिछले कई पाठों में मुगल राज्य की स्थापना, उन्नति और अवनति का इतिहास पढ़ चुके हो। अब उस समय के सामाजिक जीवन और आर्थिक दशा के विषय में यहाँ जान लेना आवश्यक है।

सामाजिक जीवन

उस समय के जन-समाज की दशा का वर्णन अनेक यूरोपीय यात्रियों ने अपनी डायरियों में लिखा है। उनके लेखों से प्रकट होता है कि ऊँचे वर्ग के अमीर-उमरा जहाँ भोग-विलास और मौज-मस्ती का जीवन बिताते थे, वहाँ मजदूर, नौकर एवं छोटे दुकानदारों का जीवन गुलामों के समान था। वस्तुओं की बहुतायत और कीमतें कम होने के कारण गाँवों या शहरों के साधारण लोगों को भरपेट भोजन अवश्य मिल जाता था, पर वे लोग गुप्त युग के राजाओं की प्रजा के समान धनी, सुखी व प्रसन्न नहीं थे।

अमीर-उमरा बढ़िया-बढ़िया खाने, शराब, उत्तम वस्त्र, नाच, गाने, जुए आदि में रुपया पानी की तरह बहाते थे। एक प्रसिद्ध-विद्वान मोरलैंड ने हिसाब लगाकर बताया है कि पाँच हजारी मनसबदार की अपने खर्चे के लिए मासिक आमदनी करीब १८,००० रु० और एक हजारी की करीब ५,००० रु० थी। मनसबदारी का पद बाप के बाद बेटे को मिलना आवश्यक न था। यह भी समझा जाता है कि मरने के बाद सम्पत्ति राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में विलीन हो जायगी, अतः खूब जी खोलकर खर्च करना इन कर्मचारियों के लिए साधारण बात हो गयी थी। धन की अधिकता ने उन्हें विलासी बना दिया था। बादशाह की भाँति वे लोग भी बहुत सी स्त्रियों, नर्तकियों आदि को अपने हरमों (अन्तःपुरों) में रखने लगे थे। सामन्तों के इस प्रकार के आचार पर किसी मुगल बादशाह ने रोकथाम नही की, क्योंकि उनमें से अधिकांश स्वयं भी इस प्रकार के दोषों से मुक्त न थे। इस प्रसंग में जहाँगीर की मिसाल याद आती है। उसके समय में शराब-नोशी का रिवाज अति को पहुँच गया था। जहाँगीर सुरापान को इतना गौरव देता था कि उसने एक मुद्रा पर शराब का प्याला हाथ में लिए अपनी मूर्ति अंकित करायी। सर टामस रो ने भी उसके दरबार की भोग-विलासिता एवं साधारण जनता की दरिद्रता का वर्णन किया है।

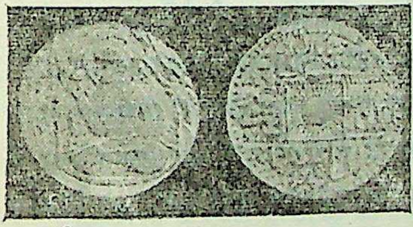

जहाँगीर के सिक्के

आर्थिक दशा

मुगलों के शासन-काल की आर्थिक दशा जानने के लिए भी यूरोपीय यात्रियों के लेखों से बड़ी सहायता मिलती है। एडवर्ड टैरी ने लिखा है कि सारे देश में खाने की वस्तुओं का बाहुल्य था और बिना किसी कठिनाई के सब लोग रोटी खा सकते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबर के मन्त्री अबुलफजल की लिखी 'आइन-ए-अकबरी' नाम की किताब में अनेक वस्तुओं के उस समय के मूल्य लिखे हैं। उस समय के सस्तेपन को पढ़कर बड़ा आश्चर्य होता है। अकबर के समय गेहूँ १ रु० का करीब ८० सेर, बाजरा १२५ सेर, उर्द या मूँग की दाल ६० सेर, घी १० सेर एवं दूध ४० सेर था। इसलिए थोड़ी सी आमदनी में भी गुजारा भली-भाँति हो सकता था। एक मिस्त्री, बढ़ई आदि अपनी दैनिक आमदनी से १३ सेर गेहूँ ले सकता था और साधारण मजदूर ४। सेर गेहूँ।

मुगलों के शासन-काल में भी गुप्त राजाओं के शासन-काल के समान भारत का विदेशों के साथ **व्यापार** बड़ी उन्नत दशा में था। यूरोप में उस समय तक बड़े कल-कारखानों का विकास नहीं हुआ था और भारत में बने हुए माल की विदेशों में बड़ी माँग थी। इसी लालच में अनेक **यूरोपीय व्यापारी** इस देश में आते और शाही दरबार में व्यापारिक सुविधाओं के लिए प्रार्थनाएं करते थे। उस समय भारत में **वस्त्र** बहुत बढ़िया बनते थे। बंगाल के बारे में बर्नियर ने लिखा है कि वहाँ सूती और रेशमी कपड़ा इतना अधिक बनता था कि उसे स्वयं बंगाल, मुगल साम्राज्य, पड़ोसा देश एवं यूरोप तक की रसद के लिए एक विशाल भंडार समझना चाहिये। 'यह तो एक सूबे की बात रही। इसके अलावा गुजरात, खानदेश, जौनपुर, वाराणसी, पटना आदि वस्त्र-व्यवसाय के अन्य केन्द्र थे। कश्मीर, लाहौर, आगरा आदि में ऊनी वस्त्र, शाल-दुशाले एवं गलीचे बनते थे।

उस समय भारत का **शिल्प** भी संसार में आदर की दृष्टि से देखा जाता था। लकड़ी, हाथीदाँत, सोना, चाँदी आदि की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनेक बहुमूल्य वस्तुएं स्वदेश एवं विदेश के धनी-मानी लोग बड़े शौक से मोल लेते थे ।

विदेशों से उस समय भारत में बिकने के लिए सोना, चाँदी, मणियाँ, मूँगे, हाथीदाँत, घोड़े आदि लाये जाते थे ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत के मुगल साम्राज्य के समय के दरबारियों और साधारण प्रजा की सामाजिक दशा क्या थी ?

२—मुगल साम्राज्य के समय के सस्तेपन का वर्णन करो ।

३—मुगल साम्राज्य काल में भारतीय व्यापार की क्या दशा थी ?

४—मुगल साम्राज्य के समय यूरोपीय व्यापारी भारत में क्यों आते थे ?

५—भारत में मुगल साम्राज्य के समय शिल्प की क्या दशा थी ?

पाठ ३—साहित्य, संगीत और चित्रकला

साहित्य, संगीत, चित्रकला एवं वास्तुकला की मुगलों के शासन-काल में इतनी उन्नति हुई कि मध्यकाल के इतिहास में उसे कला का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। वास्तुकला अर्थात इमारतों के बनाने की कला के नमूने तुम अकबर और शाहजहाँ के पाठों में देख चुके हो। अकबर-काल के साहित्य की ओर भी पीछे संकेत हो चुका है। इस पाठ में तुम मुगलकालीन संस्कृति के तीनों अंगों—साहित्य, संगीत और चित्रकला का वर्णन थोड़े से विस्तार के साथ पढ़ोगे ।

(१) साहित्य

(क) फारसी का साहित्य—प्रायः सभी मुगल बादशाहों को साहित्य का बड़ा चाव था। **बाबर** ने तो अपना आत्मचरित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'बाबरनामा' भी तुर्की भाषा में लिखा था । उसका पुत्र हुमायूँ पुस्तकों का इतना प्रेमा था कि युद्ध यात्राओं में भी पुस्तकें अपने साथ रखता था । उसकी मृत्यु भी पुस्तकालय की सीढ़ी से लुढ़कने के कारण हुई । **अकबर** को बचपन में पढ़ना-लिखना किसी ने नहीं सिखाया, परन्तु वह विद्वानों का बड़ा पारखी था । उसके दरबार में सबसे अधिक ग्रन्थ रचे गये । उसका प्रिय मन्त्री अबुलफजल अपने काल का महान विद्वान था । उसने तथा उसके भाई फैजी ने फारसी में अनेक ग्रन्थ लिखे ।

अकबर का पुत्र **जहाँगीर** खूब पढ़ा-लिखा था । बाबर की भांति उसने भी अपनी आत्मकथा 'तुजुके जहाँगीरी' लिखी है । वह फारसी भाषा में है । **शाहजहाँ** के समय फारसी में बादशाहनामा, शाहजहाँनामा आदि कई इतिहास लिखे गये । उसका बड़ा पुत्र **दाराशिकोह** बड़ा विद्वान था । उसने स्वयं कई ग्रन्थ सूफी मत पर लिखे तथा भगवद्गीता और उपनिषद का फारसी में अनुवाद किया ।

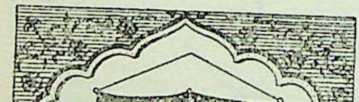

संस्कृत और फारसी का विद्वान और शाहजहाँ का बड़ा पुत्र दाराशिकोह

औरंगजेब भी बड़ा विद्वान था । बुढ़ापे में लिखे उसके पत्रों का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फारसी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। वह कविता नापसन्द करता था और न यह चाहता था कि कोई उसके समय का इतिहास लिखे। अतः गुप्त रीति से छिप कर कई इतिहास लिखे गये। फारसी में एक इतिहास खुलासत-उत-तवारीख़ एक हिन्दू ने भी लिखा है।

मुगलवंश की अनेक शाहजादियां, जैसे हूमायूँनामा की लेखिका बाबर की पुत्री **गुलबदन** बहुत पढ़ी-लिखी थीं। औरंगजेब की पुत्री **जेबुन्निसा** बड़ी अच्छी कविताएं लिखती थी।

(ख) **देशी भाषाओं में साहित्य**—मुगलकाल में शेरशाह के समय हिन्दी भाषा में पद्मावत के लेखक **मलिक मुहम्मद जायसी** हुए। अकबर के समय के विद्वानों जैसे **तुलसीदास, रहीम** आदि के ग्रन्थों का हिन्दी साहित्य में अति ऊँचा स्थान है। सूरसागर के रचयिता **सूरदास** भी उसी समय हुए।

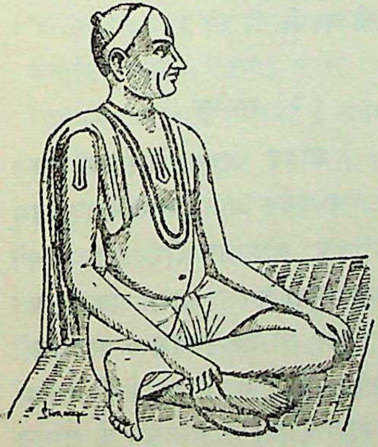

हिन्दी रामायण के रचयिता तुलसीदास विचार में मग्न बैठे हैं।

तुलसीदास अकबर के समय के ही नहीं वरन हिन्दी साहित्य के इतिहास में अब तक के कवियों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। उनका रामचरितमानस या रामायण हिन्दी का सबसे अधिक प्रिय ग्रन्थ है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबर राज-दरबार के अनेक हिन्दी कवियों में सर्वोच्च स्थान अब्दुर्रहीम खानखाना का है जो रहीम के नाम से प्रसिद्ध हैं। उन्होंने सैकड़ों पद और दोहे आदि लिखे हैं।

शाही पोशाक में
अब्दुर्रहीम खानखाना

शाहजहाँ और औरंगजेब के समय के मख्य कवि सुन्दर, सेनापति, भूषण, देव, बिहारी साहित्य के इतिहास में प्रसिद्ध हैं। सुन्दर की कविताओं से प्रभावित होकर शाहजहाँ ने उसे 'महाकविराय' की पदवी दी थी।

(२) संगीत

बाबर अच्छा संगीतज्ञ था। उसने अनेक गाने बनाये थे। **हुमायूँ** भी हर सोमवार और बुधवार को गाने सुना करता था। **अकबर** का दरबार तो देश-विदेश के संगीतज्ञों से भर गया था, उसमें **तानसेन** मुख्य था। उसके विषय में अबुलफजल ने लिखा है कि हजार वर्षों से तानसेन के समान अन्य कोई गाने वाला नहीं हुआ। रहीम भी कवि और गायक दोनों थे। **जहाँगीर** भी संगीत-प्रेमी था। यह परम्परा **शाहजहाँ** के समय में भी बनी रही। वह स्वयं सोने के पहले गायकों से गाने सुना करता था। **औरंगजेब** नाच-गाने को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इस्लाम के खिलाफ समझता था, अतः उसने धीरे-धीरे दरबार के सब गाने वालों को निकाल दिया, पर राजकीय संरक्षण न रहने पर भी गान-विद्या का मुगल काल तक खूब प्रचार रहा। बेगमों ने नाच-गान को कभी नहीं छोड़ा। इस प्रकार मुगल काल में संगीत की बड़ी उन्नति हुई। शाही दरबार का आश्रय पाकर संगीत के कई संस्कृत ग्रन्थों का फारसी में अनुवाद हुआ एवं नये-नये राग बनाये गये।

(३) चित्रकला

चित्रकला बाबर से लेकर जहाँगीर के समय तक खूब फूली-फली। हुमायूँ फारस से अपने साथ चित्रकला के जानने वाले कई चित्रकार लाया था। अकबर ने उनसे इस देश के चित्रकारों का सम्पर्क और सहयोग कराकर चित्रकला,की बड़ी उन्नति की। उन्होंने चित्रों में 'मुगल शैली' को जन्म दिया। जहाँगीर ने चित्रकला का मर्म समझने में कमाल कर दिखाया था। वह चित्र को देखकर चित्रकार का नाम बता सकता था। उसके बाद मुगल राज-दरबार में चित्रकारों का वह मान न रहा। शाहजहाँ को इमारतों का विशेष शौक था, अतः शाही दरबार के चित्रकार सामन्तों, देशी राज्य और प्रान्तीय सूबेदारों के यहाँ चले गये। तभी से राजपूताने में चित्रकला की 'राजपूत शैली' का विकास हुआ। जयपुर इसका प्रधान केन्द्र था।

(४) वास्तुकला

मुगल सम्राटों की बनवायी हुई अनेक इमारतों का वर्णन अकबर और शाहजहाँ के पाठों में तुम पढ़ चुके हो। इन इमारतों में नक्काशी और पच्चीकारी का अत्यन्त बारीक काम है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(क) **नक्काशी**—अकबर के समय की नक्काशी के उत्तम नमूने उसके मकबरे में मिलते हैं। वहाँ संगमरमर की दीवारों पर ५२ प्रकार की नक्काशी का काम है। उस समय संगमरमर की जाली बहुत पसन्द की जाती थी। तुम जब कभी आगरा जाओ, तब फतहपुर सीकरी में चिश्ती की कब्र पर तथा ताज में कब्रों के चारों ओर सफेद पत्थर की जालियों को अवश्य देखना। उन्हें देखकर हर कोई दंग रह जाता है। पत्थर को इतनी सफाई से काटा गया है कि जैसे वह पत्थर नहीं, मोम हो।

(ख) **पच्चीकारी**—मुगलों की इमारतों में रंग-बिरंगी पच्चीकारी एवं जड़ाऊ काम का बड़ा प्रचलन था। अकबर के

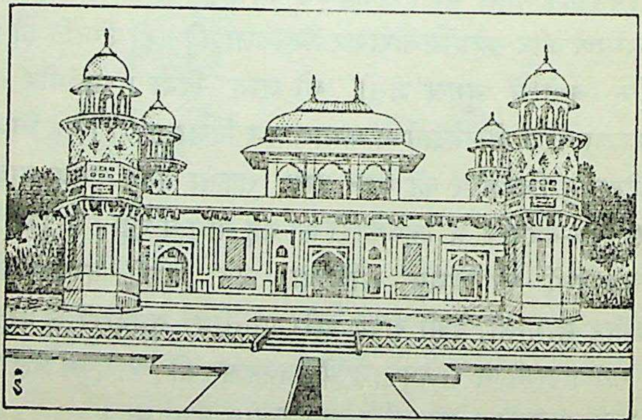

ऐतमादुद्दौला का मकबरा

समय की इमारतों में संगमरमर एवं अन्य प्रकार के सुन्दर पत्थरों के डिजाइन काटकर दीवारों में जड़े गये थे। जहाँगीर के समय पच्चीकारी के काम में अधिक बारीकी और चमक आ गयी। उस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय दीवारों में पत्थर को काटकर अनेक प्रकार के बेल-बूटे बनाये गये तथा कटी हुई जगहों में सीप और जवाहरात को काट कर उनमें इस प्रकार भर दिया गया जैसे कोई चित्रकार किसी चित्र की रूपरेखा में ब्रुश से रंग भरता है। जहाँगीर-काल की पच्चीकारी का नमूना आगरे के एतमादुद्दौला के मकबरे में बहुत पाया जाता है। उसे नूरजहाँ ने अपने पिता की कब्र के ऊपर बनवाया था।

शाहजहाँ के राज्य में पच्चीकारी विशेष रूप से निखरी। ताजमहल में मन को मोहित करने वाले उसके अनेक नमूने मिलते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—मुगलकाल को कला का 'स्वर्ण युग' क्यों कहा जाता है ?

२—मुगल बादशाहों के साहित्य-प्रेम के विषय में तुम क्या जानते हो ?

३—मुगलकाल में देशी भाषाओं के साहित्य की वृद्धि का वर्णन करो।

४—मुगलकाल के हिन्दी के विद्वान कवियों में से किसकी कविताएँ तुमने पढ़ी अथवा सुनी हैं ? इन कवियों में सर्वश्रेष्ठ किसे माना जाता है ?

५—मुगलकाल में संगीत की उन्नति के विषय में क्या जानते हो ?

६—मुगल सम्राटों की बनवायी हुई इमारतों में नक्काशी के विषय में तुम क्या जानते हो ?

७—मुगलकाल में पच्चीकारी की कला में क्या उन्नति हुई ? उसके उदाहरण कहाँ मिलते हैं ?

८—नीचे लिखे हुए के बारे में क्या जानते हो:—
बाबरनामा, तुजुके जहाँगीरी, शाहजहाँनामा, खुलासत-उत-तवारीख, जेबुन्निसा, तुलसीदास, भूषण, तानसेन, दाराशिकोह, एतमादुद्दौला,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—मुगल साम्राज्य के पतन के कारण

बालको, तुमने पिछले कई पाठों में मुगल साम्राज्य की स्थापना, विस्तार, उन्नति, अवनति, कला-कौशल आदि का इतिहास पढ़ा है। अब उसके पतन के कारणों पर विचार करना आवश्यक है।

(१) औरंगजेब ने अकबर की 'सुलहकुल' अर्थात सब के धर्मों के बारे में सहनशीलता की **नीति को बदलने** का जो फल पाया उसको तुम देख चुके हो। औरंगजेब के पुत्र बहादुरशाह ने फिर अकबर का मार्ग पकड़ा, परन्तु वह अपने पूर्वजों के समान शक्तिशाली न था। अतः औरंगजेब के समय जो विद्रोहों की ज्वाला जल उठी थी, उसके दुर्बल वंशज उसे नहीं बुझा सके।

(२) मुगल दरबारियों की **चरित्रहीनता** ने भी साम्राज्य को बड़ी हानि पहुँचायी। अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के समय बैरमखाँ, मानसिंह, टोडरमल, बीरबल, अबुलफजल, अब्दुर्रहीम खानखाना, एतमादुद्दौला, महाबतखाँ, आसफखाँ जैसे योग्य और राजभक्त दरबारियों ने मुगल साम्राज्य की वृद्धि में जी जान लगा दी थी, परन्तु पिछले मुगल सम्राटों की चरित्रहीनता के कारण उनके दरबारियों के चरित्र भी गिर गये। राज-दरबार आलस और विलास का अड्डा बन गया।

(३) तुर्की, अफगानी, ईरानी एवं मध्य एशिया के अन्य मुसलमान दरबारी **भारत को विदेश** समझते थे, अतः उन्हें इस देश से कोई प्रेम या सहानुभूति न थी। धन-दौलत की भरमार और शाहनशाहों की विलासिता ने उन्हें और भी पतित कर दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहाँ एक बात और याद रखने योग्य है। तुर्क या अफगान फौजी थे। ऐसे आदमियों के सामने, औरंगजेब के बाद, जब दिग्विजय का कोई कार्यक्रम नहीं रहा, तब **सेनापति और सैनिक शिथिल** हो गये, इसी कारण नादिरशाह की बाढ़ को मुगलों की सेना न रोक सकी। उसकी वैसी दशा हुई जैसी शस्त्रों से सजी भेड़ों के झुंड की होती है।

(४) मुगल **सेना का दोषपूर्ण संगठन** भी साम्राज्य के पतन का कारण बना। तुम्हें याद होगा कि उस समय सैनिकों को वेतन शाही खजाने से नहीं मिलता था, बल्कि मनसबदार उनकी भर्ती करते और उन्हें वेतन देते थे। इस कारण वे सैनिक उन मनसबदारों को ही अपना मालिक समझते थे। सम्राट के लिए उनके अन्दर कोई ममता न थी।

एक बात और है। सेना का खर्चा चलाने के लिए मनसबदारों को ऊँचे लगान की उत्तम भूमियां दी जाती थीं। पिछले सम्राटों के दुर्बल होने पर प्रायः मनसबदारों ने उन भूमियों को अपनी मौरूसी जागीरें मान लिया और उनकी आय को सेना पर खर्च करना छोड़ दिया। इस कारण साम्राज्य की आय और सेना दोनों की हानि हुई।

(५) अकबर के शासन-काल में किसानों से लगान सीधे लिया जाता था, परन्तु उसके बाद धीरे-धीरे **ठेकेदारी** चल पड़ी। ठेकेदार किसानों से ज्यादा से ज्यादा लगान वसूलने लगे, यहाँ तक कि किसानों के पास खाने-पीने की तंगी हो गयी। उनमें खेती के लिए उत्साह न रहा और वे लोग खेतों को छोड़ने लगे। राज्य की आय धीरे-धीरे बन्द होती गयी, यहाँ तक कि शाही परिवार में भी भरपेट भोजन के लाले पड़ने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डा० यदुनाथ सरकार ने १७५५ ई० की एक घटना की ओर संकेत किया है। एक बार तीन दिनों तक जनानखाने की रसोई में चूल्हा नहीं जला। भूख की ज्वाला से तड़पकर शाहजादियां परदे को तोड़ महल से बाहर निकल शहर की ओर दौड़ीं, परन्तु किले के दरवाजे बन्द थे, बाहर न जा सकीं। सारे दिन, सारी रात, चौकीदार की कोठरी में बैठी रहीं। अगले दिन जबरदस्ती अपने-अपने कमरों को भेजी गयीं।

(६) जब मुगल साम्राज्य की यह दुर्दशा थी, तब भारत में एक ओर **मराठे** अपने राज्य का विस्तार कर रहे थे और दूसरी ओर **अंग्रेज कम्पनी** व्यापार से मालामाल हो रही थी।

औरंगजेब के बाद किसी मुगल सम्राट में इतनी शक्ति न थी कि वह मराठों का मुकाबला या अंग्रेजों की रोकथाम करता। अतः पहले तो मराठों ने मुगल साम्राज्य को खूब झकझोरा और बाद को अंग्रेजी कम्पनी ने उसका अन्त कर दिया। अन्तिम मुगल सम्राट बहादुरशाह अंग्रेजों का बन्दी रहकर देश के बाहर रंगून में मरा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—मुगल साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे ?

२—मनसबदारी प्रथा का मुगल साम्राज्य के संगठन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

३—रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

औरंगजेब ने अकबर की········नीति बदल दी। पिछले मुगल सम्राटों की········के कारण उनके दरबारियों के चरित्र गिर गये। ················एवं मध्य एशिया के अन्य मुसलमान दरबारी भारत को········समझते थे। उनके मनसबदारों ने भूमियों को अपनी······मान लिया। लगान की वसूली के लिए··········की प्रथा चल पड़ी। इन कारणों से मुगल साम्राज्य का पतन हो गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारहवाँ अध्याय

मराठा साम्राज्य

पाठ १—साम्राज्य का उदय—पेशवा बाजीराव

तुम पिछले पाठों में मराठों की शक्ति के प्रारम्भ का इतिहास पढ़ चुके हो। तुम्हें याद होगा कि औरंगजेब ने मराठों की सेना को हराकर शिवाजी के पुत्र सम्भाजी का वध कर दिया और उसके पोते साहूजी को बन्दी बना लिया था, परन्तु इतने पर भी औरंगजेब मराठों को कुचल न सका। वे अपना नया राजा चुनकर लूटमार एवं मुगलों के शिविरों पर छापा मारते रहे। औरंगजेब के पुत्र बहादुरशाह ने अपने पिता की नीति को बदल कर साहूजी को कैद से छोड़ दिया। इस प्रकार जब साहूजी फिर अपने देश में पहुँचा, तब मराठे हर्ष और उल्लास से फले न समाये।

साहूजी सतारा में छत्रपति बनाया गया (१७०८ ई०)। वह मुगल दरबार में रहने के कारण विलासी हो गया था, अतः राजकाज उसने अपने मुख्य मन्त्री पर छोड़ दिया। मराठे मुख्य मन्त्री को पेशवा कहते थे। अब आगे इतिहास में छत्रपति की जगह पेशवा मराठा नीति और शक्ति के कर्त्ता-धर्त्ता बन गये। भारत के इतिहास में कई पेशवा बड़े योग्य और महान हुए हैं। पहले **पेशवा बालाजी विश्वनाथ** (१७१४-२०ई०) ने 'मुगल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बादशाहों को बनाने वाले' सैयद बन्धुओं को उनके काम में सहायता दी और मुगल सम्राट से सारे दक्षिण में चौथ वसूल करने का अधिकार प्राप्त किया।

पेशवा बालाजी विश्वनाथ कोई बड़ा योद्धा अथवा सैनिक नहीं था। मध्यकाल के इतिहास में वह उन इने-गिने व्यक्तियों में से है जिनकी गणना बिना सैनिक बने ही साम्राज्य के निर्माताओं में की जाती है। बालाजी एक चतुर राजनीतिज्ञ और कुशल प्रबन्धकर्ता था। उसकी कूटनीतिक सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण मुगल सम्राट के साथ मराठों की वह सन्धि (१७१९ ई०) है जिससे उन्हें दक्षिण में मुगलों के छहों सूबों से चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार प्राप्त हुआ। क्या कोई औरंगजेब के समय यह कल्पना कर सकता था कि उसकी मृत्यु के केवल १२ वर्षों बाद उसके वंशज अपने दक्षिण के राज्य की आय का एक बड़ा भाग इस प्रकार मराठों को सौंप देंगे ?

दूसरे पेशवा **बाजीराव** (१७२०-४० ई०) ने मुगल साम्राज्य की दुर्बलता को अच्छी तरह आँक लिया। उसने 'हिन्दू-पद-पादशाही' की स्थापना अपनी नीति बनायी।

बाजीराव वीर और अत्यन्त कुशल योद्धा था। उसने अपनी बीस वर्षों की पेशवाई में मराठों को भारत की प्रमुख शक्ति बना दिया। दक्षिण में हैदराबाद के निजाम को परास्त कर उसे सन्धि करने के लिए विवश किया एवं उससे चौथ वसूल की। उसने गुजरात, मालवा, बुन्देलखंड और बराड़ को जीता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१७३७ ई० में बाजीराव अपनी सेनाएं लेकर दिल्ली के पास जा पहुँचा, परन्तु मुगल सम्राट का अन्त करना राजनीति के विचार से ठीक न समझा। सम्राट ने अपनी सहायता के लिए **निजाम** को दक्षिण से बुला भेजा था, पर बाजीराव ने उसे भोपाल के पास ही जा घेरा। बुरी तरह घिर जाने पर निजाम ने फिर सन्धि की प्रार्थना की और अपनी जान बचायी। निजाम ने मालवा प्रदेश पर मराठों का अधिकार मान लिया और ५० लाख रुपया उन्हें देना स्वीकार किया।

बाजीराव

निजाम की ताकत को तोड़कर बाजीराव ने अपनी सेना कोंकण तट पर **पुर्तगालियों** का दमन करने के लिए भेजी। मराठों ने उन्हें हराकर बसई छीन लिया। मराठों ने अंग्रेजों से बम्बई भी छीन लिया था, परन्तु अंग्रेजों ने साहूजी के पास मित्रता के दूत भेजकर बम्बई को बचा लिया।

१७३९ ई० में नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण किया, तब दिल्ली के मुगल सम्राट ने पेशवा बाजीराव से मदद माँगी। बाजीराव ने लिख भेजा कि दिल्ली के बादशाह की ऐसे समय सहायता करना हमारे लिए बड़े गौरव की बात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होगी। इसके लिए उसने अपने सेनापतियों को कोंकण से दिल्ली चलने के लिए बुलाया, परन्तु पुर्तगालियों से बसई जीतने के बाद जब वे बाजीराव से मिलने और उसके साथ दिल्ली चलने को उत्तर की ओर आगे बढ़े, तब नादिरशाह दिल्ली छोड़ चुका था।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में पेशवा बाजीराव ने चौथ वसूल करने के लिए मगल सूबों को अपने सरदारों—गायकवाड़, शिन्दे, भोंसले और होल्कर—में बाँट दिया।

१७४० ई० में बाजीराव बीमार पड़ा और उसकी मृत्यु हो गयी।

बाजीराव का चरित्र—इसमें कोई सन्देह नहीं है कि सैनिक योग्यता और कूटनीति में छत्रपति शिवाजी के बाद बाजीराव का स्थान है। उसके शासन-काल में मराठों के देशी अथवा विदेशी सभी शत्रुओं की पराजय हुई एवं मराठों के राज्य ने बड़ी उन्नति की।

बाजीराव ने अपनी वीरता और बुद्धिमत्ता से भारत की राजनीति का केन्द्र दिल्ली से हटाकर पूना को बना दिया। एक इतिहासकार रिचर्ड टेम्पल ने उसके विषय में लिखा है कि बाजीराव सर्वोत्तम घुड़सवार था, काम करने में सदा आगे और कठिनाइयों का सामना करने के लिए आग में कूदने के लिए भी तैयार रहता था। वह अपने सैनिकों के समान सदा कष्टों को सहकर उनके रूखे-सूखे भोजन से सन्तोष कर सकता था। उसने देशभक्ति से प्रेरित होकर सदा अपने राष्ट्र की मान-मर्यादा बढ़ायी। उसके जीवन का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लक्ष्य अरब सागर से बंगाल की खाड़ी तक मराठों का बोल-बाला स्थापित करना था। इसके लिए वह सदा सैनिक शिवरों में निवास करता रहा और वहीं अन्तकाल को प्राप्त हुआ।

मृत्यु के समय बाजीराव की अवस्था केवल ४० वर्षों की थी। अपने पराक्रम के कारण महाराष्ट्र में अब भी वह हिन्दू शक्ति का अवतार माना जाता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—औरंगजेब से पराजित होने के बाद मराठों ने अपनी शक्ति को किस प्रकार कायम रखा ?

२—साहूजी कौन था ? उसके चरित्र के विषय में क्या जानते हो ?

३—पेशवा बालाजी विश्वनाथ का मराठा इतिहास में क्या महत्व है ?

४—पेशवा बाजीराव के विषय में क्या जानते हो ?

५—बाजीराव की विजयों का वर्णन करो।

६—बाजीराव और मुगल सम्राट के सम्बन्धों के विषय में क्या जानते हो ?

७—बाजीराव और निजाम के संघर्ष का वर्णन करो।

८—बाजीराव के लक्ष्य क्या थे ? उनके प्राप्त करने में वह कहाँ तक सफल हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—मराठों का विस्तार पेशवा बालाजीराव

बाजीराव के मरने के बाद उसके पुत्र **बालाजीराव** (१७४०-६१) को छत्रपति साहूजी ने अपना पेशवा बनाया। उसकी आयु केवल १६ वर्षों की थी। उसने सतारा छोड़कर पूना को शासन का केन्द्र बनाया। बालाजीराव की पेशवाई के बीस वर्षों में मराठों की शक्ति चरम उन्नति को पहुँच गयी, परन्तु इक्कीसवें वर्ष में पानीपत के रणक्षेत्र में उसे ऐसा धक्का लगा कि उसके शोक में पेशवा बालाजीराव का देहान्त हो गया।

बालाजीराव के समय मराठे दिग्विजय को निकले। उन्होंने पहले झपट्टे में कर्नाटक के नवाब को परास्त किया (१७४१ ई०) तथा दूसरे झपट्टे में बंगाल के सूबेदार अलीवर्दी खाँ को हराकर उड़ीसा ले लिया एवं उससे १२ लाख रुपया वार्षिक चौथ वसूल की (१७५१ ई०)।

उसकी पेशवाई के समय में जब छत्रपति साहूजी की मृत्यु हुई (१७५० ई०) तब महाराष्ट्र में अनेक भीतरी झगड़े उठ खड़े हुए। पेशवा ने उनका दमन किया और सम्पूर्ण मराठा शक्ति अपनी मुट्ठी में केन्द्रित कर ली।

बालाजी के भाई राघोबा ने पश्चिम में पूरे गुजरात पर अधिकार कर लिया। इधर उत्तरी भारत में मराठों ने जाटों के साथ मिलकर अफगानों और रुहेला पठानों को हराया। रुहेले कुमायूँ की ओर भाग गये और गंगा-यमुना के दोआब में भी मराठों का प्रवेश हो गया।

उन दिनों भारत की राजनीति में पश्चिमोत्तर की ओर से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अहमदशाह अब्दाली की अफगान सेना तथा दक्षिण में फ्रांसीसी व अंग्रेज जोर बाँध रहे थे। बालाजीराव के समय मराठों का मुकाबला अफगानों आर यूरोपियों से हुआ।

अहमदशाह अब्दाली के मुगल साम्राज्य पर कई आक्रमण हो चुके थे, अतः दिल्ली के मुगल सम्राट ने मराठों की मदद

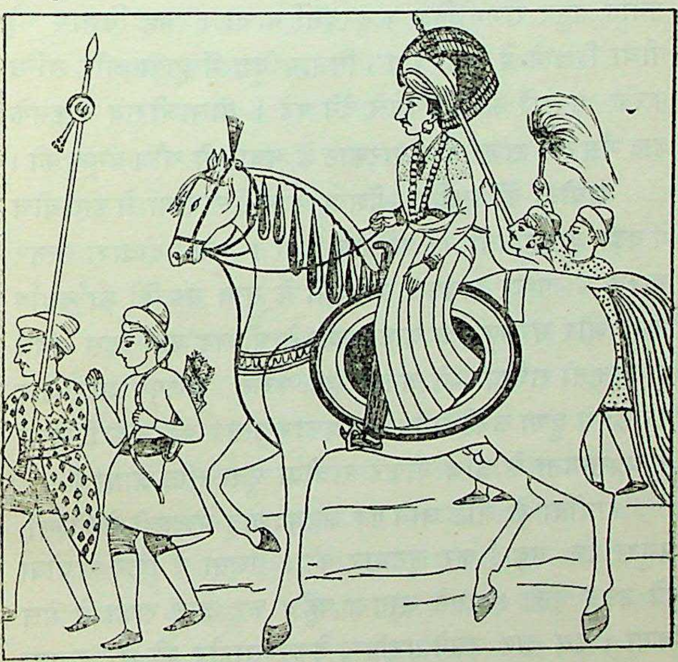

पेशवा बालाजीराव शाही शान के साथ घोड़े पर सवार हैं।

चाही। इस पर मराठे सरदार शिन्दे और होल्कर शाही वजीर के साथ दिल्ली पहुँचे, परन्तु अब्दाली पंजाब से लौट चुका था। अतः पेशवा ने अपने सरदारों को बापस बुला लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पेशवा सारे दक्षिण को मराठा साम्राज्य के अन्तर्गत करने की कोशिश कर रहा था। वहाँ की राजनीति में उस समय अंग्रेज और फ्रांसीसी भी विशेष भाग ले रहे थे। बालाजीराव चाहता तो भारतीय शक्तियों को एकत्र कर दक्षिण से यूरोपियों को निकाल बाहर करता, परन्तु वह अपने पिता बाजीराव के समान चतुर राजनीतिज्ञ व दूरदर्शी न था। वह निजाम को नीचा दिखाने में लगा रहा। निजाम युद्ध में हारा और सन्धि करके मराठों को कई जिले देने पड़े। बालाजीराव ने इसके बाद मैसूर के राजा और आरकाट के नवाब से चौथ वसूल की।

राघोबा की मूर्खता—पेशवा के भाई राघोबा ने इस बीच में बड़ी बुद्धिहीनता का परिचय दिया। उसने दोबारा उत्तर भारत में जाकर राजपूत राजाओं के साथ सख्ती का बर्ताव किया और भरतपुर के जाट राजा से भी लड़ पड़ा। इस संघर्ष में जीत तो राघोबा की अवश्य हुई, परन्तु राजपूत और जाट मराठों से घृणा करने लगे। इस प्रकार उत्तर भारत के हिन्दुओं में अप्रसन्नता के बीज बोकर राघोबा पूना लौट आया।

राघोबा के लौट जाने पर अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली, मथुरा पर चढ़ाई कर लूटमार की। पेशवा ने फिर राघोबा को उधर भेजा। उसने आगरा पहुँच कर जाट राजा से मेल किया। इस वार उसने सरहिन्द लेकर लाहौर को धर दवाया और अब्दाली के कर्मचारियों को वहाँ से मार भगाया। मुल्तान भी मराठों के अधिकार में आ गया। इन विजयों के बाद राघोबा लौट आया (१७५७ ई०)।

अब्दाली चुप बैठने वाला नहीं था। उसने फिर हमला

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया और मराठों को यमुना के घाटों के पास हराकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। पेशवा ने अपने भाई सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व में एक बड़ी सेना अहमदशाह अब्दाली से लड़ने के लिए भेजी। मराठा तोपखाने का नेता इब्राहीम गार्दी था। सब मराठा सरदार उस सेना के साथ थे। जाटों ने भी अपनी सेनाएं मराठों की मदद के लिए भेंजीं।

पानीपत के प्रसिद्ध रणक्षेत्र में दानों पक्षों की सेनाएं एकत्र हुईं (१७६० ई०)। पानीपत के युद्ध का विस्तारपूर्वक वर्णन तुम अगले पाठ में पढ़ोगे। इस युद्ध में मराठों की हार हुई और उनके अनेक वीर नेता एवं योद्धा मारे गये (१७६१ ई०)। पेशवा बालाजीराव के हृदय में इस पराजय से इतनी चोट पहुँची कि युद्ध के कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गयी।

बालाजीराव का चरित्र—इसमें कोई सन्देह नहीं कि बालाजीराव ने अनेक सैनिक सफलताएं प्राप्त कीं, परन्तु उसमें अपने पिता की सी युद्ध-कुशलता व राजनीतिक चतुरता तथा दादा की सी बुद्धिमत्ता का अभाव था। उसके शासन-काल में हिमालय से लेकर कुमारी अन्तरीप तक मराठे घुड़सवार जय-विजय करते रहे, परन्तु पेशवा ने उन विजयों का उपयोग मराठा साम्राज्य के संगठन के लिए नहीं किया। जीते हुए प्रदेशों का कोई नियमित शासन-प्रबन्ध नहीं किया गया। उत्तर भारत में मराठे केवल लुटेरों के संगठन के रूप में ही प्रगट हुए। यह बात नहीं कि पेशवा बालाजीराव कुशल शासन-प्रबन्धक न था, परन्तु उसने जो शासन सुधार किये, वे दक्षिण में ही किये। इसी से दक्षिण में मराठों का राज्य बहुत काल तक टिका रहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि कहीं पेशवा ने उत्तर भारत में भी उचित प्रबन्ध किया होता, तो भारत में मराठा साम्राज्य का चित्र ही बदल जाता।

बालाजीराव ने एक भूल और की। वह अपने अधीन मराठा सरदारों, होल्कर एवं शिन्दे को अपने वश में न रख सका। वे लोग बहुत समय तक आपस में झगड़ते रहे, जिससे उत्तर भारत में मराठा हितों की बड़ी हानि हुई। पेशवा का भाई राघोबा राजनीति के विचार से निरा मूर्ख निकला, क्योंकि दक्षिण में उसने अपने एक सरदार को दबाने में अंग्रेजों से सहायता माँगने में संकोच नहीं किया तथा उत्तर में जाटों और राजपूतों के साथ बड़ा कठोर व्यवहार किया। पेशवा ने भी अपने सरदारों शिंदे और होल्कर को जाटों अथवा राजपूतों पर अत्याचार करने की छूट दे रखी थी। ऐसी दशा में बाजीराव का 'हिन्दू-पद-पादशाही' का स्वप्न कैसे सच्चा हो सकता था !

पेशवा वालाजीराव को अपनी भूलों का फल पानीपत के युद्ध में चखना पड़ा। वहाँ अब्दाली के विरुद्ध उसे हिन्दू जनता का सहयोग न मिल सका। राजपूत बिल्कुल उदासीन रहे। जाटों ने भी युद्ध में कोई सक्रिय भाग न लिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—बालाजीराव कौन था ? उसके समय में मराठों ने भारत के किन-किन भागों को विजय किया ?

२—राघोबा कौन था ? उसकी विजयों के विषय में क्या जानते हो ?

३—बालाजीराव पेशवा की तुलना बाजीराव और बालाजी विश्वनाथ से करो।

४—बालाजीराव ने क्या भूलें की जिनके कारण वह अपने पिता का 'हिन्दू-पद-पादशाही' का स्वप्न सच्चा न कर सका ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—पानीपत में पराजय

तुम पढ़ चुके हो कि पानीपत के रणक्षेत्र में पहले भी दो बार बड़े महत्वपूर्ण युद्ध हो चुके थे—एक तो बाबर व इब्राहीम लोदी के बीच १५२६ ई० में और दूसरा अकबर व हेमू के बीच १५५६ ई० में। अब १७६१ ई० में अहमदशाह अब्दाली व मराठों के बीच में वह पानीपत का तीसरा युद्ध था।

पानीपत के रणक्षेत्र में अफगान और मराठे १७६० ई० के नवम्बर और दिसम्बर दो महीने तक आमने-सामने पड़े रहे, आपस में केवल छीना-झपटी चलती रही। इस बीच में अब्दाली ने मराठों के लिए दक्षिण से रसद लाने का रास्ता काट दिया। मराठा सेनाओं की रसद समाप्त हो चुकी थी; वह भूखों मरने लगी और अन्त में लाचार होकर लड़ने के लिए निकली। अब्दाली के पास उस समय ६२ हजार सेना थी और मराठा सेनापति भाऊ के पास केवल ४५ हजार। भारत के रुहेले पठान और अवध का नवाब शुजाउद्दौला अब्दाली से जा मिले थे। भाऊ को राजपूतों, जाटों अथवा सिक्खों की कोई मदद नहीं थी।

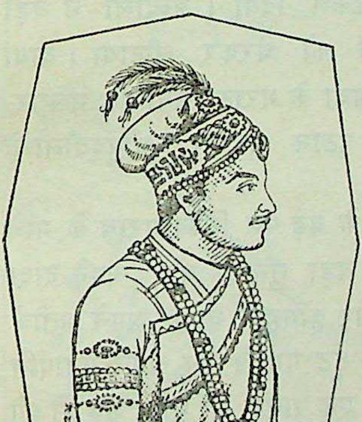

अहमदशाह अब्दाली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रणक्षेत्र में सेनाओं की व्यूह रचना इस प्रकार थी कि मराठों की सेना के बीच के भाग में भाऊ स्वयं था, उसके दायीं ओर मल्हारराव होल्कर तथा बायीं ओर इब्राहीम गार्दी के पैदल बन्दूकची थे। भाऊ ने पैदल एक तरफ और सवार दूसरी तरफ रखे। बन्दूकचियों के पीछे सवार दस्तों को न रखकर उसने बड़ी भूल की, क्योंकि बन्दूकों की मार से शत्रुओं के पीछे हटने पर सवार दस्ते ही दौड़कर उनका नाश कर सकते थे। प्रातःकाल युद्ध आरम्भ हुआ। इब्राहीम गार्दी के बन्दूकचियों ने भारत के रुहेले पठानों को मार भगाया। उनके पीछे कोई सवार रिसाले न थे जो दौड़कर उन शत्रुओं का पीछा करते। मध्य भाग में भाऊ ने अफगान सेना को पीछे की तरफ ढकेल दिया। अब्दाली ने बड़ी कठिनता से अपने भगोड़ों को घेरकर लौटाया। दायां पक्ष लड़ा ही नहीं। वहाँ पेशवा के मराठा सेनापति मल्हार-राव होल्कर और भारतीय पठान सरदार नजीबुद्दौला ने आपस में मेल कर लिया।

दो बजे के बाद पेशवा के बड़े पुत्र विश्वासराव के माथे में गोली लगी। वह युवक बड़ा सुन्दर और अपने दादा बाजीराव के समान वीर और होनहार था। अपने भतीजे की मृत्यु से भाऊ का दिल टूट गया। वह अपने सेनापति के कर्तव्य को भूल गया और एक पागल की भाँति शत्रुओं की सेना पर टूट पड़ा एवं मारा गया। तीन बजे युद्ध समाप्त हो गया। बिना नेता के मराठा सेना की जो गति हुई होगी, उसकी कल्पना सहज में की जा सकती है। जो जिसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

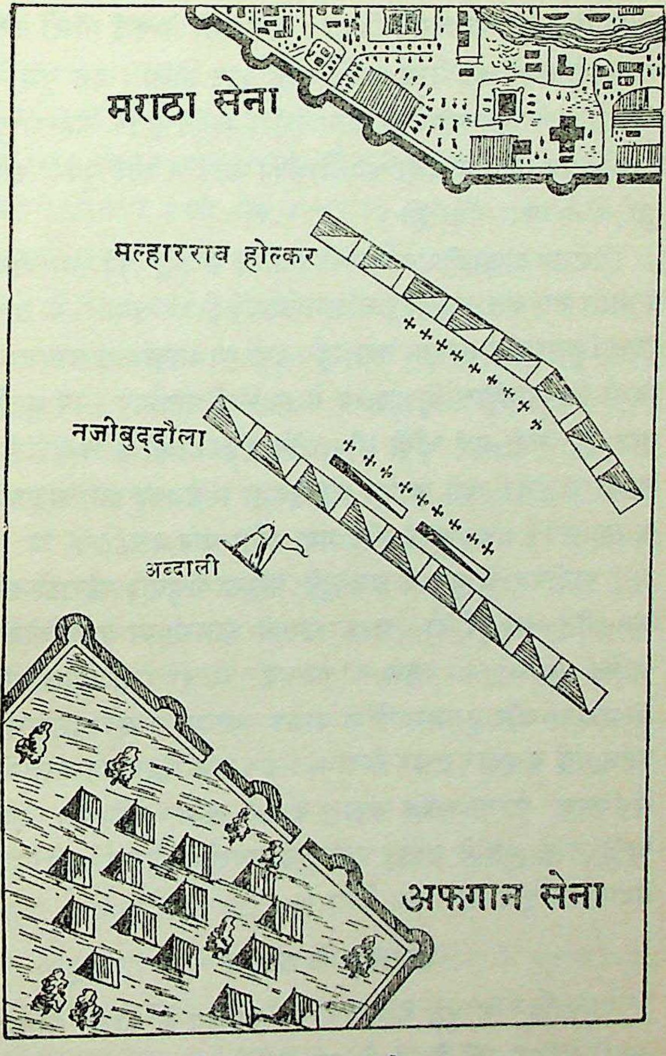

पानीपत का रणक्षेत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समझ में आया, वह उसने किया । अफगानों ने कई मीलों तक मराठा सेनाओं का पीछा करके उन्हें काट डाला। इस युद्ध में मराठा जनशक्ति की बड़ी क्षति हुई। कहते हैं कि महाराष्ट्र में कोई घर ऐसा न बचा था, जिसका कोई न कोई युवक इस युद्ध में न मारा गया हो।

पेशवा बालाजीराव को दो महीनों से युद्ध का समाचार न मिला था, अत: वह स्वयं दक्षिण से मराठों की सेनाओं के साथ रवाना हुआ और मालवा तक पहुँच गया था। वहाँ उसे समाचार मिला कि 'पानीपत के रणक्षेत्र में २ मोती टूट गये, २२ मुहरें नष्ट हो गयीं एवं चाँदी और सोने की कितनी क्षति हुई है, इसका अनुमान नहीं लगाया जा सकता।' पेशवा इस चोट को न सह सका। वह पूना लौट गया और चल बसा।

पानीपत के युद्ध के बड़े बुरे परिणाम हुए। मराठों की जन-क्षीत तो हुई हो, परन्तु उसके फलस्वरूप एक विदेशी शक्ति अंग्रेजों को बढ़ने का अवसर मिल गया। पानीपत में मराठों और मुसलमानों के घातक संग्राम ने एक दूसरे को दुर्बल एवं चकनाचूर कर दिया। अंग्रेज उस समय तक पलाशी में विजय प्राप्त करके बंगाल में पैर जमा चुके थे। अब पानीपत के युद्ध ने उत्तर भारत में उनको आगे बढ़ने के लिए मैदान बिल्कुल साफ कर दिया।

पराजय के कारण

पानीपत के युद्ध में मराठों की पराजय के कारण मालूम करना कठिन नहीं है। तुमने पढ़ा है कि अहमदशाह अब्दाली

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की **सेना सख्या** में भाऊ की सेना से अधिक थी। दूसरे अब्दाली ने मराठों के लिए दक्षिण से आने वाली रसद का मार्ग काट दिया था। अब्दाली स्वयं आसानी से अपनी सेना के लिए दोआब और दिल्ली प्रदेश से रसद पाता रहा। मराठों की सेना और उनके घोड़े व खच्चर भर पेट भोजन के लिए तड़पने लगे। मराठे उत्तर भारत की सहानुभूति पहले ही खो चुके थे, अत: उन्हें वहाँ से यथेष्ट सहायता न मिल सकी।

मराठा छापामार युद्धों के लिए बड़े अभ्यस्त एवं कुशल योद्धा थे। पानीपत के रणक्षेत्र में **लड़ाई** का ढंग दूसरा था। वहाँ आमने-सामने खुलकर लड़ाई हुई जिसमें मराठों की रणकुशलता कुछ काम न आयी। सैनिक **अस्त्र-शस्त्र** की दृष्टि से भी मराठे अफगानों के सामने कमजोर थे। अफगानों के पास सैकड़ों ऐसी बन्दूकें थीं जिन्हें तेज दौड़ाने वाले ऊँटों पर लादकर जहाँ चाहे वहाँ ले जा सकते थे। इब्राहीम गार्दी की अध्यक्षता में मराठों का भारी तोपखाना इतना उपयोगी न था। वह एक स्थान से मार तो करता था, परन्तु सामने के शत्रुओं को नष्ट करने के बाद उसका शीघ्र ही अन्यत्र ले जाना सम्भव न था। अतः अब्दाली की ऊँटों पर लदी बन्दूकों के सामने मराठों का स्थिर तोपखाना युद्ध में उतना उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ।

अनुशासन के विचार से अब्दाली की सेना के मुकाबले में भाऊ की सेना बहुत पोच थी। उसे सुसंगठित रूप से सहयोग के साथ शत्रु का सामना करना नहीं आता था। शारीरिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बल एवं साहस में मराठे अफगानों से अवश्य बढ़े-चढ़े थे, परन्तु युद्ध में विजय केवल शरीर की शक्ति से नहीं होती । अब्दाली ने अपनी सेना में बहुत ही कठोर अनुशासन कायम किया था। इस सम्बन्ध में एक घटना प्रसिद्ध है जिससे प्रकट होगा कि सेना से नियमों का पालन कराने में अब्दाली कैसी कठोरता से काम लेता था । अब्दाली के सैनिकों ने अवध के नवाब के खेमे में सैनिक नियमों को भंग किया । अब्दाली ने उन सैनिकों को पकड़वा कर उसकी नाकें छिदवा दीं और उनमें नकेलें डलवा कर ऊँटों की भाँति उन्हें नवाब के सामने दंड देने के लिए हाजिर करवाया । इधर तो यह हालत थी, उधर मराठा सरदार और सैनिक इतने उद्दंड एवं उच्छृंखल थे कि वे नियमों के पालन को गुलामी समझते थे । युद्ध के बीच में एक मुख्य मराठा सेनापति मल्हारराव होल्कर का शत्रु की सेना के सहायक नजीबुद्दौला से समझौता करके युद्ध में भाग न लेना मराठों की अनुशासनहीनता का प्रमाण है ।

मराठों का सेनापति सदाशिवराव भाऊ अत्यन्त वीर एवं निर्भय सैनिक था, परन्तु उसमें अब्दाली के समान सेना का नेतृत्व करने की **योग्यता** न थी । सेनापति का काम है कि युद्ध में अपनी सेना के सब अंगों की देखभाल और उनमें परस्पर सहयोग व सम्बन्ध बनाये रखे, न कि पागल की तरह युद्ध में अन्धाधुन्ध कूद पड़े । भाऊ ने अपने भतीजे की मृत्यु के बाद अपनी बुद्धि गवाँ दी और सेना को नेताहीन बनाकर उसके भाग्य पर छोड़ दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—पानीपत का तीसरा युद्ध कब हुआ ? युद्ध का वर्णन करो।

२—पानीपत के युद्ध के क्या परिणाम हुए ?

३—पानीपत के तीसरे युद्ध में मराठों की पराजय के क्या कारण थे ? नीचे लिखी बातों पर प्रकाश डालो:—

(क) सेना की संख्या (ख) युद्ध शैली (ग) अस्त्र-शस्त्रों का अन्तर (घ) अनुशासन का अन्तर (ङ) सेनापति की योग्यता।

४—निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो:—

(क) इब्राहीम गार्दी (ख) विश्वासराव (ग) मल्हारराव (घ) नजीबुद्दौला (ङ) सदाशिवराव भाऊ।

पाठ ४—मराठों का फिर उठना

पेशवा माधवराव (१७६१-७२ ई०)

पानीपत में मराठों की पराजय से ऐसा दिखायी देने लगा कि उनकी शक्ति का सूर्य अस्त हो गया, परन्तु बात ऐसी नहीं थी। पानीपत की हार ने मराठा नेताओं को राजनीति और युद्धकला में अनुभवी बनाया। उनके दोष उन्हें सुझाये। उनके अन्दर राष्ट्रीय भावनाओं को फिर जगा दिया। इस समय आवश्यकता थी एक सुयोग्य नेता की।

मराठों के सौभाग्य से उनकी पेशवाई **माधवराव** ने सँभाली (१७६१ ई०)। उस समय उसकी आयु केवल १६ वर्षों की थी और सामने कठिनाइयों के पहाड़ खड़े थे। पानीपत में घोर पराजय हो चुकी थी। महाराष्ट्र की इस विपत्ति में उसके सामन्त और पड़ोसी अपना स्वार्थ साधने की फिक्र में थे। उत्तर भारत में जयपुर के राजा ने विद्रोह कर दिया था और अवध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के नवाब ने बुन्देलखंड पर चढ़ाई कर दी थी। दक्षिण में हैदराबाद के निजाम अली और मैसूर के हैदरअली ने सर उठा रखा था। पेशवा की छोटी उम्र के कारण उसका चाचा राघोबा पेशवा के नाम पर शासन करता था। उसने जयपुर एवं निजाम की सेनाओं को तो मार भगाया, पर अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने झाँसी और इसी प्रकार मैसूर के हैदरअली ने कुछ मराठा प्रदेशों पर अधिकार कर लिया।

राघोबा अपने स्वभाव और व्यवहार के कारण बहुत पहले से ही बदनाम था, अतः माधवराव ने शासन को अपने हाथ में ले लिया। तब राघोबा बिगड़ गया और मराठों के शत्रु निजामअली से जा मिला। माधवराव ने बड़ी नीति से काम लिया। घरेलू लड़ाई से शत्रुओं का फायदा होते देख कर उसने अपने चाचा राघोबा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। परन्तु राघोबा से कोई प्रसन्न न था यह

पेशवा माधवराव

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

तुम ऊपर पढ़ चुके हो, अतः अनेक मराठा सरदारों और नेताओं ने भी राघोबा की भाँति विद्रोह कर दिया। निजामअली ने मौका देखा। उसने राघोबा को घेर लिया और उसकी सेना को भगा दिया। संयोगवश पेशवा माधवराव राघोबा की सेना में बन्दी के रूप में मौजूद था। उसने अत्यन्त वीरतापूर्वक भागती हुई सेना को लौटाया और फिर मराठों की हार को जीत में बदल दिया (१७६३ ई०)। १८ वर्षों के महाराष्ट्र कुमार के इस शौर्य और साहस से महाराष्ट्र में बिजली सी दौड़ गयी और उत्साह एवं आत्मविश्वास की लहर उमड़ पड़ी। अब राघोबा को विवश होकर उसे शासन सौंपना पड़ा। माधवराव पेशवा के शासन से महाराष्ट्र में शक्ति और शान्ति पैदा हो गयी। पेशवा के काम में उसका मुख्य सहायक प्रधान-मन्त्री प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ बालाजी जनार्दन भाउ था जो इतिहास में नाना फ़डनीस के नाम से प्रसिद्ध है।

दक्षिण और मध्य भारत

दक्षिण भारत में मराठों के मुकाबले के लिए दो प्रमुख शक्तियां थीं, पहली मैसूर का हैदरअली और दूसरी हैदराबाद का निजामअली। मध्य भारत में पेशवा माधवराव के सामने मराठा सामन्तों के दमन करने का प्रश्न था।

(१) **हैदरअली से संघर्ष**—घरेलू झगड़ों से छुट्टी पाकर माधवराव पेशवा ने हैदरअली की खबर ली, क्योंकि उसने मराठों के कई इलाकों पर अधिकार कर लिया था। दोनों के बीच कई बार मुठभेड़ हुई। इनमें हैदरअली का पल्ला हलका रहा। एक बार हैदरअली बड़ा परेशान हुआ। माधवराव ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस पर आक्रमण करके उसका कुछ इलाका ले लिया था (१७६७ ई०)। उसी विपत्ति में निजामअली और अंग्रेजों ने भी हैदरअली पर चढ़ाई कर दी। उसने पेशवा की शरण ली और अपने पहले के जीते इलाके लौटा कर भविष्य में पेशवा को नियमपूर्वक कर देना स्वीकार किया।

पेशवा का सहारा पाकर हैदरअली ने बड़ा पराक्रम दिखाया। उसने अंग्रेजों के उस जहाजी बेड़े को नष्ट कर दिया जो उसके राज्य पर आक्रमण करने के लिए आया था। इसके बाद हैदर-अली निजाम के विरुद्ध बढ़ा। निजाम के छक्के छूट गये। वह अंग्रेजों का साथ छोड़कर हैदरअली से मिल गया। जब अंग्रेज मैसूर की ओर बढ़े, तब हैदरअली ने मद्रास पहुँच कर अंग्रेजों को सन्धि करने के लिए विवश किया (१७६९ ई०)। आपस के मेल का ऐसा अच्छा फल हुआ।

पर हैदरअली पेशवा के साथ अपनी बात पर पक्का न रहा। अंग्रेजों से नयी सन्धि के बल पर उसने पेशवा को वार्षिक कर देना बन्द कर दिया। अतः माधवराव ने उसके ऊपर फिर चढ़ाई की (१७६९ ई०), और मार्ग में मैसूर राज्य के अनेक भागों को जीतता हुआ बंगलूर तक जा पहुँचा। हैदरअली ने पुनः हार मान कर सन्धि कर ली (१७७२ ई०)। इस प्रकार **माधवराव की पूर्ण विजय हुई।** मैसूर राज्य छोटा हो गया और हैदरअली की हैसियत मराठों के सामन्तों की सी रह गयी।

(१) **निजामअली से सम्बन्ध**—तुम इस पाठ में पीछे पढ़ चुके हो कि किस प्रकार निजामअली ने पेशवा के चाचा को घेर लिया एवं उसकी सेना को भगा दिया था तथा किस प्रकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
माधवराव ने उसी सेना को लौटा कर निजामअली से लड़ाया और हार को जीत में बदल कर अपने चाचा राघोबा की रक्षा की थी (१७६३ ई०) । इसके तीन साल बाद पेशवा माधवराव और निजामअली में सन्धि हो गयी । इसके बाद निजामअली ने माधवराव का खुलकर विरोध नहीं किया और **दक्षिण भारत पूर्ण रूप से मराठों के वश में आ गया ।**

(३) मराठा समान्तों का दमन—कुछ मराठा सामन्त भी पेशवा के विद्रोही थे । इनमें बराड़ का रघुजी भोंसले मुख्य था । वह निजामअली से मिलकर पेशवा से लड़ने की तैयारी कर रहा था । पेशवा ने बड़ी चतुरता से निजामअली को अपनी ओर मिलाकर उससे भोंसले का साथ छुड़ा दिया ।

पेशवा के सहायक सामन्तों में इन्दौर का मल्हारराव होल्कर और ग्वालियर का महादजी शिन्दे जैसे वीर सेनापति थे । मल्हारराव होल्कर १७६६ ई० में मर गया । उसकी मृत्यु के बाद इन्दौर की राजगद्दी पर उसकी पुत्रवधू **महारानी अहल्याबाई** बैठी । वह अपनी दानशीलता और धर्म-प्रेम के लिए इतिहास में प्रसिद्ध हैं । मल्हारराव होल्कर के मरने के बाद महादजी शिन्दे और अहल्याबाई के सेनापति तुकोजी होल्कर ने पेशवा के लिए **उत्तर भारत के विभिन्न भागों को जीता ।**

उत्तर भारत

माधवराव पेशवा ने मराठों की सेनाएं उत्तर भारत में भी भेजीं (१७६९ ई०) । वहाँ की उस समय स्थिति यह थी कि मुगल सम्राट शाहआलम अंग्रेजों के आश्रय में इलाहाबाद में रहता था । दिल्ली नजाबाबाद के पठान सरदार नजीब के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अधिकार में थी। रुहेलखंड रुहेलों के पास था और अवध शुजाउद्दौला के पास । तुम्हें शायद याद होगा कि पानीपत के रणक्षेत्र में मराठों के खिलाफ शुजाउद्दौला एवं भारत के पठानों ने अफगानिस्तान के पठान अहमदशाह अब्दाली की मदद की थी तथा युद्धभूमि में नजीब और होल्कर ने आपस में समझौता करके लड़ने से हाथ खींच लिया था।

मराठा सेना की बाढ़ को आता देखकर उत्तर की इन शक्तियों ने देखा कि उनमें विरोध करने का दम नहीं है, अतः नजीब मराठों से मिलने आया और अपने पुत्र का हाथ अहल्या-बाई के सेनापति तुकोजी होल्कर के हाथ में देकर बोला कि इस पर उसी प्रकार कृपादृष्टि रखना जिस प्रकार मल्हारराव होल्कर ने मेरे ऊपर रखी थी।

मुगल सम्राट **शाहआलम** ने जब देखा कि उत्तर भारत में मराठों के मुकाबले की शक्ति किसी अन्य देशी राजा या नवाब में नहीं है, तब उसने भी अंग्रेज विदेशियों की रक्षा में रहना छोड़कर अपने देश के मराठों की शरण में रहना पसन्द किया। अतः वह महादजी शिन्दे एवं मराठा सेना के साथ दिल्ली पहुँचा और अपने पूर्वजों की गद्दी पर बैठा (१७७२ ई०)।

महादजी शिन्दे की सेनाओं ने तब मुगल सम्राट के नाम पर रुहेलखंड को जीतकर उस पर अधिकार कर लिया तथा सारे राजपूताना को अपने वश में किया।

इस प्रकार १७६१ ई० में पानीपत की हार के बाद केवल ११ वर्षों के अन्दर माधवराव के प्रताप से **मराठे उत्तर भारत में प्रबल हो गये (१७७२ ई०)।**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अवध का नवाब **शुजाउद्दौला** मराठों से अत्यन्त भयभीत था। उसे भय था कि रुहेलों को परास्त करने के बाद मराठे अवध पर धावा मारेंगे, अतः उसने अंग्रेजों से सहायता माँगी। अंग्रेज खुद भी मुगल सम्राट और मराठों के गठबन्धन से डर गये थे। उन्हें डर था कि शाहआलम ने जो बंगाल, बिहार और उड़ीसा अंग्रेजों के सुपुर्द कर दिये हैं, उन्हें मुगल सम्राट के नाम पर पुनः वापस लेने के लिए मराठे उन पर अवश्य आक्रमण करेंगे। अतः अंग्रेजों ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला की प्रार्थना का स्वागत किया और नवाब के खर्चे पर एक अँग्रेजी सेना अवध की रक्षा के लिए अवध में तैनात कर दी (१७७१ ई०)।

अँग्रेजों के विषय में पेशवा की नीति

दक्षिण एवं उत्तर भारत में सबसे बड़ी सत्ता होने के बाद यह असम्भव था कि पेशवा माधवराव की विजय-नीति से अंग्रेज अछूते बचे रहते, अतः उसने भारत से अंग्रेजों का सफाया करने की योजना बनायी। वह अंग्रेजों की दक्षिण एवं उत्तर भारत में स्थित तीनों प्रेसिडेंसियों—मद्रास, बम्बई और बंगाल—पर एक साथ आक्रमण करना चाहता था जिससे एक प्रेसीडेंसी की अंग्रेजी सेनाएं दूसरी प्रेसीडेंसी को किसी प्रकार की सहायता न दे सकें। इसके लिए माधवराव ने १७७२ ई० में हैदरअली से सन्धि करते समय उसके साथ मिलकर मद्रास पर धावा करने की गुप्त बातचीत भी कर ली थी। अब धावे में अधिक देर नहीं थी कि पेशवा माधवराव परलोक चल बसा (१७७२ ई०)। इस समय उसकी आयु केवल २८ वर्षों की थी। इस अकाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

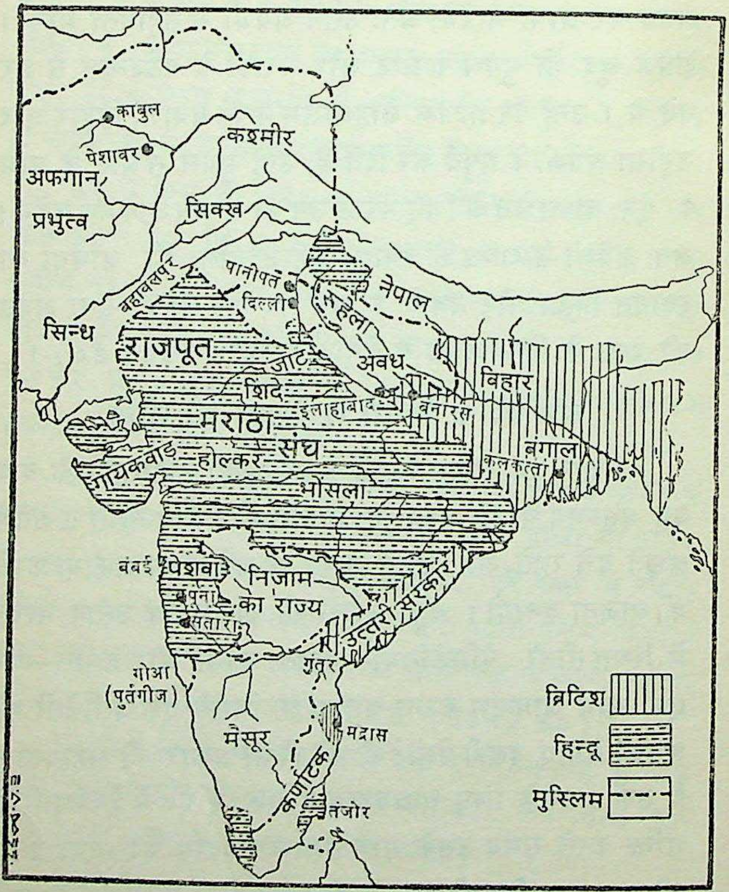

भारतवर्ष (१७७२ ई०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मृत्यु के कारण अंग्रेजों को भारत से बाहर निकालने की योजना पेशवा माधवराव के मन ही मन में रह गयी।

मराठा इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान ग्रांड डफ ने ठीक लिखा है कि पानीपत के युद्ध से मराठा साम्राज्य को ऐसा धक्का न लगा था जैसा कि इस श्रेष्ठ पेशवा माधवराव की असामयिक मृत्यु से लगा।

पेशवा माधवराव अत्यन्त वीर, बुद्धिमान और अद्‌भुत पराक्रमी था। अपनी छोटी सी उम्र में ही उसने मराठों में नया जीवन और नयी उमंगें पैदा कर दीं। वह अपने दादा बालाजीराव की भाँति राजनीति में चतुर एवं दूरदर्शी तथा अपने पिता बालाजीराव के समान शासन प्रबन्ध में कुशल था। उसे युद्धों से जो अवकाश मिला, वह उसने महाराष्ट्र का शासन प्रबन्ध ठीक करने में लगा दिया। उसकी मृत्यु के समय विदेशी अंग्रेजों को छोड़कर अन्य देशी राजा और नवाब सब उसके वश में आ चुके थे। पीछे के मानचित्र में देखने से विदित होगा कि १७७२ ई० में मराठों की तूती इस देश में किस प्रकार बोलती थी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—माधवराव कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

२—माधवराव पेशवा के सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ थीं ?

३—माधवराव पेशवा और राघोबा के सम्बन्धों के विषय में क्या जानते हो ?

४—माधवराव पेशवा और निजामअली के सम्बन्धों का वर्णन करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५—माधवराव पेशवा ने हैदरअली को किस प्रकार वश में किया ? पूरा हाल लिखो ।

६—माधवराव पेशवा के सामन्तों में उसका मुख्य विरोधी कौन था ?

७—माधवराव ने बराड़ के रघुजी भोंसले को किस तरह अपने वंश में किया ?

८—पेशवा के मुख्य सहायक सामन्तों में किस-किस नाम जानते हो ? उनसे माधवराव को क्या सहायता मिली ?

९—माधवराव ने उत्तर भारत में मराठा सेनाएं कब भेजीं ? उस समय उत्तर भारत की क्या दशा थी ?

१०—माधवराव पेशवा ने उत्तर भारत को किस प्रकार वश में किया ?

११—अवध के नवाब शुजाउद्दौला ने मराठों से अपनी रक्षा किस प्रकार की ?

१२—अंग्रेजों के विषय में माधवराव पेशवा की क्या नीति थी ? वह सफल क्यों न हो सकी ?

१३—"पानीपत के युद्ध से मराठा साम्राज्य को ऐसा धक्का न लगा था जैसा कि पेशवा माधवराव की मृत्यु से लगा ।" इस कथन को सिद्ध करो ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तेरहवां अध्याय

बंगाल में अंग्रेजों की जीत

तुम्हें याद होगा कि नादिरशाह के आक्रमण (१७३९ ई०) के बाद बंगाल का सूबेदार स्वतन्त्र हो गया। उसका नाम अलीवर्दीखाँ था। अलीवर्दीखाँ को मराठों से पराजित होकर कैसे सन्धि करनी पड़ी और उड़ीसा एवं १२ लाख रुपया वार्षिक कर के रूप में देना पड़ा, यह भी तुम बालाजीराव के पाठ में पढ़ चुके हो।

अलीवर्दीखाँ के समय में अंग्रेज व्यापारियों के पैर बंगाल में जम गये थे। वह उनकी किलेबन्दी और बेईमानी से असन्तुष्ट था, परन्तु उसने अंग्रेजों से अधिक छेड़ छाड़ न की। वह कहा करता था कि "अंग्रेज मधुमक्खियों के छत्ते के समान हैं। उनसे शहद मिल सकता है परन्तु छत्ते को छेड़ने से मक्खियां काट खायेंगी और उनका काटना घातक हो सकता है।"

अलीवर्दीखाँ की मृत्यु के बाद उसका नाती **सिराजुद्दौला** बंगाल की गद्दी पर बैठा (१७५६ ई०)। उस समय अंग्रेजों ने उसे कोई भेंट, उपहार आदि न देकर नाराज कर दिया था। दूसरे, नवाब ने जब देखा कि उसकी आज्ञा के बिना उसके राज्य में फ्रांसीसी और अंग्रेज अपने-अपने किले बनवा रहे हैं, तब उसे बहुत बुरा लगा। उसने दोनों को आज्ञा दी कि किले बनवाना बन्द कर दें। फ्राँसीसी तो मान गये, परन्तु अंग्रेज नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माने। नवाब को बड़ा गुस्सा आया। उसने कसम खायी कि अगर अंग्रेज अपनी खाइयां पाटना और किले बनाना बन्द न करेंगे तो मैं उनको बंगाल से निकाल बाहर करूँगा।

उधर दक्षिण भारत में देशी राजाओं और नवाबों की घरेलू राजनीति में दखल देकर अंग्रेजों को सफलता मिल चुकी थी। वे बहुत सिर चढ़ गये थे और बंगाल में चुंगी दिये बगैर व्यापार करना चाहते थे। इस प्रकार के व्यापार से राज्य की आय में भारी कमी होते देख नवाब अलीवर्दीखाँ ने भी उसका घोर विरोध किया था। अंग्रेज सिराजुद्दौला के समय में फिर उसी प्रकार का व्यापार करने लगे।

अंग्रेजों को दंड देने के लिए सिराजुद्दौला ने बंगाल में उनकी कासिम बाजार की कोठी पर अधिकार कर लिया और एक बड़ी सेना के साथ कलकत्ते की ओर बढ़ा। वहाँ पहुँच कर अंग्रेजों को किले में घेर लिया। अंग्रेज घबरा गये। उनका गवर्नर और सेनापति निकल भागे। बचे हुए अंग्रेजों ने थोड़े से मुकाबले के बाद आत्मसमर्पण कर दिया। ये बन्दी बनाये गये। उनमें से एक बंदी ने बाद को यह लिख मारा कि नवाब के सैनिकों ने रात को १४६ अंग्रेज बन्दियों को किले की एक छोटी सी अँधेरी कोठरी में बन्द कर दिया था और अगले दिन प्रातःकाल जब उसे खोला गया तो केवल २३ जीते बचे थे, शेष घुटकर मर गये। इसे "ब्लैक होल" के नाम से प्रसिद्ध किया गया, परन्तु इसकी सच्चाई के विषय में गहरा मतभेद है। आजकल की ऐतिहासिक खोजों ने इसे कपोलकल्पित बताया है। विद्वानों का विचार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है कि यह मनगढंत कहानी अंग्रेजों की भावनाओं को उभाड़ने के लिए रची गयी थी ।

जब मद्रास के अंग्रेजों को पराजय के समाचार मिले, तब उनके दिलों में बदले की भावना भड़क उठी । उन्होंने **क्लाइव** की अध्यक्षता में सेना भेजी । उसने वहाँ पहुँच कर कलकत्ता पर अधिकार कर लिया । सिराजुद्दौला को अंग्रेजों से सन्धि करनी पड़ी । अंग्रेजों को अपने इलाके वापस मिले और सिक्के चलाने एवं किले बनाने का अधिकार प्राप्त हुआ । इसके बाद क्लाइव ने फ्राँसीसी बस्ती चन्द्रनगर पर चढ़ाई की और उसे ले लिया । सिराजुद्दौला ने फ्राँसीसियों को मदद न दी, क्योंकि उसने सुना था कि अहमदशाह अब्दाली बंगाल पर आक्रमण करने वाला है । ऐसी दशा में उसने सोचा कि अंग्रेजों को शत्रु बनाना ठीक नहीं है ।

बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला

अब क्लाइव ने नवाब सिराजुद्दौला के विरुद्ध उसके दरबारियों से षड्यन्त्र करना शुरू किया । अलीवर्दीखाँ का बहनोई **मीरजाफर** नवाबी के लालच में क्लाइव से मिल गया । उसने क्लाइव को वचन दिया कि अगर नवाबी मुझको मिल गयी, तो मैं अंग्रेजों को उनकी इच्छानुसार सारी सुविधाएँ दे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूँगा। क्लाइव ने सिराजुद्दौला पर चढ़ाई की। मीरजाफर सिराजुद्दौला का सेनापति था। **पलाशी** में युद्ध हुआ (१७५७ ई०)। युद्ध के बीच में ही मीरजाफर शत्रु से जा मिला। सिराजुद्दौला हारा और मारा गया। क्लाइव ने मीरजाफर को नवाब बनाया। उसने अंग्रेज कर्मचारियों को मालामाल कर दिया और उनके नेता क्लाइव को चौबीस परगना की जागीर दी जिसकी सालाना आमदनी करीब साढ़े चार लाख रुपया थी।

पलाशी के युद्ध ने अंग्रेजों की इज्जत को ऊँची चोटी पर पहुँचा दिया तथा बंगाल की बागडोर ईस्ट इंडिया कम्पनी के हाथों में सौंप दी। बंगाल में नवाबों का बनाना और बिगाड़ना उनके बायें हाथ का खेल हो गया।

पलाशी के युद्ध का भारत के इतिहास में बहुत अधिक महत्व है। प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता यदुनाथ सरकार ने लिखा है कि पलाशी के युद्ध की तारीख २३ जून, १७५७ ई० से भारतीय इतिहास के मध्यकाल का अन्त होकर उसके आधुनिक काल का आरम्भ होता है।

पलाशी के युद्ध ने अंग्रेजों के सामने भारतवासियों की दुर्बलताओं को साफ-साफ प्रकट कर दिया। उन्हें इस बात का पक्का विश्वास हो गया कि वे षड्यन्त्रों और कुचक्रों से भारत में अपने साम्राज्य की स्थापना और उन्नति कर सकते हैं। दूसरे बंगाल-बिहार के प्रान्तों के वश में आने से उन प्रान्तों की सम्पत्ति और गंगा का मार्ग उन्हें क्या मिला कि उनके सामने सारे भारत की विजय का रास्ता खुल गया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजों के बंगाल के दखल करने के फलस्वरूप उन्होंने उसके साधनों से लाभ उठाकर अपने यूरोपीय शत्रु फ्राँसीसियों को दक्षिण भारत से निकाल दिया। बंगाल में पैर जम जाने से अंग्रेजों को उत्तर भारत की विजय में भी बड़ी सहायता मिली। यह बंगाल से ही सम्भव था, क्योंकि बंगाल मराठों और सिक्खों की उठती हुई शक्तियों से दूर था। वहाँ अंग्रेजी कम्पनी चुपचाप अपनी तैयारियाँ कर सकती थी।

पलाशी की विजय ने पहली बार भारत के इतिहास में यह बात साफ कर दी कि एक विदेशी व्यापारी कम्पनी साम्राज्य के एक सूबेदार को परास्त कर सकेगी और मुगल सम्राट मूक बैठा रहेगा। वृद्ध मुगल सम्राट को क्या पता था कि अफगान, सिक्ख और मराठों के अलावा मुगल साम्राज्य को हड़पने के लिए उत्तर भारत में अंग्रेज भी आ घुसे हैं तथा अंग्रेजों के पास कलकत्ते का बन्दरगाह एवं गंगा-यमुना का वह जलमार्ग है जिसके द्वारा अंग्रेज अपनी सेनाएं समुद्र से सीधे दिल्ली पहुँचा सकते हैं। अफगान, सिक्ख और मराठों में से किसी को भी यह सुविधा प्राप्त नहीं थी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—अलीवर्दीखाँ कौन था? उसकी अंग्रेजों के सम्बन्ध में क्या नीति थी।

२—सिराजुद्दौला कौन था ? वह अंग्रेजों से क्यों नाराज हुआ ?

३—'ब्लैक होल' के विषय में क्या जानते हो ?

४—मीरजाफर कौन था ? उसने अपने नवाब के साथ क्या विश्वासघात किया ?

५—पलाशी के युद्ध का वर्णन करो। उसके क्या कारण थे ? और परिणाम क्या हुए ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौदहवाँ अध्याय

भारत में अंग्रेजों और फ्राँसीसियों के युद्ध (१७४०-६१ ई०)

पाठ १—यूरोपीय व्यापारियों का भारत की राजनीति में हस्तक्षेप

तुम जानते हो कि १७वीं शती के आरम्भ होते ही लंदन के अंग्रेज व्यापारियों ने अपनी 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' के द्वारा भारत के साथ व्यापार शुरू कर दिया था। अंग्रेजों के काफी बाद फ्राँस ने भी भारत के साथ व्यापार करने के लिए एक कम्पनी बनायी। इन दोनों कम्पनियों में एक विशेष अन्तर था। अंग्रेजी कम्पनी व्यापारियों ने बनायी थी एवं उसका संचालन व्यापारियों के हाथ में था; परन्तु फ्राँसीसी कम्पनी फ्राँस की सरकार ने बनायी थी और उसका संचालन फ्राँस की सरकार करती थी। १७वीं शती में ये दोनों कम्पनियाँ भारत के साथ व्यापार करती रहीं। यहाँ की राजनीति से उन्हें कुछ विशेष सरोकार न था।

नादिरशाह के आक्रमण से जब मुगल साम्राज्य का पतन हुआ और भारत में अनेक स्वतन्त्र राज्य बनने लगे, तब इन कम्पनियों ने इस देश की दुर्दशा से अपना स्वार्थ साधना शुरू किया। उन्होंने यहाँ के छोटे-छोटे राजाओं व नवाबों के आपसी झगड़ों में हस्तक्षेप करके अपनी सत्ता जमानी शुरू कर दी।

पहला फ्राँसीसी-अंग्रेजी युद्ध (१७४४-४८)

यूरोप में फ्राँस और ब्रिटेन में बड़ी अनबन रहा करती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अतः भारत में भी फ्राँसीसियों और अंग्रेजों में अनबन होना बिलकुल स्वाभाविक था। १७४० ई० में यूरोप में फ्राँस और इंग्लैंड के बीच युद्ध छिड़ गया। फ्राँसीसी सरकार ने अपने कर्मचारियों को आज्ञा भेजी कि अंग्रेजी बस्तियों और व्यापारियों पर हमला करो। फ्राँसीसियों ने मद्रास जीत लिया (१७४६ ई०), परन्तु बाद में यूरोप से दोनों देशों के बीच सन्धि हो जाने के कारण भारत में भी युद्ध बन्द हो गया एवं मद्रास अंग्रेजों को वापस मिल गया (१७४८ ई०)। इस युद्ध में फ्राँसीसियों की जीत हुई थी, अतः उनकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गयी तथा उनके गवर्नर डूप्ले ने बड़े उत्साह के साथ भारत की राजनीति में भाग लेना आरम्भ कर दिया।

डूप्ले

डूप्ले बड़ा बुद्धिमान और हौसले वाला था। भारतीय राजाओं और नवाबों की दुर्बलता वह अच्छी तरह समझता था। अंग्रेजी कम्पनी के साथ युद्ध करते समय उसे अनुभव हो गया था कि पश्चिमी ढंग पर ट्रेनिंग देकर भारतीय सैनिक यूरोपीय सैनिकों के समान रणकुशल बनाये जा सकते हैं। अब वह दक्षिणी भारत में फ्राँसीसी राज्य के स्वप्न देखने लगा। उसने अपने स्वप्न को सच्चा करने के लिए देशी नरेशों के आपसी झगड़ों में भाग लेने और उनकी आड़ से अपना प्रभुत्व जमाने की नीति अपनायी। अंग्रेज पहले इस नीति पर चल चुके थे। अब स्थिति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह हो गयी कि यदि किसी झगड़े में फ्राँसीसी एक पक्ष का समर्थन करते, तो अंग्रज दूसरे पक्ष का। इस प्रकार यूरोप में अंग्रेजों और फ्राँसीसियों में शान्ति होते हुए भी भारत में इन दोनों देशों की कम्पनियों में कोई ७ वर्षों तक युद्ध चलता रहा।

फ्राँसीसी-अंग्रेजी हस्तक्षेप युद्ध (१७४८-५५)

हैदराबाद—जब दक्षिण में निजामुलमुल्क की मृत्यु हुई (१७४८ ई०), तब **हैदराबाद की गद्दी पर कौन बैठे** इस प्रश्न को लेकर झगड़ा शुरू हुआ। निजाम के बड़े लड़के ने वजीर पद पर बने रहना पसन्द किया, अतः हैदराबाद का राज्य उसके दूसरे पुत्र **नासिरजंग** को मिला, परन्तु निजाम के नवासे **मुजफ्फरजंग** ने इसका विरोध किया। दोनों में झगड़ा शुरू हो गया।

कर्नाटक—दक्षिण में एक **दूसरा झगड़ा कर्नाटक (वर्तमान तमिलनाड) में उठा**। वहाँ का नवाब मर गया। उसकी नवाबी को उसके दामाद **चाँदासाहब** ने हथियाना चाहा, पर दक्षिण के सूबेदार निजाम नासिरजंग ने अपनी रुचि के एक व्यक्ति **अनवरुद्दीन** को नवाब बनाया। इससे वहाँ भी झगड़ा शुरू हो गया।

चाँदासाहब ने ऐसी दशा में मुजफ्फरजंग के साथ गठबन्धन करके फ्राँसीसी गवर्नर **डूप्ले से सैनिक सहायता की प्रार्थना की।** डूप्ले तो ऐसे अवसर की घात में था ही, उसने बड़ी खुशी से चाँदासाहब को कर्नाटक का नवाब और मुजफ्फरजंग को हैदराबाद का निजाम बनाने के लिए मदद देना स्वीकार किया। यहीं से फ्राँसीसियों और अंग्रेजों के युद्ध का भी बीज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पड़ गया, क्योंकि डूप्ले को एक पक्ष का समर्थन करते देखकर भला अंग्रेज कैसे चुप बैठ सकते थे !

कर्नाटक में दूसरा युद्ध—चाँदासाहव की और मुजफ्फरजंग की संयुक्त सेना एवं फ्राँसीसी गवर्नर डूप्ले के भेजे हुए सेनादल ने मिलकर अनवरुद्दीन पर आक्रमण किया। अनवरुद्दीन हार गया और मार डाला गया। इस पर अनवर का पुत्र **मुहम्मदअली** अपनी शेष सेना के साथ डर कर तिरुचिरापल्ली भाग गया और वहाँ से उसने अंग्रेजों से **मदद की प्रार्थना की**। अंग्रेजों ने फ्राँसीसियों के विरोध में सहायता देने का वचन दिया।

चाँदासाहव ने कर्नाटक जीत कर तिरुचिरापल्ली पर चढ़ाई की। सुदूर दक्षिण में यह स्थान बड़े मार्के का था। यदि वहाँ फ्राँसीसियों के पिट्ठू का अधिकार हो जाता, तो उस प्रदेश में फ्राँसीसियों के व्यापार की बड़ी वृद्धि हो जाती और अंग्रेजों के व्यापार को बड़ी क्षति पहुँचती।

चाँदासाहब का विरोध एवं मुहम्मदअली की मदद करने के लिए अंग्रेजों और दक्षिण के सूबेदार निजाम नासिरजंग की सेनाएं मिलकर कर्नाटक (तमिलनाड) पहुँचीं। इस संयुक्त शक्ति के सामने न तो चाँदासाहब ठहर सका और न उसका साथी मुजफ्फरजंग। चाँदासाहब ने भागकर पांडिचेरी में फ्राँसीसियों की शरण ली और मुजफ्फरजंग ने अपने मामा नासिरजंग की अधीनता स्वीकार कर ली।

जब फ्राँसीसियों ने कूटनीति से काम लिया। जब डूप्ले ने देखा कि बल-प्रयोग से काम नहीं चलता, तब उसने नासिर-जंग से सन्धि करनी चाही। इसमें वह असफल रहा। इस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर डूप्ले ने नासिरजंग के कुछ पठान सरदारों से मिलकर उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचना शुरू किया। इस प्रकार जब नासिर-जंग मार डाला गया (१७५० ई०), तब डूप्ले ने मुजफ्फरजंग को कैद से छोड़कर पांडिचेरी में ही निजाम बना दिया। उसके बदले में मुजफ्फर ने डूप्ले को ५० हजार पौंड फ्राँसीसी कम्पनी के लिए और ५० हजार पौंड फ्राँसीसी कम्पनी के सैनिकों में बाँटने के लिए दिये। डूप्ले को २ लाख पौंड नकद और १० हजार पौंड सालाना आमदनी की जांगीर मिली।

उस समय (१७५१ ई०) दक्षिण में डूप्ले की शक्ति चरम सीमा को पहुँच गयी। यद्यपि दक्षिण का सूबेदार निजाम मुजफ्फर जंग था, परन्तु असली सत्ता डूप्ले के हाथ में थी। तमिलनाड में भी चाँदासाहब उसकी कृपा से राज्य कर रहा था। केवल तिरुचिरापल्ली उसके प्रभाव से बाहर था। यदि वह भी उसके अधिकार में आ जाता, तो मद्रास प्रदेश में व्यापारिक या राजनीतिक दृष्टि से अंग्रेजों का महत्व जाता रहता।

अब मुजफ्फरजंग फ्राँसीसी सेनापति बूसी की संरक्षता में दक्षिण के सूबेदार की गद्दी पर बैठने के लिए रवाना हुआ परन्तु मार्ग में ही मारा गया। उसके तीन मामा वहाँ मौजूद थे। बूसी ने उनमें से बड़े को सूबेदार बनाकर अपनी यात्रा जारी रक्खी और वह निजाम की स्थिति को सुरक्षित रखने के लिए अगले ७ वर्षों तक हैदराबाद में ठहरा रहा।

तिरुचिरापल्ली पर अधिकार करने के लिए चाँदासाहब ने घेरा डाल दिया। उसका पतन भी अवश्य हो जाता, परंतु अंग्रेजी कम्पनी के एक सेनापति **क्लाइव** की चतुरता ने उसे बचा लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्लाइव ने तिरुचिरापल्ली के उद्धार के लिए चाँदासाहब की राजधानी आरकाट पर चढ़ाई करने का प्रस्ताव किया, क्योंकि उस दशा में निश्चय ही चाँदासाहब अपनी राजधानी की रक्षा के लिए तिरुचिरापल्ली का घेरा उठा देगा। अतः क्लाइव ने भारतीय और अंग्रेजी सम्मिलित सेना को लेकर आर-काट पर धावा बोला और उस पर अधिकार कर लिया। चाँदा-साहब ने अपनी आधी सेना उधर भेजी पर क्लाइव ने ५३ दिनों तक घेरे का डटकर वीरता-पूर्वक सामना किया। वहाँ उसकी मदद के लिए एक छोटी-

क्लाइव

सी मराठा सेना भी पहुँच गयी। तब क्लाइव ने चाँदासाहब की सेना को मार भगाया (१७५१ ई०)। उसके बाद वह तिरुचिरापल्ली में मुहम्मदअली को छुड़ाने चला। तंजौर के राजा ने भी मुहम्मदअली की मदद की। चाँदासाहब ने कुछ चारा न देख कर तंजौर के सेनापति के सामने आत्म-समर्पण कर दिया, वहाँ उसे धोखे से मार डाला गया। अंग्रेजों का अभ्यर्थी मुहम्मदअली कर्नाटक का नवाब बन गया और डूप्ले की सारी आशाएँ धूल में मिल गयीं। अंग्रेजों की दक्षिणी भारत में धाक जम गयी। डूप्ले ने कर्नाटक युद्धों में अपना और कम्पनी का सब रुपया खर्च कर डाला था, किन्तु फिर भी उसे सफलता नहीं मिल सकी। उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन असफलताओं से असन्तुष्ट होकर फ्राँसीसी सरकार ने उसे वापस फ्रांस बुला लिया और उसके स्थान पर दूसरा गवर्नर भेजा। उसने अंग्रेजों से सन्धि कर ली (१७५५ ई०)।

डूप्ले उच्चकोटि का राजनीतिज्ञ एवं सफल शासक था, यद्यपि उसमें सैनिक गुण न थे। फ्राँस के प्रति वह सच्चा देशभक्त था। वह तो अपनी नीति में असफल रहा, परन्तु उसी नीति का पालन करके पीछे क्लाइव ने भारत में अंग्रेजी राज्य का बीज बो दिया।

डूप्ले फ्रांस में अपने मरने के कुछ वर्षों पहले बहुत निर्धन हो गया। फ्रांस की सरकार ने उसकी कोई सहायता नहीं की। इतिहास में डूप्ले एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अपनी मातृ-भूमि की मान-मर्यादा को बढ़ाने के लिए अपना सब कुछ निछावर करके भी अपनी सरकार से अपमान पाया और अपना अन्तिम जीवन दुःख एवं दरिद्रता के साथ बिताया।

अभ्यास के लिए प्रश्न--

१—इंग्लैंड में ईस्ट इंडिया कम्पनी कब और क्यों बनायी गयी ?

२—अंग्रेजी कम्पनी और फ्राँसीसी कम्पनी के संगठन में क्या विशेष अन्तर था ?

३—मुगल साम्राज्य की दुर्बलता से विदेशी कम्पनियों ने क्या लाभ उठाया ?

४—भारत में फ्राँसीसियों और अंग्रेजों में पहला युद्ध कब हुआ ? उसके क्या कारण थे ? इस युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

५—डूप्ले कौन था ? उसका क्या उद्देश्य था ?

६—भारत में सन् १७४८-५५ के फ्राँसीसी-अंग्रेजी संघर्ष को हस्त-क्षेप युद्ध कहना क्यों उचित है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

७—हैदराबाद में क्या झगड़ा था जिसका फ्रांसीसियों और अंग्रेजों ने फायदा उठाया ? इसका क्या परिणाम हुआ ?

८—तमिलनाड में किस झगड़े का लाभ उठाकर फ्रांसीसियों और अंग्रेजों ने उस देश के घरेलू मामले में हस्तक्षेप किया ? इसका क्या परिणाम हुआ ?

९--कर्नाटक (तमिलनाड) में फ्रांसीसियों और अंग्रेजों के दूसरे युद्ध की घटनाओं का वर्णन करो ।

१०—'सन् १७५१ में दक्षिण में डूप्ले की शक्ति चरम सीमा को पहुँच गयी ।' इसको विस्तार के साथ स्पष्ट करो ।

११—क्लाइव कौन था ? उसके विषय में क्या जानते हो ?

१२—आरकाट के घेरे का वर्णन करो । आरकाट की विजय कब हुई ? उसका क्या परिणाम हुआ ?

१३—डूप्ले की नीति और चरित्र का इतिहास में क्या मूल्य है ?

पाठ २—भारत में फ्राँसीसी-अंग्रेजी युद्ध (१७५६-१७६३)

फ्राँसीसियों और अंग्रेजों की १७५५ ई० की सन्धि बहुत दिनों तक नहीं चली, क्योंकि यूरोप में फ्रांस और ब्रिटेन में १७५६ ई० में एक लम्बा युद्ध छिड़ गया जो यूरोप के इतिहास में **सातसाला** युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है ।

फ्राँसीसी सरकार ने **लाली** नामक एक वीर सेनापति को भारत इसलिए भेजा की वह वहाँ अंग्रेजों का व्यापार नष्ट कर दे । उसको आदेश दिया गया था कि वह डूप्ले या बूसी की भाँति भारत म फ्राँसीसी साम्राज्य के विस्तार का प्रयत्न

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

न करे, वरन अंग्रेजों के व्यापार को जहाँ तक सम्भव हो क्षति पहुँचाये।

जिस समय लाली भारत में आया, उस समय तक अंग्रेजों की स्थिति इस देश में काफी दृढ़ हो चुकी थी। बंगाल में नवाबी का पतन हो चुका था और उस धनी प्रान्त की आमदनी और साधन अंग्रेजों के अधिकार में थे। लाली ने भारत में आकर अंग्रेजों के **सेंट डेविड किले** पर आक्रमण किया और आसानी से उस पर अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने मद्रास पर चढ़ाई करनी चाही, परन्तु अन्य अफसरों के विरोध के कारण ऐसा न कर सका। उसी समय फ्राँसीसी जहाजी बेड़ा कुछ समय के लिए वहाँ से फ्राँस के दूसरे टापुओं की ओर चला गया। जब लाली अकेला रह गया, तब उसने हैदराबाद से **बूसी को बुला भेजा** और स्थल की ओर से मद्रास पर आक्रमण किया (१७५८ ई०)।

बूसी के हैदराबाद से चले आने का उपयोग क्लाइव ने बड़ी चतुरता से अंग्रेजों के लाभ के लिए किया। उसने एक अंग्रेजी सेना भेजकर मसुलीपत्तन ले लिया और दकन के सूबेदार सलाबतजंग से वचन ले लिया कि वह भविष्य में फ्राँसीसियों से कोई सम्बन्ध न रखेगा (१७५९ ई०)। इस प्रकार **हैदराबाद से फ्राँसीसी प्रभाव लुप्त हो गया।**

मद्रास का घेरा चल रहा था। वहाँ अंग्रेजी सेना फ्राँसीसियों का वीरतापूर्वक सामना कर रही थी कि एक **अंग्रेजी जहाजी बेड़ा** उसकी मदद को ब्रिटेन से जा पहुँचा। यह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
देखकर लाली निराश हो गया। उसका साहस भंग हो गया और उसने **मद्रास का घेरा उठा लिया।**

लाली की हालत बड़ी शोचनीय हो गयी। उसके अफसरों में मतभेद हो गया। पांडिचेरी की कौंसिल ने उसको कुछ भी मदद नहीं दी। फ्रांस की सरकार से भी सहायता की आशा न थी। इन सब विपत्तियों के आने पर लाली की सेना का अनुशासन ढीला पड़ गया। ऐसे समय में अंग्रेजों ने फ्राँसीसियों पर चढ़ाई की। अंग्रेज सेनापति आयरकूट में **वांडेवाश के युद्ध** में फ्राँसीसी सेनापति बूसी को बुरी तरह परास्त कर उसे बन्दी बना लिया (१७६० ई०)। लड़ाई में हारी हुई अपमानित फ्राँसीसी सेना पांडिचेरी को भाग गयी।

वांडेवाश के युद्ध ने फ्राँसीसियों की प्रतिष्ठा का अन्त कर दिया। रक्षा का कोई उपाय न देखकर लाली ने हैदरअली से मदद की प्रार्थना की। उसने पहले तो उसे सहायता देने का वचन दिया; पर पीछे यह देखकर कि अंग्रेजों के मुकाबले में फ्राँसीसी पक्ष बिलकुल कमजोर है, हैदर ने अपना हाथ खींच लिया।

आयरकूट पांडिचेरी को घेरे पड़ा था। लाली ने पेशवा बालाजीराव से भी मदद की प्रार्थना की। बालाजीराव पेशवा के लिए अच्छा मौका था, परन्तु उसकी सेनाएं उस समय उत्तर भारत में पठानों के साथ उलझी थीं, अतः पेशवा तमिलनाड में फ्राँसीसियों और अंग्रेजों के आपसी युद्ध में हस्तक्षेप करके यूरोपियों की शक्ति को तोड़ देने के स्वर्ण अवसर का उपयोग न कर सका। १७६१ ई० **में आयरकूट ने लाली को** हराकर पांडिचेरी पर अधिकार कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

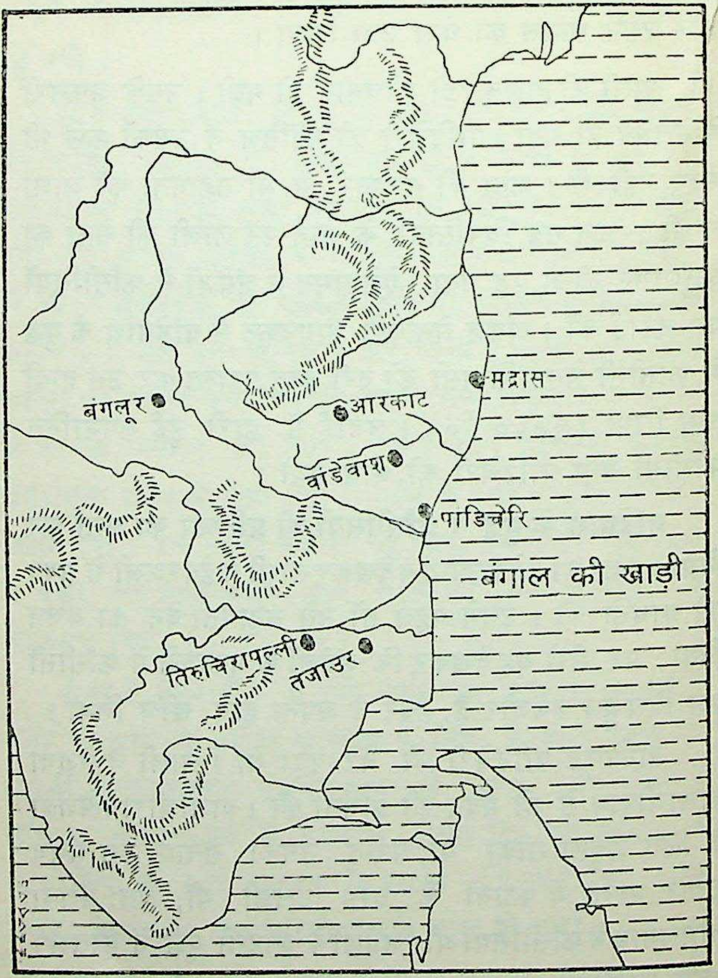

कर्नाटक में फ्रांसीसी-अंग्रेजी युद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ्राँसीसी सेनापति लाली पकड़ा गया और इंग्लैंड भेज दिया गया। वहाँ से जमानत पर वह फ्रांस वापस गया। फ्राँस में उसके साथ बड़ा अन्याय हुआ। वहाँ उसके ऊपर देश-द्रोह का मुकदमा चलाया गया और करीब पाँच वर्षों बाद उसे मौत की सजा दी गयी। इस प्रकार एक देशभक्त को अपने ही देशवासियों के हाथों प्राण गँवाने पड़े।

पांडिचेरी के निकल जाने से भारत में फ्राँसीसी राज्य नष्ट हो गया, क्योंकि उनकी दूसरी बस्तियाँ पहले ही उनके हाथ से निकल गयी थीं। पांडिचेरी उनके फ्राँसीसी राज्य की आधार-शिला थी। उसके निकल जाने से उनका सारा बल-वैभव चकनाचूर हो गया। इसके विपरीत अब अंग्रेज दक्षिण भारत में भी एक प्रमुख शक्ति बन गये। बंगाल में वह पहले ही प्रभुता पा चुके थे। दक्षिण में अंग्रेजों का कृपापात्र मुहम्मद-अली कर्नाटक (तमिलनाड) का नवाब मान लिया गया। हैदरा-बाद का निजाम अंग्रेजों के प्रभाव में आ गया। उत्तरी सरकार में भी अंग्रेजों की शक्ति की वृद्धि हो गयी।

यूरोप में सातसाला युद्ध जब समाप्त हुआ (१७६३ ई०), तब अंग्रेजी-फ्राँसीसी सन्धि के अनुसार पांडिचेरी फ्राँसीसियों को वापस कर दिया गया, इस शर्त पर कि फ्राँसीसी उसकी किलाबन्दी तोड़ देंगे तथा सैनिकों की संख्या घटा देंगे।

जलशक्ति की महत्ता–अंग्रेजी कम्पनी की इस प्रभुता का मुख्य कारण सातसाला युद्ध में ब्रिटेन की समुद्रों के ऊपर बढ़ी हुई शक्ति थी : यह युद्ध यद्यपि फ्रांस और इंग्लैंड के बीच यूरोप में छिड़ा था, पर वह संसार के दूसरे देशों जैसे अमेरिका,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत तथा उपनिवेशों में भी फैल गया। ऐसी स्थिति में स्वाभाविक था कि इंग्लैंड और फ्रांस में से जिस देश की प्रभुता समुद्रों पर होती उसी की जीत निश्चित थी। समुद्रों पर इंग्लैंड ने फ्रांस को हरा दिया। अतः अंग्रेजों की समुद्र-विजय ने भारत में फ्राँसीसियों के भाग्य का निपटारा कर दिया। जब तक समुद्र का मार्ग अंग्रेजों के लिए खुला था, तब तक न तो डूप्ले और न लाली मद्रास पर घेरा ढालने से लाभ उठा सकते थे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत में सन् १७५६ में फ्राँसीसियों और अंग्रेजों के बीच युद्ध छिड़ने का क्या कारण था ?

२—फ्राँसीसी सरकार ने लाली को भारत किसलिए भेजा था ?

३—जिस समय लाली भारत में आया, उस समय यहाँ अंग्रेजों की स्थिति क्या थी ?

४—लाली ने बूसी को हैदराबाद से क्यों वापस बुला लिया ? इसका क्या परिणाम हुआ ?

५—लाली मद्रास की विजय क्यों नहीं प्राप्त कर सका ?

६—वांडेवाश का युद्ध कब और किनके बीच हुआ ? इसका क्या परिणाम हुआ ?

७—लाली ने पांडिचेरी की रक्षा के लिए क्या प्रयत्न किये ?

८—हैदरअली या पेशवा बालाजीराव ने लाली को सहायता क्यों नहीं दी ?

९—लाली का अन्त किस प्रकार हुआ ?

१०—पांडिचेरी में फ्राँसीसियों की पराजय (१७६१ ई०) का क्या परिणाम हुआ ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—फ्राँसीसियों की विफलता के कारण

तुमने पिछले दो पाठों में भारत में अंग्रेजों और फ्राँसीसियों की प्रतिस्पर्धा का इतिहास पढ़ा है जिसमें अंग्रेजों की जीत और फ्राँसीसियों की हार हुई। इस प्रसंग में आरम्भ से अन्त तक दोनों यूरोपीय कम्पनियों की तुलना करके देखना चाहिए कि फ्राँसीसियों की विफलता के कौन-कौन से मुख्य कारण थे।

(१) **फ्राँसीसी कम्पनी का दोषपूर्ण संगठन**—तुम पढ़ चुके हो कि अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी एक प्राइवेट कम्पनी थी, परन्तु फ्राँसीसी कम्पनी एक सरकारी कम्पनी थी और वहाँ की जनता उसकी तरफ से उदासीन थी। अतः उसका काम तभी तक उत्तम रीति से चल सकता था, जब तक फ्रांस की सरकार से उसे यथेष्ट सहायता मिलती रहती। दुर्भाग्य से उन दिनों फ्रांस का राजा लुई पंद्रहवां बड़ा अयोग्य था। उसकी नीति बड़ी ओछी थी, इसी कारण एक प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता लायल ने लिखा है कि भारत फ्राँसीसियों के हाथ से इसलिए नहीं निकला कि डूप्ले वापस बुला लिया गया था फ्राँसीसी जहाज भारत के तट से चले गये, वरन लुई की संकीर्ण नीति और अयोग्य मन्त्रियों की सम्मति के कारण फ्रांस को सात साल युद्ध में अपनी बस्तियां खोनी पड़ीं। इसके विपरीत इंग्लैंड का शासन अपने काल के एक अत्यन्त सुयोग्य युद्ध-मन्त्री पिट के हाथ में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। वह एवं इंग्लैंड के लोग अपनी ईस्ट इंडिया कम्पनी के विषय में बड़ी रुचि लेते थे और उसे हर प्रकार से सहायता देने को तैयार रहते थे।

(२) अफसरों के साथ दुर्व्यवहार—फ्राँसीसी सरकार ने अपने देशभक्त अफसरों—डूप्ले एवं लाली के साथ उनके घर लौटने पर जो बुरा व्यवहार किया, उसका प्रभाव आगे आने वाले अफसरों पर बहुत बुरा पड़ा। उनकी देश-सेवा का उत्साह मन्द हो गया। इसके विपरीत अंग्रेज गवर्नरों को घर लौटने पर आदर-सम्मान एवं पुरस्कार मिलता था, जिससे उनके पीछे आने वालों का उत्साह बढ़ता था। इसका उदाहरण फ्रांस सरकार की डूप्ले और लाली के साथ क्रूरता तथा ब्रिटेन सरकार की क्लाइव और वारेन हेस्टिंग्ज के साथ उदारता प्रसिद्ध है। इसका वर्णन अगली पुस्तक में किया जायेगा।

(३) राज्य के विस्तार के लिए आधार की कमी—अंग्रेजों ने बंगाल लेकर अपने राज्य के विस्तार के लिए एक सुरक्षित आधार बना लिया। बंगाल का धन और जन सब अंग्रेजों को मिल गया। उसी के सहारे उन्होंने अपने अधिकतर युद्धों को जीता और भारत में ब्रिटिश साम्राज्य कायम किया। फ्राँसीसियों के लिए अपना आधार पाँडिचेरी में बनाकर भारत में राज्य कायम करना असम्भव था। इस विषय में प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता लायल ने लिखा है कि फ्राँसीसियों की विफलता का कारण बताते हुए डूप्ले, लाली या दूसरे अफसरों को दोष देना बेकार है। महान सिकन्दर और नैपोलियन भी पांडिचेरी को आधार बनाकर उन अंग्रेजों का मुकाबला नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर सकते थे जिनके अधिकार में बंगाल एवं गंगा का मार्ग था और जो समुद्रों के मालिक थे ।

(४) **अंग्रेजों की जलशक्ति** का वर्णन पीछे किया जा चुका है। अपने शक्तिशाली जहाजी बेड़े से अंग्रेजों को व्यापार और युद्ध दोनों में बड़ी सहायता मिली । फ्राँसीसियों की समुद्री ताकत अंग्रेजों की ताकत से कम थी । अतः फ्राँसीसी न तो अंग्रेजी व्यापार को हानि पहुँचा सके और न उनसे समुद्र पर युद्ध में सफल हो सके ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत में अंग्रेजों के मुकाबले फ्राँसीसियों की हार के लिए फ्राँसीसी सरकार कहाँ तक उत्तरदायी है ?

२—अंग्रेजों को अपनी विजय में जलशक्ति से क्या सहायता मिली ?

३—भारत में फ्राँसीसियों की विफलता के नीचे लिखे कारण बताये जाते हैं। इनकी विस्तार से व्याख्या करो—

(क) फ्राँसीसी कम्पनी का दोषपूर्ण संगठन ।

(ख) अफसरों के साथ दुर्व्यवहार ।

(ग) विस्तार के लिए आधार की कमी ।

(घ) अंग्रेजों की जलशक्ति ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खंड २—नागरिक जीवन

पहला अध्याय

भारत संघ के राज्य

पाठ १—राज्यों में उत्तर प्रदेश का स्थान

भारत संघ के राजनीतिक भागों को **राज्य एवं केन्द्र-शासित क्षेत्र** का नाम दिया गया है। इनमें कई के नाम तुमने सुने होंगे। इस पाठ में दिये हुए भारत के राजनीतिक मान-चित्र में राज्यों और क्षेत्रों की सीमाएं और उनके नाम दिखाये गये हैं। नक्शे में देखो उत्तर प्रदेश कहाँ है। उसकी सीमाएं किन राज्यों या क्षेत्रों से मिली हैं ?

उत्तर प्रदेश के उत्तर में तुम नेपाल देखते हो। यह भारत संघ का भाग नहीं है। पूर्व, दक्षिण और पश्चिम में क्रमशः बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान और पंजाब राज्य हैं तथा दिल्ली और हिमाचल प्रदेश नाम के केन्द्र-शासित क्षेत्र हैं। इन सब भागों में भारत का एक जैसा सिक्का चलता है, पर शासन के ढंग के थोड़े से भेद के कारण इनकी हैसियत एक जैसी नहीं है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

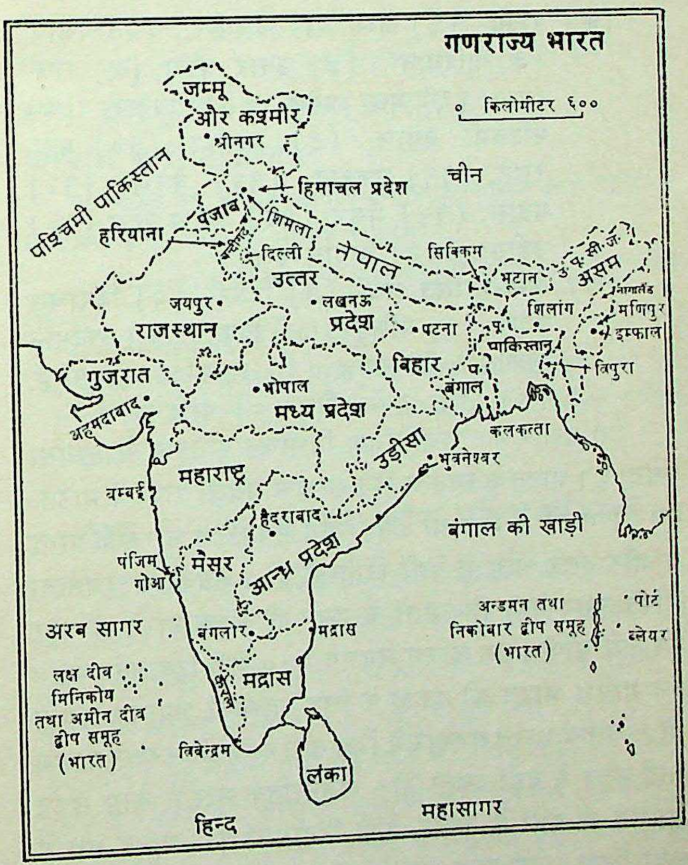

वर्तमान भारत

External bounday of India on the map agrees with the Master Copy certified by the Survey of India.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत संघ के सोलह राज्यों तथा सात केन्द्र-शासित क्षेत्रों के नाम नीचे लिखे हैं :—

(क) **राज्य**—(१) जम्मू और कश्मीर, (२) पंजाब, (३) हरियाना, (४) उत्तर प्रदेश, (५) राजस्थान, (६) मध्य प्रदेश, (७) बिहार, (८) पश्चिमी बंगाल, (९) आसाम, (१०) महाराष्ट्र, (११) गुजरात, (१२) केरल, (१३) मद्रास, (१४) मैसूर, (१५) आन्ध्र प्रदेश, (१६) उड़ीसा, (१७) नागालैण्ड।

(ख) **केन्द्र-शासित क्षेत्र**—(१) दिल्ली, (२) हिमाचल प्रदेश, (३) मणिपुर, (४) त्रिपुरा, (५) अन्दमान निकोबार द्वीप समूह, (६) लक्कदिव द्वीपसमूह, (७) गोआ, दमन, दीयु (८) पांडिचेरी।

इस प्रकार का राजनीतिक विभाजन इतिहास से सम्बन्ध रखता है। भारत के स्वतन्त्र होने के पहले अंग्रेजी राज्य में भारतवर्ष दो भागों में बँटा था। एक भाग में ब्रिटिश भारत के प्रान्त थे और दूसरे भाग में देशी रियासतें थीं। अंग्रेजों ने राजसत्ता सौंपते समय देशी रियासतों के ऊपर की सत्ता भारत सरकार को नहीं सौंपी। इस कारण लगभग ६०० देशी रियासतें स्वतन्त्र बन गयीं। भारत की एकता के लिए यह कैसी भयानक स्थिति थी। स्वतन्त्र भारत सरकार में रियासतों के मन्त्री सरदार बल्लभ भाई पटेल ने बड़ी दृढ़ता और राजनीतिक सूझ से काम लेकर लगभग दो वर्षों के अन्दर देशी रियासतों को भारत संघ में खपा लिया। उस समय कश्मीर, मैसूर और हैदराबाद की बड़ी रियासतों को राज्यों का रूप देकर उनके शासकों को राजप्रमुख बना दिया। १ नवम्बर, १९५६ ई० से राजप्रमुख-पद

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

का अन्त कर दिया गया। हैदराबाद राज्य का कुछ भाग आन्ध्र प्रदेश में, कुछ मैसूर में और कुछ भाग महाराष्ट्र में मिला दिया गया। अब सब राज्यों की हैसियत समान हो गयी। उनके शासक **राज्यपाल** कहलाते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत संघ का एक मानचित्र अक्स करो तथा उसमें राज्यों के नाम और उत्तर प्रदेश की सीमाएं दिखाओ।

२—उत्तर प्रदेश की सीमा पर कौन-कौन से राज्य या केन्द्र-शासित क्षेत्र हैं ?

३—रिक्त स्थानों की पूर्ति करो:—

वर्तमान भारत में सत्रह राज्य और सात केन्द्र-शासित क्षेत्र है। राज्यों के नाम ये हैं.......................................। केन्द्र शासित क्षेत्र के नाम ये हैं.....................।

पाठ २—राज्यपाल और मन्त्रि-परिषद

इस समय उत्तर प्रदेश के प्रधान शासक या राज्यपाल श्री गोपाल रेड्डी हैं। राज्यपाल की नियुक्ति भारत संघ का राष्ट्रपति करता है। इस पद की प्राप्ति के लिए दो योग्यताएं आवश्यक हैं—(१) वह भारत का नागरिक हो और (२) वह पैंतीस वर्षों की आयु पूरी कर चुका हो। अतः तुममें से कोई भी बालक भविष्य में राज्यपाल के पद को प्राप्त करने की आशा कर सकता है। परन्तु इस ऊँची आशा को अपने मन में लाने के साथ अपने चरित्र के विकास और देशभक्ति का व्रत लेना होगा। आज जो सज्जन इस पद पर बैठे हैं, वह उच्चकोटि के विद्वान और तपस्वी देशभक्त हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शपथ—राज्यपाल का पद ग्रहण करने के पहले उसे जो **शपथ** लेनी पड़ती है, उसके ये शब्द हैं—

मैं, ...अमुक, ...शपथ लेता हूँ कि मैं राज्यपाल के पद का कार्य पालन करूँगा तथा अपनी पूरी योग्यता से संविधान और विधि का परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण करूँगा और अपने राज्य की जनता की सेवा और कल्याण में निरत रहूँगा।

वेतन—राज्यपाल को प्रति मास ५,५०० रु० वेतन और रहने के लिए बिना किराए का राजकीय भवन मिलता है। इसके सिवा उसे काफी भत्ता भी मिलता है।

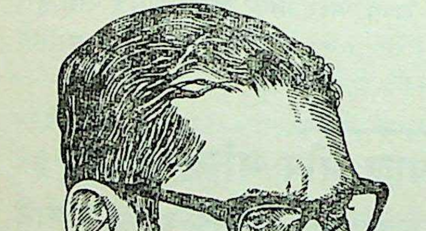

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री गोपाल रेड्डी

अधिकार और कर्तव्य राज्यपाल अपने राज्य का प्रधान शासक है। राज्य का शासन उसी के नाम से चलता है, परन्तु **शासन** में वह मनमाना दखल नहीं दे सकता। वह एक तरह से राज्य का प्रतीक अर्थात चिह्न है। वास्तव में उसके अधिकार बहुत सीमित हैं। असली कर्ता-धर्ता राज्य की मन्त्रि-परिषद है। शासन के सम्बन्ध में नीति विधान-मंडल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अर्थात जनता के प्रतिनिधियों की सभाओं में तय की जाती है और शासन चलाने का भार मन्त्रियों पर है।

इस प्रकार नियमों में बँधे रहने पर भी संविधान में राज्यपाल को कुछ स्पष्ट अधिकार और कर्तव्य सौंपे गये हैं। जब राज्य में नयी मन्त्रि-परिषद बनने को होती है, तो वही बहुसंख्या वाले दल के नेता को राज्य का मुख्य मन्त्री बनाता है और फिर उसकी सम्मति से दूसरे मन्त्रियों को नियुक्त करता है। विशेष दशाओं में वह मन्त्रियों को उनके पदों से हटा भी सकता है।

उत्तर प्रदेश के विधान-मंडल में दो सदन हैं—

(१) **विधान-सभा** जिसमें चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं तथा (२) **विधान-परिषद** जिसमें विशेष योग्यता वाले सदस्य होते हैं। राज्यपाल विधान-सभा व विधान-परिषद को बुलाता है। यदि कभी दोनों में मतभेद हो जाता है तो राज्यपाल दोनों का सम्मिलित अधिवेशन कराता है। कोई बिल उसकी स्वीकृति के बिना कानून नहीं बन सकता। उसे विधान-मंडल को सम्बोधित करने और उसमें अपना संदेश भेजने का अधिकार है। वह अपराधियों को क्षमा प्रदान कर सकता है।

यदि किसी समय कानून बनाना सम्भव न हो, तो वह अपने मन्त्रियों की सम्मति से अध्यादेश अर्थात विशेष आज्ञा (आर्डिनेंस) जारी कर सकता है।

मन्त्रि-परिषद

योग्यता—राज्य की कार्यपालिका अर्थात राज्य के नियमों को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्यान्वित कराने वालों में सबसे महत्वपूर्ण मन्त्रि-परिषद है। मन्त्रियों को अन्य किसी विशेष योग्यता की आवश्यकता नहीं; उन्हें राज्य के दोनों सदनों, विधान-सभा व विधान-परिषद, में से किसी एक का सदस्य होना चाहिए। वे लोग बहुसंख्यक दल के प्रभावशाली व्यक्ति होते हैं।

मुख्य-मन्त्री—मन्त्रि-परिषद में मुख्य मन्त्री बहुसंख्यक दल का नेता होता है।

मुख्य मन्त्री मन्त्रि-परिषद की बैठकों में सभापति रहता है और शासन के सब विभागों में समन्वय या मेल रखता है। उसका कर्तव्य यह है कि वह राज्यपाल को मन्त्रि-परिषद के फैसलों और प्रस्तावों की सूचना देता रहे। यदि किसी मन्त्री ने बिना मन्त्रि-परिषद के सामने रखे अपने विभाग के बारे में कोई निश्चय कर लिया है, तो राज्यपाल के कहने पर मुख्य मन्त्री उसे मन्त्रि-परिषद के सामने रखेगा।

मन्त्रि-परिषद के सब मन्त्री मिलकर राज्य की नीति बनाते हैं और वे लोग सामूहिक रूप से विधान-सभा के सामने उत्तरदाता हैं। विधान-मंडल की इच्छा के बिना वे अपने पद पर नहीं ठहर सकते। विभिन्न मन्त्री साधारणतः अपने-अपने विभाग के विषय के प्रस्ताव विधान-मंडल में पेश करते हैं और प्रश्नों व आक्षेपों के उत्तर देते हैं।

हरएक मन्त्री एक या अधिक विभागों का अध्यक्ष होता है।

शपथ—राज्य के हर एक मन्त्री को अपना पद सँभालने के पहले शपथ लेनी होती है जिसके शब्द नीचे लिखे हैं:—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैं ……………………अमुक ईश्वर की शपथ लेता हूँ / सत्य निष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान के प्रति श्रद्धा और निष्ठा रखूंगा, मैं भारत की प्रभुता और अखण्डता को अक्षुण्ण रखूंगा तथा मैं ……………राज्य के मन्त्री के रूप में अपने कर्तव्य का श्रद्धापूर्वक और शुद्ध अंत:करण से निर्वहन करूँगा; तथा भय या पक्षपात, अनुराग या द्वेष के बिना मैं सब प्रकार के लोगों के प्रति संविधान के और विधि के अनुसार न्याय करूँगा।

मन्त्रियों को उनके काम में सहायता के लिए **उपमन्त्री व संसद सचिव** (पार्लामेंटरी सेक्रेटरी) होते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—राज्यपाल के अधिकार और कर्तव्य क्या हैं ?

२—मुख्य मन्त्री का राज्य के शासन में क्या महत्व है ?

३—राज्य-मन्त्रियों की शपथ की व्याख्या करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—विधान-मंडल

तुम पढ़ चुके हो कि उत्तर प्रदेश के विधान-मंडल में दो सदन हैं :—

(१) विधान-सभा, (२) विधान-परिषद ।

(१) विधान-सभा

रचना—विधान-सभा के सदस्यों का चुनाव जनता करती है । वह व्यक्ति जिसकी उम्र २१ वर्षों की हो चुकी है और जिसका नाम निर्वाचकों की सूची में लिखा है, वोट देने का अधिकार रखता है । साधारण रूप से पागल, अपराधी और दिवालिये के नाम सूची में नहीं रक्खे जाते ।

चुनाव की सुविधा के लिए राज्य को जनगणना के अनुसार कई क्षेत्रों में बाँट दिया जाता है । उन क्षेत्रों के रहने वाले नियत तिथि पर एक या अधिक प्रतिनिधियों का चुनाव करते हैं । चुनने का तरीका वही है जो नगरपालिका के चुनाव में बरता जाता है । इसका वर्णन तुम पिछली कक्षा में पढ़ चुके हो ।

योग्यताएं—राज्य की विधान-सभा की सदस्यता के लिए खड़े होने वाले व्यक्ति के लिए आवश्यक है कि (१) वह भारत का नागरिक हो, (२) उसकी आयु २५ वर्षों से कम न हो तथा (३) वह उन सब शर्तों को पूरा करता हो जो विधान-मंडल में निर्धारित की गयी हों ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि किसी व्यक्ति में नीचे लिखी कोई अयोग्यता होगी तो वह सदस्यता के लिए नहीं खड़ा हो सकता:—

(१) यदि वह भारत सरकार या किसी राज्य-सरकार के अधीन लाभ के पद पर नियत है।

(२) यदि वह पागल या दिवालिया है।

(३) यदि वह विधान-मंडल के किसी कानून से अयोग्य ठहरा दिया गया है।

पदाधिकारी—विधान-सभा अपने सदस्यों में से एक **अध्यक्ष** और एक **उपाध्यक्ष** चुनती है।

विधान-सभा के काम की अवधि पहली बैठक की तारीख से ५ वर्षों की होती है।

उत्तर प्रदेश की विधान-सभा में सदस्यों की संख्या ४२६ है।

(२) विधान-परिषद

रचना—विधान-परिषद स्थायी होती है अर्थात उसका कभी विघटन नहीं होता। विधान-परिषद के सदस्यों की संख्या विधान-सभा के सदस्यों की संख्या की चौथाई हो सकती है। सदस्यों के काम की अवधि ६ वर्षों की है। एक तिहाई सदस्य प्रति तीसरे वर्ष स्थान खाली कर देते हैं और उन स्थानों के लिए नये सदस्य चुन लिये जाते हैं।

विधान-परिषद के चुनाव के तरीके में विधान-सभा के चुनाव से भेद है। विधान-परिषद के सदस्यों की कुल संख्या का $\frac{१}{३}$ नगरपालिका, जिला-परिषद आदि स्थानीय संस्थाओं से; $\frac{१}{३}$ विधान-सभा से; $\frac{१}{१२}$ विश्वविद्यालय के तीन वर्षों के या

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिक पुराने स्नातकों से; $\frac{१}{१२}$ माध्यमिक स्कूलों और कालेजों के तीन वर्षों के या अधिक पुराने अध्यापकों से चुने जाते हैं। बाकी सदस्यों का राज्यपाल नाम-निर्देशित करता है। यह सदस्य ऐसे होते हैं जिन्हें साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारी आन्दोलन और सामाजिक सेवा का विशेष ज्ञान और अनुभव हो।

उत्तर प्रदेश की विधान-परिषद में सदस्यों की संख्या ७२ है।

योग्यताएं—विधान-परिषद का सदस्य चुने जाने के लिए किसी व्यक्ति को (१) भारत का नागरिक होना चाहिए, (२) उसकी आयु ३० वर्षों से कम नहीं होनी चाहिए और (३) उसे वे शर्तें पूरी करनी चाहिए जिन्हें विधान-मंडल ने नियत किया हो। विधान-परिषद अपना सभापति स्वयं चुनती है।

शपथ—विधान-सभा या विधान-परिषद का हरएक सदस्य अपना स्थान लेने के पहले नीचे लिखी शपथ लेता है :—

मैं......................अमुक......................जो विधान-सभा (या विधान-परिषद) के लिए सदस्य निर्वाचित (या नाम-निर्देशित) हुआ हूँ, $\frac{\text{ईश्वर की शपथ लेता हूँ}}{\text{सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूँ}}$ कि मैं विधि द्वारा स्थापित भारत के संविधान के प्रति श्रद्धा और निष्ठा रखूंगा, मैं भारत की प्रभुता और अखंडता अक्षुण्ण रखूंगा तथा जिस पद को मैं ग्रहण करने वाला हूँ, उसके कर्तव्यों का श्रद्धापूर्वक निर्वहन करूँगा।

गणपूर्ति (कोरम)—विधान-मंडल के हर सदन के अधिवेशन के लिए सब सदस्यों की संख्या के दसवें भाग का उपस्थित होना आवश्यक है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सदस्यों का विशेष अधिकार—सभी सदस्यों को विधान-मंडल में अपने विचार प्रकट करने या मत देने की पूरी स्वतन्त्रता है। उन विचारों या मतों के विरुद्ध किसी न्यायालय में कोई कार्रवाई नहीं चल सकती।

विधान-मंडल के सदस्यों को वेतन व भत्ते भी मिलते हैं, जिन्हें विधान-मंडल कानून बनाकर स्वीकार करता है।

दोनों सदनों का सम्बन्ध—ध्यान से देखा जाय तो विधान-परिषद की हस्ती विधान-सभा की इच्छा पर निर्भर है। यदि विधान-सभा चाहे, तो अपने सदस्यों की पूर्ण संख्या के दो तिहाई बहुमत से विधान-परिषद को समाप्त कर सकती है।

राज्य की विधान-परिषद का आर्थिक मामलों में कोई हाथ नहीं होता। बाकी मामले दोनों सदनों की सम्मति से तय होते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—विधान-सभा और विधान-परिषद के अधिकारों और कार्यों में क्या अन्तर है?

२—विधान-सभा और विधान-परिषद के सदस्य कौन लोग हो सकते हैं?

३—विधान-सभा कैसे बनती है और विधान-परिषद किस प्रकार?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—विधान मंडल के कार्य

विधान-मंडल के मुख्य रूप से तीन कार्य हैं:—

(१) कानून बनाना, (२) आय-व्यय पर नियन्त्रण, (३) मन्त्रि-परिषद पर अंकुश।

कानून बनाना

विधेयक (बिल) दो तरह के होते हैं—(१) साधारण विधेयक, (२) धन-विधेयक। धन विधेयक के सिवा दूसरे साधारण-विधेयक किसी सदन में आरम्भ हो सकते हैं।

धन-विधेयक पहले विधान-सभा में पेश किये जाते हैं। जब विधान-सभा में कोई धन-विधेयक पास हो जाता है, तब उसे विधान-परिषद में संशोधन के लिए भेज दिया जाता है। उसे अपनी सिफारिश भेजने के लिए १४ दिनों की अवधि दी जाती है। विधान-सभा को अधिकार है कि परिषद की सिफारिश को माने अथवा न माने। यदि परिषद १४ दिनों के भीतर सभा को धन-विधेयक नहीं लौटाती, तो वह दोनों सदनों से पास हुआ मान लिया जाता है।

साधारण विधेयक के बारे में भी विधान-परिषद के अधिकार कम हैं। यदि विधान-सभा कोई विधेयक पास करके विधान-परिषद के पास भेजे और विधान-परिषद (क) उसे स्वीकार न करे या (ख) ऐसे संशोधन करे जो विधान-सभा की इच्छा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के विरुद्ध हो या (ग) उसमें पेश विधेयक को ३ महीने से अधिक हो गये हों, तो विधान-सभा उसे अपनी इच्छानुसार पास कर सकती है, पर उसे फिर से विधान परिषद के पास भेजना होता है। यदि विधान सभा द्वारा दोबारा पास किये हुए विधेयक को विधान-परिषद अस्वीकार करे या ऐसे संशोधन करे जिन्हें विधान-सभा न चाहे अथवा विधान-परिषद में पेश विधेयक को बिना पास हुए एक मास से अधिक हो जाय, तो वह विधेयक विधान-मंडल के दोनों सदनों से पारित समझा जायगा।

राज्यपाल की अनुमति—जब किसी विधेयक को विधान मंडल पारित कर देता है, तब वह राज्यपाल के पास जाता है। धन-विधेयकों पर वह अपनी अनुमति अवश्य ही देता है साधारण विधेयकों पर वह या तो अनुमति दे देता है या अनुमति नहीं देता या उसे विधान-मंडल के पास फिर विचार करने के लिए भेजता है अथवा उसे राष्ट्रपति की अनुमति के लिए रोक सकता है। यदि कोई विधेयक विचार करने के लिए लौट आता है, तो विधान-मंडल उसमें संशोधन करके या पहले ही रूप में उसे फिर से पास कर सकता है। वह उसे दोबारा राज्यपाल के पास भेजेगा। अब दूसरी बार राज्यपाल को उस पर अपनी अनुमति अवश्य देनी होगी। इस प्रकार कानून बनाने का अधिकार विधान-मंडल को है।

(२) आय-व्यय (बजट) पर नियंत्रण

राज्यपाल के तथा विधान-सभा व विधान-परिषद के अध्यक्षों के वेतन, उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के वेतन व

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भत्ते, लोक सेवा आयोग के व्यय आदि शासन के व्यय की सात-आठ मदों को छोड़कर सरकार के सारे खर्चे विधान-सभा की स्वीकृति से होते हैं। उसका एक विशेष ढंग है।

राज्यपाल प्रतिवर्ष विधान मंडल के सामने एक वार्षिक वित्त-विवरण पेश करवाता है। आय-व्यय को माँगों के रूप में विधान-सभा के सामने पेश किया जाता है। जब सब माँगें मंजूर हो जाती हैं, तब एक विधेयक पेश किया जाता है, जिसमें उन माँगों के अनुसार राजकोष से धन निकालने की माँग की जाती है। यह विधान-सभा में ही पेश किया जाता है। धन-विधेयकों के ऊपर विधान-परिषद का अधिकार नहीं के बराबर है। यदि कभी किसी विधेयक के बारे में यह सवाल पैदा हो कि वह धन-विधेयक है या नहीं, तो विधान-सभा का अध्यक्ष उसका फैसला कर देता है।

विधान-सभा को अधिकार है कि माँगों को स्वीकार करे, उनमें कमी करे या उन्हें अस्वीकार कर दे। यदि वित्त-मन्त्री और मन्त्रि-परिषद जिसने बजट पेश किया है सभा की बात मानने को तैयार नहीं है, तो उन्हें पदत्याग करना होता है।

(३) मन्त्रि-परिषद पर अंकुश

विधान-मंडल का सबसे महत्वपूर्ण काम मन्त्रि-परिषद को वश में रखना है। मन्त्रि-परिषद विधान-मंडल के सामने उत्तरदाता है। इसका अर्थ यह है कि विधान-सभा में अविश्वास या निन्दा का प्रस्ताव पास हो जाने पर मन्त्रि-परिषद को पद-त्याग करना पड़ता है। विधान-मंडल के दोनों सदनों के सदस्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने सदन की बैठकों में मन्त्रियों से प्रश्न पूछते हैं और समय-समय पर उनके कामों की आलोचना करते हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—कानून बनाने का क्या विधि है? धन-विधेयक और साधारण विधेयक में क्या अन्तर है?

२—विधान-मंडल राज्य के आय-व्यय पर किस प्रकार नियंत्रण रखता है।

३—सिद्ध करो कि मन्त्रिपरिषद विधान-मंडल के सामने उत्तरदाता है।

४—रिक्त स्थानों की पूर्ति करो—

विधान-मंडल का सबसे महत्वपूर्ण काम मंत्रि-परिषद को वश में रखना है। मन्त्रि-परिषद विधान-मंडल के सामने..............है। यदि विधान-सभा में अविश्वास या निन्दा का प्रस्ताव पास हो जाय, तो मन्त्रि-परिषद को........करना पड़ता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा अध्याय

न्यायपालिका

पाठ १—संघ की न्यायपालिका

तुमने पिछली कक्षा में जिले की न्यायपालिका का अध्ययन किया था। तुम्हें याद होगा कि जिले के न्यायालयों में तीन प्रकार के मुकदमे सुने जाते हैं। एक प्रकार के तो वे मुकदमे हैं जो आपस मे मारपीट, चोरी, डकैती, धोखेबाजी आदि से सम्बन्ध रखते हैं। उनको **फौजदारी** के मुकदमे कहते हैं। दूसरे प्रकार के मुकदमे वे हैं जो धन, सम्पत्ति आदि के झगड़ों से सम्बन्ध रखते हैं। उनको **दीवानी** के मुकदमे कहते हैं। तीसरे प्रकार के वे मुकदमे जो खेतों के लगान आदि के न देने से सम्बन्ध रखते हैं। उनको **माल** के मुकदमे कहते हैं।

कुछ मुकदमे एक अन्य प्रकार के भी होते हैं, जिनको वैधानिक मुकदमे कह सकते हैं। वैधानिक मुकदमों का सम्बन्ध उन झगड़ों से होता है जो संघ और राज्यों के बीच में अथवा राज्यों में आपस में उठ खड़े होते हैं। ऐसे मुकदमों को सुनने के लिए संघ-केन्द्र में **उच्चतम न्यायालय बनाया गया है**। इसके अलावा नागरिकों की स्वतन्त्रता की रक्षा करना भी इसका कर्तव्य है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उच्चतम न्यायालय (सुप्रीम कोर्ट)

रचना—इस समय उच्चतम न्यायालय में एक मुख्य **न्यायाधिपति** (चीफ जस्टिस) और १३ अन्य न्यायाधीश हैं। १९५६ ई० के पहले न्यायाधीशों की संख्या केवल ७ थी। मुख्य न्यायाधिपति और न्यायाधीश सबको राष्ट्रपति नियुक्त करता है। न्यायाधीशों की नियुक्ति करने के पहले उसे मुख्य न्यायाधिपति की सलाह लेनी आवश्यक है।

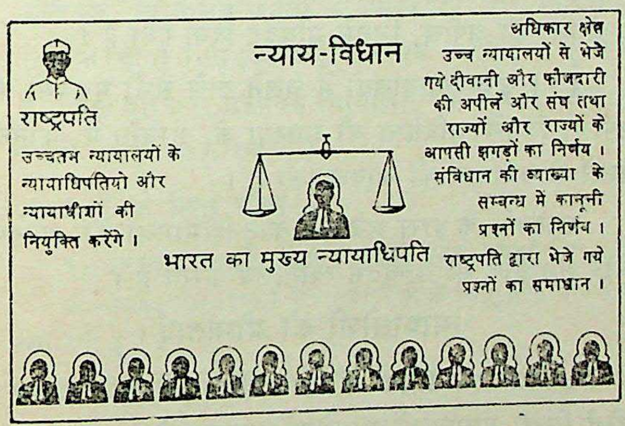

उच्चतम न्यायालय

वेतन—मुख्य न्यायाधिपति को ५,००० रु० और हरएक न्यायाधीश को ४,००० रु० मासिक वेतन मिलता है। इसके अतिरिक्त उन्हें बिना किराये का मकान भी दिया जाता है। वे ६५ वर्षों की आयु तक अपने पद पर काम कर सकते हैं। सन् १९६३ में उनकी आयु की अवधि २ वर्ष की और बढ़ा दी गयी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिकार–संघ व राज्यों तथा राज्यों के आपसी **वैधानिक झगड़ों** का निर्णय करने के अतिरिक्त उच्चतम न्यायालय तीनों प्रकार की **अपीलें** भी सुनता है:—

(१) राज्यों के उच्च न्यायालयों के **दीवानी** के मुकदमों के फैसलों की अपीलें, यदि दावे का मूल्य २० हजार रुपये से कम नहीं है।

(२) राज्यों के उच्च न्यायालयों के **फौजदारी** के मुकदमों के फैसलों की अपीलें, जिनमें मृत्युदंड दिया गया है।

(३) उच्च न्यायालयों में चलने वाले सभी मुकदमों की अपीलें, जिनमें संविधान की व्याख्या के सम्बन्ध में कानूनी प्रश्नों के समाधान की आवश्यकता है।

राष्ट्रपति के द्वारा भेजे गये कानूनी मामलों की व्याख्या और समाधान भी उच्चतम न्यायालय करता है।

न्यायाधीशों की योग्यताएँ

उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश होने वाले व्यक्ति में नीचे लिखी योग्यताओं का होना आवश्यक है:–

(१) वह व्यक्ति भारत का **नागरिक** हो।

(२) वह राज्य के किसी उच्च न्यायालय अथवा राज्यों के दो या अधिक उच्च न्यायालयों में मिलाकर कम से कम ५ वर्षों तक **न्यायाधीश** रह चुका हो या वह किसी उच्च न्यायालय अथवा दो या अधिक उच्च न्यायालयों में मिलाकर कम से कम दस वर्षों तक वकालत कर चुका हो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(३) वह व्यक्ति जो राष्ट्रपति की राय में पारंगत विधिवेत्ता अर्थात कानून का जानने वाला हो ।

उच्चतम न्यायालय का महत्व

भारत के संविधान ने ऐसे नियम बनाये हैं कि संघ की कार्यपालिका या संसद कोई भी न्यायाधीशों पर किसी तरह का अनुचित प्रभाव न डाल सकें। वे अपने कार्य में स्वतन्त्र हैं और बिना किसी दबाव के निष्पक्ष न्याय कर सकते हैं। उच्चतम न्यायालय जनता के अधिकारों और स्वतन्त्रता की रक्षा करता है। उसका अधिकार-क्षेत्र सम्पूर्ण राष्ट्र में फैला है। इस दृष्टि से उच्चतम न्यायालय भारत में राष्ट्रीय एकता बनाये रखने का साधन है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—उच्चतम न्यायालय किसे कहते हैं ? उसकी रचना कैसी होती है?

२—उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों के लिए कौन सी योग्यताएँ रखी गयी हैं ?

३—उच्चतम न्यायालय का क्या महत्व है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—राज्य की न्यायपालिका

हमारे संविधान में समूचे भारत के लिए न्यायालयों का ऊपर नीचे क्रमबद्ध संगठन है। सबसे ऊपर उच्चतम न्यायालय है; उसके नीचे अधिकतर राज्यों में उच्च न्यायालय हैं और उच्च न्यायालयों के अधीन जिले के न्यायालय हैं।

उच्च न्यायालय (हाई कोर्ट)

रचना—उच्च न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश (चीफ जस्टिस) और कई **न्यायाधीश** होते हैं। उनकी संख्या राष्ट्रपति

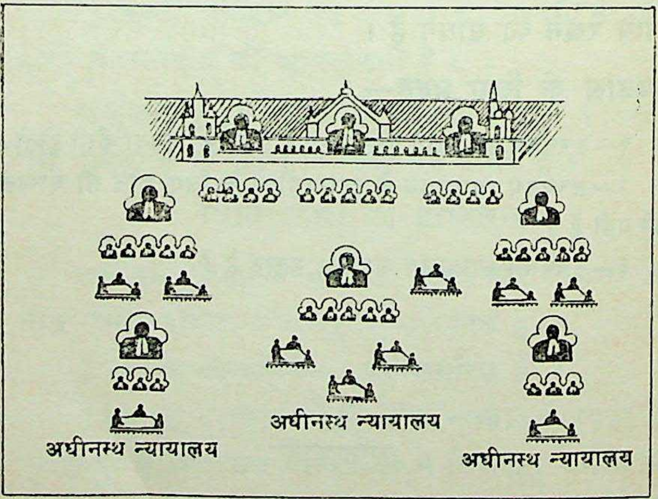

उच्च न्यायालय

निर्धारित करता है। राष्ट्रपति ही संघ न्यायपालिका के मुख्य न्यायाधिपति और राज्यपाल की सलाह लेकर मुख्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न्यायाधीश को तथा मुख्य न्यायाधीश की सलाह से अन्य न्यायाधीशों को नियुक्त करता है।

उच्च न्यायालय का हरएक न्यायाधीश ६० वर्षों की आयु तक अपने पद पर बना रह सकता है। न्यायाधीश के पद की नियुक्ति के लिए कम से कम १० वर्षों तक किसी उच्च न्यायालय में वकील या किसी न्याय-सम्बन्धी पद पर रह चुकना आवश्यक है। मुख्य न्यायाधीश को ४,००० रु० मासिक वेतन तथा प्रति न्यायाधीश को ३,५०० रु० मासिक वेतन और कुछ भत्ते मिलते हैं।

अधिकार और कर्तव्य—उच्च न्यायालय में भी कुछ मुकदमे तो आरम्भ में ही सुने जा सकते हैं, पर राज्य का सबसे ऊँचा न्यायालय होने के कारण उसका मुख्य काम अपीलें सुनने का होता है। **दीवानी** के उन मुकदमों की जो ५,००० रु० से अधिक मालियत के हों, अपील उच्च न्यायालय में की जा सकती है। **जिले की फौजदारी अदालतों** (सेशंस कोर्ट) के मुकदमों की अपीलें भी उच्च न्यायालय में सुनी जाती हैं। जिले की अदालतों में जो मृत्यु-दंड दिया जाता है, उच्च न्यायालय से भी उसकी पुष्टि होनी चाहिए।

राज्य के अन्दर न्याय की व्यवस्था को अच्छी प्रकार चलाना उच्च न्यायालय का कर्तव्य है। इसी कारण वह अधीन न्यायालयों के कार्यक्रम या हिसाब-किताब रखने का ढग निश्चित करता है। वह दीवानी या फौजदारी के किसी मुकदमे को एक न्यायालय से उसी श्रेणी के दूसरे न्यायालय को भेजता है, यदि उसको यह विश्वास हो जाय कि किसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पक्ष की ओर से किसी न्यायाधिकारी पर अनुचित प्रभाव पड़ रहा है या न्याय में बाधा पड़ने का सन्देह है।

उच्च न्यायालय का महत्व

राज्य के उच्च न्यायालय का संगठन संघ के उच्चतम न्यायालय के नमूने पर किया गया है। इसके न्यायाधीश भी राज्य-सरकार या विधान-मंडल के अधीन नहीं हैं। राज्य में होते हुए भी उच्च न्यायालयों का नियन्त्रण संघ-सरकार से होता है। इनके न्यायाधीशों की नियुक्ति, तबादला, वेतन, भत्ता, पेंशनें आदि राष्ट्रपति और संसद के अधीन हैं।

तुमने पिछली कक्षा में जिले के न्यायालयों का अध्ययन किया है। जिले की अदालतों और उनसे छोटी अदालतों पर उच्च न्यायालयों का नियन्त्रण है। जिले के न्यायाधीशों की नियुक्ति उनकी तरक्की, छुट्टी आदि बातें उच्च न्यायालय के हाथ में हैं। बहुत सीमा तक उन्हें राज्य की कार्यपालिका से स्वतन्त्र रखा गया है जिसमें जनता के अधिकारों और स्वतन्त्रता का रक्षा हो सके। हमारे देश के न्यायालय निष्पक्ष होने के लिए प्रसिद्ध हैं।

अधीन न्यायालय

तुम पढ़ चुके हो कि हर एक जिले में मुख्य रूप से दीवानी और फौजदारी दो तरह के न्यायालय हैं। इनके सिवा माल के सम्बन्ध में मुकदमों की सुनवाई के लिए अलग प्रबन्ध है।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—उत्तर प्रदेश का सबसे ऊँचा न्यायालय क्या कहलाता है? उसकी रचना के विषय में तुम क्या जानते हो?

२—उच्च न्यायालय के अधिकार और कर्तव्य क्या हैं?

३—उच्च न्यायालय को राज्य की कार्यपालिका से स्वतन्त्र रखने के लिए क्या किया गया है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा अध्याय

निर्वाचन और मताधिकार

पाठ १—भारत में लोकतन्त्र शासन

तुमने पिछली कक्षा में जिला-परिषद, नगरपालिका और गाँव पंचायत तथा इस कक्षा में उत्तर प्रदेश के विधान-मंडल के संगठन का अध्ययन किया है। इन संस्थाओं के सदस्य जनता के प्रतिनिधि हैं। इस प्रकार जनता ही अपने प्रतिनिधियों के द्वारा शासन का संचालन करती है। ऐसे शासन को लोकतन्त्र, जनतन्त्र अथवा प्रजातन्त्र कहते हैं।

असली लोकतन्त्र की स्थापना के लिए दो बातें आवश्यक होती हैं—एक, देश के सब लोगों को प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होना चाहिए; दूसरे, प्रतिनिधियों का चुनाव पूरी स्वतन्त्रता से होना चाहिए। हमारा देश इन दोनों बातों के विचार से बड़ा सौभाग्यशाली है।

(१) वयस्क मताधिकार

तुम पढ़ चुके हो कि भारत सघ के संविधान में २१ वर्षों या अधिक आयु के हरएक व्यक्ति को वोट देने का अधिकार है। हमारे स्वतन्त्र भारत में संसद और विधान-सभा के १९५७ ई० के पिछले चुनावों के समय १९ करोड़ ३१ लाख स्त्री-पुरुषों को वोट देने का अधिकार था। वह संख्या १९५२ ई० के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चुनाव में २१ करोड़ हो गयी और अब १९६७ ई० के चुनाव में करीब २५ करोड़, संसार के किसी दूसरे देश में मतदाताओं की इतनी बड़ी संख्या नहीं है। यही कारण है कि इतने बड़े चुनाव के शान्तिपूर्ण और उत्तम ढंग से हो जाने पर संसार को बड़ा आश्चर्य हुआ है, और विश्व के राजनीतिज्ञों ने भारत के लोकतन्त्र की बड़ी प्रशंसा एवं सराहना की है।

(२) स्वतन्त्र निर्वाचन

लोकतन्त्र की सफलता बहुत कुछ निर्वाचन के स्वतन्त्र और निष्पक्ष होने पर निर्भर है। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि शासक दल निर्वाचन के प्रबन्धकों और अधिकारियों पर अपना अनुचित प्रभाव न डाल सके। यदि ऐसा न हुआ तो लोकतन्त्र नाममात्र को रह जायगा और देश में तानाशाही कायम हो जायगी।

भारत के लोकतन्त्र को इन दोषों से अलग रखने के लिए संविधान में उचित नियम रख दिये गये हैं। चुनाव के नियंत्रण के लिए जो **निर्वाचन आयोग** (एलेक्शन कमीशन) बनाया जाता है, वह एक स्वतन्त्र संस्था है। शासक दल उसके कार्यों पर अनुचित प्रभाव नहीं डाल सकता। वह राजनीतिक दल-बन्दियों से ऊपर है।

मुख्य आयुक्त **(चीफ कमिश्नर)** और आयोग के सदस्यों को राष्ट्रपति नियुक्त करता है। निर्वाचन आयोग की आज्ञा-नुसार चुनावों के लिए निर्वाचन-सूचियाँ तैयार की जाती हैं। वही चुनावों के सम्बन्ध में अधिकारियों की नियुक्ति करता है। कार्यपालिका को उसके कार्यों में हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। इन सब बातों का उद्देश्य यही है कि किसी मतदाता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को अपनी इच्छा के अनुसार मत देने में कोई बाधा न पड़े और निर्वाचन शुद्ध और स्वतन्त्र रूप में हों।

लोकतन्त्र की सफलता का उपाय—शिक्षा

यह तुम अच्छी प्रकार से समझ गये होगे कि लोकतन्त्र 'जनता का शासन' है। अतः यह आवश्यक है कि जनता में वे गुण होने चाहिए जो शासन के लिए आवश्यक हैं। लोकतन्त्र की सफलता के लिए पहली आवश्यक बात यह है कि जनता शिक्षित होनी चाहिए। यदि हमारे देश के लोग अशिक्षित बने रहे, उनमें शासन करने की योग्यता न हुई या वे देश भक्ति के अपने कर्तव्यों को भूल गये, तो लोकतन्त्र नहीं चल सकेगा। शिक्षा से ही तुम अपने अधिकारों और कर्तव्यों को उचित रूप से समझने योग्य बन सकते और उनकी उचित रक्षा एवं पालन कर सकते हो। यदि शिक्षा की कमी हुई और शासन के कामों में रुचि न रही, तो लोकतन्त्र से हित के बजाय अहित होने की आशंका है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—'लोकतन्त्र' से क्या अभिप्राय है ?

२—लोकतन्त्र में क्या विशेषताएँ होनी चाहिए ?

३—लोकतन्त्र की सफलता के क्या उपाय हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—लोकतन्त्र का अभ्यास—स्कूल सभा का आयोजन

बालको, हमारे देश में लोकतन्त्र है, अतः बड़े होकर तुमको देश के शासन में कुछ न कुछ सहयोग देना पड़ेगा। २१ वर्षों के वयस्क होने पर तुम मतदाता बनोगे। तुम में से कोई विधान सभा का सदस्य बन सकता है अथवा कोई संसद का सदस्य हो सकता है। लोकतन्त्र में योग्यता के अनुसार ऊँचे से ऊँचे पद को प्राप्त करने का सबको समान अधिकार है। तुमने पढ़ा है कि लोकतन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा, योग्यता और शासन के कामों में रुचि होना आवश्यक है। तुम इस समय स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हो। तुम्हें चाहिए कि अभी से लोकतन्त्र की रीति-नीति का अभ्यास करना सीखो। इस समय की क्रियात्मक शिक्षा आगामी जीवन में तुम्हारे और देश के लिए बड़ी उपयोगी होगी।

स्कूल में गाँव पंचायत, जिला परिषद या नगरपालिका के नकली अधिवेशन कर सकते हो। अच्छा होगा कि यदि विधान-सभा के अनुकरण में स्कूल-सभा की स्थापना की जाय और उनके लिए नकली चुनाव और उसका नकली अधिवेशन किया जाय। हमारे राज्य के शिक्षा विभाग की भी यह इच्छा है कि बालक स्कूल-सभा की स्थापना से निर्वाचित और अधिवेशन करने की रीति का ज्ञान प्राप्त करें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विधान सभा के अनुकरण में स्कूल-सभा बनाने के लिए अपनी पुस्तक के पहले अध्याय के तीसरे पाठ 'विधान-मंडल' को दोहरा लो।

स्कूल-सभा बनाने के लिए नीचे लिखी व्यवस्थाएँ करनी होंगी। तुम्हारे अध्यापक निर्वाचन-अधिकारी और मुख्याध्यापक राज्यपाल का काम कर सकते हैं,

(१) मतदाताओं की सूची—उसमें जूनियर हाई स्कूल की तीनों कक्षाओं के बालकों के नाम लिखे जा सकते हैं।

(२) निर्वाचन क्षेत्र—तीनों कक्षाओं को तीन निर्वाचन क्षेत्र माना जा सकता है।

(३) सदस्यों की संख्या-पाँच छात्रों पर एक सदस्य के हिसाब से सदस्यों की संख्या नियत की जा सकती है।

(४) नाम-निर्देशन—अपने अध्यापक को निर्वाचन अधिकारी (रिटर्निंग आफिसर) मानकर उससे नाम-निर्देशन-पत्र (नामीनेशन पेपर) प्राप्त करो और नियत तिथि पर नियत समय के अन्दर अपने नाम का प्रस्ताव और अनुमोदन करा कर निर्वाचन अधिकारी को दे दो।

(५) सदस्यों की योग्यता—मुख्याध्यापक पहले से सदस्यों की योग्यताओं को घोषित कर देगा, जैसे स्कूल-सभा का वह बालक सदस्य नहीं हो सकता जो वार्षिक परीक्षा में फेल हो गया हो, जो अनुशासन भंग करने के अपराध में दंडित हुआ हो या जिसकी स्कूल की हाजिरी १०० पीछे ७५ से कम हो।

(६) नाम-निर्देशन-पत्र की जाँच—नियत तिथि पर नाम-निर्देशन पत्रों की जांच होगी। उस समय मतदाताओं को किसी के नाम-निर्देशन पर एतराज करने का अधिकार होगा।

(७) निर्वाचन तिथि—नाम-निर्देशन के बाद नियत तिथि पर विभिन्न कक्षाओं में अध्यापक उसी विधि से निर्वाचन करायेंगे, जैसे विधान-सभा के लिए चुनाव होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(८) मन्त्रि-मंडल–जिनको बहुमत मिलेगा वे सदस्य घोषित किये जायेंगे। सदस्यों के अधिक संख्या वाले दल के नेता से राज्यपाल (मुख्याध्यापक) मन्त्रि-मंडल बनवायेगा।

(९) अधिवेशन–स्कूल-सभा के पहिले अधिवेशन में मन्त्री व सदस्य नीचे लिखी शपथ लेंगे।

मैं......................अमुक..........................जो स्कूल-सभा के लिए सदस्य निर्वाचित हुआ हूँ सत्यनिष्ठा से प्रतिज्ञा करता हूँ / ईश्वर की शपथ लेता हूँ कि मैं स्कूल के नियमों में श्रद्धा और निष्ठा रखूंगा। मैं भारत की प्रभुता और अखंडता अक्षुण्ण रखूंगा तथा जिस पद को ग्रहण करने वाला हूँ उसके कर्तव्यों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करूँगा।

इस प्रकार स्कूल-सभा का संगठन किया जा सकता है। स्कूल सभा बनने पर उसके अध्यक्ष के चुनाव, अधिवेशन आदि का क्रियात्मक अभ्यास किया जाना चाहिए।

पाठ ३—स्वतन्त्र भारत का संविधान

बालको, तुमने पीछे पाठ में भारत-संघ के विभिन्न प्रकार के राज्यों और क्षेत्रों के नामों तथा उत्तर प्रदेश के शासन की कार्यपालिका, विधान-मंडल एवं संघ की न्यायपालिका का अध्ययन किया है। ये सब बातें स्वतन्त्र भारत के नये संविधान के अनुसार निश्चित की गयी हैं। अंग्रेजों के राज्य में इस प्रकार की व्यवस्था नहीं थी। अतः आवश्यक है कि तुम स्वतन्त्र भारत के संविधान की विशेषताओं को भलीभाँति समझ लो।

इस संविधान को बनाने के लिए दिसम्बर १९४६ ई० में विधान-परिषद का अधिवेशन बुलाया गया था, जिसमें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डा० राजेन्द्रप्रसाद को उसका स्थायी अध्यक्ष चुना गया। १९४७ ई० में भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होने के कारण विधान-परिषद का भी रूप सुधरा और वह स्वतन्त्र भारत के संविधान को बनाने के महत्वपूर्ण कार्य में लग गयी। ३ वर्षों के कठिन परिश्रम से यह संविधान बनकर तैयार हुआ और नवम्बर १९४९ ई० को स्वीकृत एवं २६ जनवरी १९५० ई० को क्रियान्वित किया गया। प्रतिवर्ष इस तारीख को सारे भारत में गणतन्त्र दिवस मनाया जाता है। उसके नाम से उस दिन स्कूल से तुम्हारी छुट्टी रहती है जिस संविधान का इतना महत्व है उसकी विशेषताओं का अध्ययन हरएक नागरिक के लिए आवश्यक है।

(१) भारत ने अपने इस संविधान के द्वारा घोषणा की है कि वह अब **पूर्णरूप से स्वतन्त्र** है; उस पर किसी विदेशी का अधिकार नहीं है। स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भारत ने अपनी इच्छा से राष्ट्रमंडल के अन्तर्गत समान अधिकारों के साथ सदस्य बने रहना स्वीकार किया है, परन्तु इससे भारत की प्रभुता में किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई है। यह सच है कि राष्ट्रमण्डल का प्रधान ब्रिटेन का महारानी को माना गया है, परन्तु राष्ट्रमण्डल के ऊपर उसके कोई विशेष अधिकार नहीं हैं। वह केवल राष्ट्रमण्डल की एकता को प्रकट करने वाला एक चिह्न मात्र (प्रतीक) है।

(२) इस संविधान के द्वारा भारत में ऐसी शासन-व्यवस्था कायम की गयी है, जिसमें सभी वयस्क स्त्री-पुरुषों को वोट देने का अधिकार है। अतः जो निर्वाचित लोग सरकार बनाते हैं वे जनता के प्रति उत्तरदाता हैं। यह सच्चे अर्थों में **लोक-**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तन्त्रात्मक संविधान है । इतना ही नहीं, इसकी प्रस्तावना में

भारत का संविधान

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोक तंत्रात्मक गणराज्य बनाने

तथा

उसके समस्त नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक, न्याय विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने

तथा

उन सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुरक्षित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिये

दृढ़ संकल्प होकर

अपनी इस संविधान सभा में एतदद्वारा इस संविधान को अंगीकृत अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

यह भी घोषणा की गयी है कि हमारा संघ लोकतन्त्रात्मक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गणराज्य होगा। इसका अभिप्राय यह है कि संघ का प्रधान कोई वंशानुगत व्यक्ति नहीं होगा, वरन अध्यक्ष एक निश्चित समय के लिए चुना गया राष्ट्रपति होगा। इस बात का महत्व एक दो उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगा। तुम जानते हो कि ब्रिटेन में शासन की व्यवस्था लोकतन्त्रात्मक है परन्तु वहाँ गणतन्त्र नहीं है। वहाँ वंशानुगत व्यक्ति राज्य का प्रधान होता है। इस समय रानी एलीजवेथ सम्राज्ञी हैं। उनके पूर्व उनके पिता छठे जार्ज सम्राट थे। यह वंशानुगत क्रम सदियों से चला आता है। ब्रिटेन के विपरीत द्वितीय महान विश्वयुद्ध के पहले नाजी जर्मनी और फासिस्ट इटली में गणतन्त्रात्मक व्यवस्था तो थी, परन्तु लोकतन्त्र नहीं था। बहुत से लोगों का मत है कि आजकल रूस में जो शासन व्यवस्था है वह गणतन्त्रात्मक तो है, परन्तु उसे लोकतन्त्रात्मक नहीं माना जा सकता। भारत संयुक्त राज्य अमेरिका एवं फ्रांस की भाँति लोकतन्त्रात्मक गणतन्त्र है।

(३) इस संविधान के द्वारा भारत में **संघात्मक सरकार** कायम की गयी है अर्थात उसे विविध राज्यों का संघ बनाया गया है, परन्तु उस संघ का स्वरूप इस प्रकार का रखा गया है कि देश की एकता अक्षुण्ण बनी रहे। किसी भी राज्य को संघ से पृथक होने का अधिकार नहीं है, वरन संकटकाल में राष्ट्रपति घोषणा करके राज्य की सभी शक्तियों को अपने हाथ में ले सकता है। संसार के अन्य किसी संघ में इस प्रकार की एकात्मक व्यवस्था नहीं है।

भारत-संघ की **एकात्मकता** को बहुत सी बातें प्रकट करती हैं, जैसे देश के सब निवासी भारतीय नागरिक कहलाते हैं, सब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोक संघ-संविधान के प्रति निष्ठावान हैं, न्याय की व्यवस्था ऊपर से नीचे तक एक सी है, लोक सेवाओं में नियुक्तियों के लिए विविध राज्यों में कोई अन्तर नहीं है तथा हमारा संविधान संघ और राज्य दोनों के अधिकारों और कर्तव्यों का निरूपण करता है। राज्यों को अपना संविधान बनाने का अधिकार नहीं है।

अनेक भागों में विभक्त होने तथा एकता के अभाव के कारण भारतवर्ष को कितनी ही बार पराजित होना पड़ा है, इसका इतिहास साक्षी है। अतः संविधान के बनाने वालों ने इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा है कि देश के विविध भागों में एकता बनी रहे। इस अभिप्राय से केन्द्र को अधिक से अधिक सबल बनाने का प्रयत्न किया गया है। केन्द्र के पास इतनी अधिक शक्तियां और अधिकार हैं कि रूस को छोड़कर विश्व के किसी अन्य देश के केन्द्र को शायद ही प्राप्त हों।

(४) स्वतन्त्र भारत के संविधान द्वारा भारत में एक **लौकिक राज्य** की व्यवस्था की गयी है। इसका अर्थ यह है कि देशवासी विविध धर्मावलम्बियों को अपने-अपने धर्म, विश्वास एवं पूजा-पाठ की पूरी स्वतन्त्रता है। सरकारी कामों अथवा सेवाओं की भर्तियों में धर्म के आधार पर किसी तरह का भेद-भाव नहीं बरता जायगा और न राज्य किसी धर्म विशेष का प्रचार करेगा। उसकी दृष्टि में सब धर्म-सम्प्रदाय समान होंगे। राज्य न्याय पर आधारित होगा और सदा लोकमंगल के काम करता रहेगा।

(५) संविधान ने संघ के केन्द्र एवं राज्यों में **संसदात्मक प्रणाली** की सरकार को स्थापित किया है। इस कारण मन्त्रि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मंडल के सदस्य संसद या विधानमंडल के सदस्य होते हैं और मन्त्री बन जाने पर उसी के प्रति उत्तरदाता रहते हैं। वह उस समय तक ही अपने पद पर रह सकते हैं, जब तक संसद या विधान-मंडल का विश्वास उनमें हो अन्यथा उन्हें अपने पद से अलग होना पड़ता है।

भारत संघ का राष्ट्रपति भी वैधानिक दृष्टि से अमेरिका के राष्ट्रपति के समान अधिकार-सम्पन्न नहीं है। वह मन्त्रि-मंडल के परामर्श एवं सहायता से काम करता है। इसी प्रकार राज्यपाल भी अपने मन्त्रियों के परामर्श से शासन करते हैं और चूँकि मन्त्री जनता के प्रतिनिधि होते हैं, इसलिए अन्त में वास्तविक शासन जनता ही करती है।

(६) अंग्रेजों के शासन-काल में जो विधान सभाएं, विधान-परिषद आदि बनायी गयीं उनमें निर्वाचन-पद्धति साम्प्रदायिक रखी गयी थी। हिन्दू प्रतिनिधि हिन्दुओं द्वारा और मुसलमान प्रतिनिधि मुसलमानों द्वारा चुने जाते थे। इस कुव्यवस्था के फलस्वरूप स्वतन्त्रता-प्राप्ति के समय भारत का विभाजन हुआ। स्वतन्त्र भारत के संविधान में साम्प्रदायिक निर्वाचनों का अन्त कर दिया गया है। अब हिन्दू, मुसलमान, ईसाई आदि **सब मिलकर सदस्यों का निर्वाचन** करते हैं।

(७) स्वतन्त्र भारत के संविधान ने **देवनागरी लिपि में लिखी हिन्दी भाषा को राजभाषा** माना है और प्रादेशिक भाषाओं को राज्यों में व्यवहार करने की स्वीकृति दी है। भारत के कतिपय भागों विशेषकर दक्षिण में द्राविड़ प्रदेश में हिन्दी अधिक प्रचलित नहीं है, अतः संविधान ने १९६५ ई० तक कार्यालयों में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अंग्रेजी भाषा के प्रयोग की आज्ञा दे दी है। उसके साथ-साथ यह व्यवस्था कर दी है कि यदि राष्ट्रपति चाहे तो अंग्रेजी के साथ हिन्दी के प्रयोग की आज्ञा दे सकता है।

(८) संविधान में इस प्रकार की भी गुंजाइश रखी गयी है कि यदि कभी उसमें संशोधन करने की आवश्यकता पड़े तो वह किया जा सके, परन्तु उसके लिए कुछ विशेष नियम बना दिये गये हैं।

(९) गम्भीर परिस्थितियों में राष्ट्रपति और राज्यपालों को **अध्यादेश** (आर्डिनेन्स) जारी करने का अधिकार दिया गया है। इस दृष्टि से संविधान के निर्माताओं ने कोई ऐसी स्थिति नहीं छोड़ी है आवश्यकता पड़ने पर जिसका समुचित प्रबन्ध न हो सके। १९५० ई० से भारत का शासन नवीन संविधान के अनुसार हो रहा है। उसमें बहुत कम संशोधनों की आवश्यकता पड़ी है।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—स्वतन्त्र भारत के संविधान के निर्माण का इतिहास बताओ।

२—भारत में लोकतन्त्रात्मक गणराज्य है, इससे क्या अर्थ समझते हो ? उदाहरण सहित बताओ।

३—भारत की संघात्मक सरकार में एकात्मक सरकार के गुण भी पाये जाते हैं ? उदाहरण देकर इसकी व्याख्या करो।

४—संसदात्मक प्रणाली से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?

५—नीचे लिखे पदों से क्या समझते हो:—

(क) लौकिक राज्य, (ख) राजभाषा, (ग) अध्यादेश (आर्डिनेन्स) (घ) राष्ट्रमंडल, (ङ) कार्यपालिका (च) न्यायपालिका।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—मूल अधिकार और राज्य की नीति के निर्देशक तत्व

स्वतन्त्र भारत के संविधान में एक बड़ा गुण यह है कि उसके आरम्भ में ही जनता के मूल अधिकारों को स्पष्ट कर दिया गया है। ये अधिकार भारतीय संस्कृति के अनुरूप हैं और विश्व की अच्छी से अच्छी बातों का समर्थन करते हैं। संविधान में इसके शामिल करने से सरकार की शक्तियाँ सीमित हो जाती हैं। राज्य की कार्यपालिका उनका उल्लंघन नहीं कर सकती।

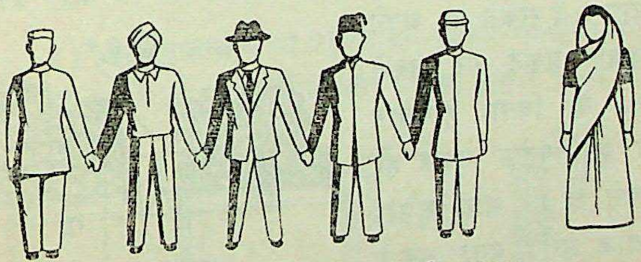

जनता के सब वर्गों में समानता की स्थापना

संसद या विधान-मंडल कोई ऐसा कानून पास करे अथवा कार्यपालिका कोई ऐसा नियम बनाये जो मूल अधिकारों के विरुद्ध है, तो न्यायपालिका उसे अवैध ठहरा कर कार्यान्वित न करने देगी।

मूल अधिकारों का सात शीर्षकों में वर्णन किया जा सकता है :—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१) **समता अधिकार**—संविधान ने सबसे पहले जनता के सब वर्गों में समानता की स्थापना कर दी है। कानून के सामने सब बराबर हैं। धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जायगा। राज्य के अधीन नौकरी के विषय में सबको समान अवसर दिये जायेंगे। अस्पृश्यता का अन्त कर दिया गया है।

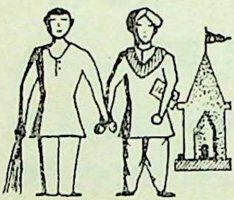
अस्पृश्यता का अन्त

(२) **स्वातन्त्र्य अधिकार**—संविधान ने सबको वाक-स्वातन्त्र्य प्रदान किया है अर्थात सब कोई स्वतन्त्रतापूर्वक भाषण दे सकते या अपने विचार प्रकट कर सकते हैं। वे बिना हथियार के शांतिपूर्वक एकत्र हो सकते हैं। संघ, सभा, समाज आदि बना सकते हैं। भारत के किसी भाग में निवास कर सकते हैं। सम्पत्ति को रख सकते एवं मोल ले या बेच सकते हैं। किसी भी व्यवसाय को कर सकते हैं।

वाक-स्वातन्त्र्य

इन अधिकारों का उपयोग करते समय हर एक व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी स्वतन्त्रता से नैतिकता, अन्य नागरिकों के सम्मान, सार्वजनिक शान्ति अथवा देश की सुरक्षा पर किसी तरह का आघात न हो। अधिकारों के साथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हरएक व्यक्ति को अपने कर्तव्यों को सदा याद रखना और उनका पालन करना होगा ।

संविधान में यह भी उल्लेख है कि कोई भी व्यक्ति बिना कारण बतलाये कारागार में नहीं डाला जा सकता और अभियोग लगाने पर २४ घंटों के भीतर ही अभियुक्त को न्यायालय के सामने पेश करना चाहिए ।

(३) **शोषण के विरुद्ध अधिकार**—संविधान में मनुष्यों के बेचने या मोल लेने का निषेध किया गया है । बेगार लेना मना है । १४ वर्षों तक की कम आयु के बच्चों को कारखानों एवं खानों, दूसरी खतरनाक जगहों में काम करने अथवा नौकर रखने का प्रतिषेध कर दिया है ।

(४) **धर्म-स्वातन्त्र्य का अधिकार**—हर एक नागरिक को अपने धर्म मानने, आचरण करने और उसका प्रचार करने की

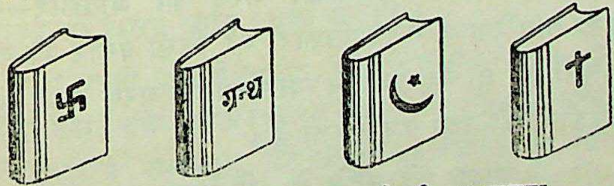

धर्म को मानने और प्रचार करने की स्वतन्त्रता

स्वतन्त्रता है । सिक्खों को कृपाण रखने का अधिकार है । राजकीय संस्थाओं को किसी धर्म-विशेष को पढ़ाने की व्यवस्था करने से मना कर दिया गया है । दूसरी शिक्षा-संस्थाओं में, जिन्हें राज्य की ओर से आंशिक सहायता मिलती है, किसी विद्यार्थी को उसकी इच्छा के विरुद्ध और यदि वह अल्पवयस्क है, तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसके संरक्षक की स्वीकृति के विना धर्म-शिक्षा लेने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता ।

(५) **संस्कृति और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार**—अल्पसंख्यकों को यह अधिकार दिया गया है कि वे चाहें तो अपनी शिक्षा संस्थाएँ स्थापित अथवा उनका प्रबन्ध कर सकते हैं । भारत के किसी भी भाग में रहने वाले वे नागरिक जिनकी अपनी कोई विशेष भाषा या संस्कृति है, उसकी रक्षा कर सकते हैं । कोई भी नागरिक, धर्म, जाति भाषा आदि के कारण शिक्षा-संस्थाओं की ओर से खोली गयी हैं या राज्य उन्हें सहायता देता है ।

(६) **सम्पत्ति का अधिकार**—राज्य के लिए किसी की सम्पत्ति छीनना मना है । यदि नियम के अनुसार किसी की सम्पत्ति ली जायगी, तो उसे राज्य की ओर से उसका उचित मुआवजा दिया जायेगा ।

(७) **संविधान के पालन करने का अधिकार**—यदि किसी नागरिक के मूल अधिकारों को किसी प्रकार की हानि पहुँचती है, तो वह उच्चतम न्यायालय की शरण लेकर अपने अधिकारों की रक्षा कर सकता है ।

राज्य की नीति के निर्देशक तत्व

मूल अधिकारों का वर्णन करने के बाद संविधान ने कुछ मूल तत्व भी निर्देशित किये हैं जो सरकार को सदा अपने ध्यान में रखने चाहिए। इन तत्वों के पालन से देश में एक ऐसे समाज का निर्माण हो सकेगा, जिसमें सब नागरिकों को राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय मिल सके। अतः सरकार अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीति का संचालन इस प्रकार करेगी कि हरएक नर-नारी समान रूप से आजीविका के साधन प्राप्त कर सके, सम्पत्ति का न्याय-पूर्ण वितरण हो सके और समान काम के लिए समान वेतन मिल सके। किसी के स्वास्थ्य और बल का अनुचित उपयोग न हो और आर्थिक आवश्यकताओं से लाचार होकर किसी नागरिक को ऐसे रोजगार को न करना पड़े जो उसकी आयु या शक्ति के प्रतिकूल हो। ग्राम पंचायतों का संगठन किया जाय। राज्य को चाहिए कि वह नागरिकों को काम पाने की, शिक्षा पाने की तथा बेकारी, बुढ़ापा बीमारी आदि अवस्थाओं में सहायता पाने की सुविधा की व्यवस्था करे। श्रमिकों को निर्वाह मजदूरी दिलाये। राज्य १४ वर्षों तक के बालकों और बालिकाओं के लिए बिना फीस अनिवार्य शिक्षा का प्रबन्ध करे। अनुसूचित एवं पिछड़ी हुई जातियों के शिक्षा विषयक और आर्थिक हितों का राज्य को विशेष ध्यान रखना चाहिए।

राज्य अपनी प्रजा के आहार, पुष्टिस्तर और जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने तथा उसके स्वास्थ्य की उन्नति को अपने प्राथमिक कर्तव्यों में समझेगा, वह यथासम्भव स्वास्थ्य के लिए घातक नशीली वस्तुओं के सेवन को रोकेगा। वह कृषि और पशुपालन को संगठित करेगा तथा पशुओं की नस्ल सुधारने और पशुवध रोकने का उपाय करेगा।

राज्य का कर्तव्य होगा कि वह राष्ट्रीय महत्व के स्मारकों अथवा कलात्मक व ऐतिहासिक अभिरुचि की वस्तुओं या जगहों की यथोचित रक्षा करे। राज्य इस बात का प्रयत्न करेगा कि उसमें सब जगह एक-सा कानून बरता जाय। वह न्यायपालिका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विभाग को कार्यपालिका विभाग से अलग रखने की व्यवस्था भी करेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा के लिए सरकार का कर्तव्य है कि वह राष्ट्रों के बीच में न्याय और सम्मानपूर्ण सम्बन्धों को बनाये रखने, एक दूसरे के व्यवहारों में अन्तर्राष्ट्रीय नियमों व सन्धि-बन्धनों का आदर बढ़ाने तथा अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को मध्यस्थ द्वारा निबटारे के लिए प्रोत्साहन देने की कोशिश करे।

संविधान के अनुसार राष्ट्र की जनता ही राष्ट्र की मालिक है। उसके सजग और सचेत रहने से राष्ट्र की राजनीतिक स्वतन्त्रता स्थिर रहेगी और अन्य सामाजिक व आर्थिक स्वतन्त्रताएँ शीघ्र स्थापित हो जायँगी।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—स्वतन्त्र भारत के संविधान में निम्नांकित मूल अधिकारों के विषय में क्या कहा गया है:—

(क) समता अधिकार, (ख) स्वातन्त्र्य-अधिकार, (ग) शोषण के विरुद्ध अधिकार (च) धर्म-स्वातन्त्र्य का अधिकार (ङ) संस्कृत और शिक्षा सम्बन्धी अधिकार (च) सम्पत्ति का अधिकार (छ) संविधान के पालन कराने का अधिकार।

२—मूल अधिकारों को देखते हुए भारत के नागरिक के क्या कर्तव्य हैं ?

३—राज्य की नीति के निर्देशक तत्वों का वर्णन करो। भारत में सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता को कायम करने में इन तत्वों का क्या उपयोग हो सकता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा अध्याय

भारतीय जीवन की समस्याएँ

पाठ १—शिक्षा

शिक्षा के सम्बन्ध में भारत के संविधान ने राज्य के लिए जो नीति बनायी है, उसमें स्पष्ट कहा गया है कि राज्य सन् १६६० तक सब बालकों को १४ वर्षों की अवस्था तक निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा देने का प्रयत्न करेगा। अब तक उत्तर प्रदेश ने शिक्षा देने में काफी उन्नति की है परन्तु संविधान में बताये लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सका है।

अभी तक केवल नगरों और जिलों के अधिकतर क्षेत्रों में केवल ६ से लेकर ११ वर्षों तक की अवस्था के बालकों के लिए शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य बनायी जा सकी है। अतः पहली समस्या तो गाँवों में अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा का प्रसार है। दूसरी समस्या गाँवों और नगरों दोनों के बालकों की आयु से सम्बन्ध रखती है। अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा १४ वर्षों की अवस्था तक दी जानी चाहिए अर्थात अनिवार्य शिक्षा की आजकल की अवधि में ३ वर्ष और बढ़ाने चाहिए। उस दशा में हरएक बालक को बेसिक स्कूलों और जूनियर हाई स्कूलों में पढ़ना अनिवार्य होगा और राज्य किसी बालक से पढ़ाई की फीस न ले सकेगा। आशा है कि उत्तर प्रदेश की सरकार इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अवश्य प्रयास करेगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस समय पहली पाँच कक्षाओं में ६ से ११ वर्षों तक के बालकों के लिए अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा का जो कार्यक्रम चल रहा है वह पूरी तरह से सफल नहीं हो सका है। प्रायः देखा जाता है कि माता-पिता अपनी इच्छा से खुशी-खुशी अपने बालकों को स्कूलों में नहीं भेजते। शहरों के शिक्षित लोग समझते हैं कि नगरपालिका के साधारण स्कूल बालकों के मस्तिष्क और चरित्र के विकास के लिए यथायोग्य नहीं हैं। गाँवों के निर्धन लोग अपने बच्चों को इसीलिए नहीं भेजते कि बच्चे उनके कामों में हाथ बँटाते हैं।

प्रायः यह भी देखा गया है कि जैसे तैसे बालकों को यदि स्कूलों में भेजा भी जाता है, तो स्कूलों से उनको यथेष्ट लाभ नहीं होता, ७-८ वर्षों बाद कहीं १०० पीछे केवल २०-२५ बालक पाँचवीं कक्षा तक पहुँच पाते हैं तथा पाँचवीं कक्षा पास करके भी थोड़े समय बाद वे फिर निरक्षर हो जाते हैं।

इन कठिनाइयों पर काबू पाने के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार निरन्तर प्रयास कर रही है। यहाँ ७ करोड़ ३७ लाख से अधिक जनसंख्या है। उनके बालक-बालिकाओं की अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध करने के लिए बहुत-साधन चाहिए। इस समय शिक्षा का इतना कम प्रबन्ध होते हुए भी अध्यापकों को उचित वेतन नहीं मिलता। अध्यापक राष्ट्रनिर्माता समझे जाते हैं पर इन निर्माताओं के तन के लिए न तो आवश्यकतानुसार कपड़ा जुड़ता है और न परिवार को पेट भरने के लिए इच्छानुसार भोजन। ये लोग दिन रात दो-दो चार-चार रुपयों के ट्यूशनों के लिए गाँव की गलियों में घूमते हैं। बहुत से अध्यापकों को

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गाँव में खेती-बारी या अन्य किसी धन्धे में लगना पड़ता है, क्योंकि उसके बिना उनका निर्वाह नहीं हो सकता। यदि अध्या-पकों को उचित वेतन नहीं मिलेगा, तो अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा कैसे सफल होगी ?

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी ने अनिवार्य निःशुल्क शिक्षा पर जोर देने के साथ-साथ **स्कूलों को स्वावलम्बी** बनाने की योजना सुझायी थी। उन्होंने कहा था कि **"मैं बालक की शिक्षा का श्रीगणेश किसी लाभदायक हस्तकौशल (क्राफ्ट के शिक्षण) से करना चाहता हूँ।"** पिछले २५ वर्षों से उसके अनेकों परीक्षण हो चुके हैं। सौभाग्य से उसे भारत की संघ सरकार ने स्वीकार कर लिया है और स्वावलम्बी शिक्षा के प्रसार के लिए राज्य सरकारों से कहा है। उसके अनुसार उत्तर प्रदेश की सरकार ने अपनी तीसरी पंचवर्षीय शिक्षा प्रसार योजना में अनेक बेसिक और जूनियर स्कूलों में स्वावलम्बी शिक्षा देने का विचार किया था।

महात्मा गान्धी के दिखलाये हुए मार्ग के अनुसार शिक्षा के प्रचलित करने से न केवल स्कूल कुछ न कुछ स्वावलम्बी बनेंगे अपितु बालकों का पूर्ण विकास होगा। उनके अन्दर विभिन्न वस्तुओं को बनाने की मनोवृत्ति जागेगी। किताबी कीड़े न बनकर वे लोग कृषि या दस्तकारियों के द्वारा भाषा, गणित, भूगोल, इतिहास आदि की शिक्षा ग्रहण करेंगे। दस्तकारियों के न होने से बेरोजगारी के कारण आजकल गाँव वाले अपने घरबार छोड़कर शहरों में जाने के लिए बाध्य हो जाते हैं और शहरों में भी उन्हें काम नहीं मिलता। स्वावलम्बी शिक्षा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से यह भगदड़ सामाप्त हो जायगी और वे लोग गाँवों में ही सुखी और सन्तुष्ट जीवन बिता सकेंगे ।

बेसिक शिक्षा का पाठ्यक्रम इस प्रकार का है कि उसे बालक को कुछ सांस्कृतिक शिक्षण भी मिलेगा, उसके चरित्र की रचना होगी, वह शारीरिक परिश्रम करेगा और उसकी बुद्धि विकसित होगी ।

अभ्यास के लिए प्रश्न---

१—अनिवार्य नि:शुल्क शिक्षा के विषय में भारत संघ संविधान में क्या निर्देश हैं ?

२—उत्तर प्रदेश में इस समय अनिवार्य नि:शुल्क शिक्षा की क्या अवस्था है ?

३—अनिवार्य नि:शुल्क शिक्षा के प्रसार में क्या कठिनाइयाँ हैं ? वह कैसे दूर हो सकती हैं ?

४—वेसिक शिक्षा के लाभ बताओ ।

क्रियात्मक अभ्यास–

१—स्कूल या गाँव के वाचनालय में समाचार-पत्र पढ़ा करो ।

२—अपनी स्कूल-सभा में तथा राष्ट्रीय उत्सवों व त्योहारों के अवसरों पर स्कूलों में आधुनिक घटनाओं पर व्याख्यान कराओ और उन्हें ध्यानपूर्वक सुनो ।

पाठ २—अस्पृश्यता

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कहा करते थे कि अस्पृश्यता या छुआछूत हमारे देश व समाज का कलंक है । ये अछूत कहलाये जाने वाले लोग कहीं शूद्र, कहीं आदिवासी, कहीं अनुसूचित जाति (शिडूल्ड कास्ट) के नाम से पुकारे जाते हैं । महात्मा गांधी ने उनको 'हरिजन' नाम दिया और उनके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उद्धार का बीड़ा उठाया। वह अपने जीवन भर उनके सामाजिक उत्थान के प्रयत्नों में लगे रहे। उनकी संख्या ७ करोड़ के लगभग बतलायी जाती है। इसका यह मतलब हुआ कि भारत संघ के हर छह नागरिकों में एक हरिजन है।

हरिजन हिन्दू हैं; पर कुछ समय पहले हिन्दुओं के इस अंग पर सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक सभी तरह की रुकावटें थीं। भारत संघ के संविधान में मूल अधिकारों को बतलाते हुए घोषणा की गयी है कि '**अस्पृश्यता का अन्त किया जाता है और उसका किसी भी रूप में आचरण वर्जित है। अस्पृश्यता से पैदा हुई किसी अयोग्यता को लागू करना अपराध होगा और कानून के अनुसार दंड दिया जायगा।**' इस प्रकार स्वतंत्र भारत में छुआछूत का कानून की दृष्टि से पूरा बहिष्कार कर दिया गया है। अब हरिजनों के लिए मन्दिर, होटल अथवा किसी दूसरे सार्वजनिक स्थानों में प्रवेश करने, स्कूलों में पढ़ने, कुओं व तालाबों के प्रयोग आदि पर रोक नहीं है।

तुमने इतिहास में पढ़ा है कि हरिजनों के उद्धार के लिए मध्यकाल में स्वामी रामानन्द, कबीर आदि सन्त-महात्माओं ने अनेक प्रयत्न किये। आधुनिक काल में हमारे उत्तर प्रदेश मे आर्य समाज, हिन्दू सभा और कांग्रेस ने हरिजनों को समाज में उचित स्थान दिलाने के लिए बड़ा काम किया है। महात्मा गांधी ने तो १९३० ई० के बाद हरिजन-उद्धार को अपना मुख्य कार्यक्रम बना लिया था। उन्होंने सारे देश में दौरा किया और हरिजन-फंड के लिए रुपया जमा किया। हिन्दी, गुजराती और अंग्रेजी में 'हरिजन' नाम के साप्ताहिक पत्र निकाले और सारे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देश का ध्यान हरिजन समस्या की ओर खींचा। १९३२ ई० में इंग्लैंड के प्रधान मन्त्री ने जब हिन्दुओं से अलग अछूतों की एक राजनीतिक इकाई बनाने का प्रयत्न किया तो राष्ट्रपिता ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर आमरण अनशन कर दिया। इसके फलस्वरूप अंग्रेज प्रधान मन्त्री को अपने निर्णय में संशोधन करना पड़ा।

महात्माजी के प्रभाव से कांग्रेस ने भी हरिजन-उद्धार को अपने कार्यक्रम का मुख्य अंग बनाया। जब १९३७ ई० में पहली बार कांग्रेस मन्त्रि-मंडल बने, तब उनके लिए सरकारी नौकरियों में जगहें दी गयीं और स्कूल-कालेजों में पढ़ने की सुविधाएँ की गयीं। १९५० ई० के नये संविधान ने उन्हें समान अधिकार दिये और अब कानून की दृष्टि से अस्पृश्यता समाप्त हो गयी है। उनके लिए सरकारी नौकरियों, जिला परि-षदों, विधान सभाओं आदि में स्थान सुरक्षित रखे गये हैं। संघ सरकार और राज्य सरकार, दोनों में हरिजन मन्त्री हैं। ग्राम सभाओं में हरिजन लोग प्रधान और उपप्रधान हैं। कहीं-कहीं वे न्याय पंचायतों के सरपंच भी चुने गये हैं। उत्तर प्रदेश में एक हरिजन सहायक विभाग भी विद्यमान है जो उनकी सामाजिक और आर्थिक उन्नति का प्रयत्न कर रहा है। उनके बालकों की शिक्षा के लिए संघ और राज्य सरकारें अनेक प्रकार से मदद करती हैं। परन्तु कानून बन जाने या राजनी-तिक अधिकार मिल जाने से ही समाज-सुधार नहीं हो जाता। अस्पृश्यता सैकड़ों वर्षों से हिन्दू समाज के माथे पर कलंक का टीका है। उसे मिटाने के लिए छोटे-बड़े सभी लोगों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के सहयोग की आवश्यकता है। स्वयं हरिजन भाइयों को भी अपनी दशा सुधारने, भेदभाव मिटाने और हीनता के भाव त्यागने का प्रयत्न करना चाहिए।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—अस्पृश्यता के विषय में स्वतन्त्र भारत के संविधान में क्या कहा गया है ?

२—अस्पृश्यता दूर करने के लिए क्या प्रयत्न किये गये हैं ?

क्रियात्मक अभ्यास—

तुम्हारे स्कूल में 'मध्याह्न भोजन' का प्रबन्ध होगा। उस भोजन के वितरण में अपने हरिजन साथियों को विशेष रूप से लगाओ।

पाठ ३—गरीबी

बालकों, तुमने सुना होगा कि भारत गरीबों का देश कहा जाता है, क्योंकि दूसरे देश के मुकाबले में भारतवासियों की औसत आमदनी बहुत कम है। इसी कारण हम अपना रहन-सहन ऊँचा नहीं कर सके हैं। गरीबी की वजह से जितनी बुराइयाँ हो सकती हैं वे सब हमारे यहाँ मौजूद हैं। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि हमारा देश आमदनी के साधनों में या प्राकृतिक सम्पत्ति में किसी देश से कम है। खेती के लिए धरती, पानी और सूर्य की गरमी चाहिए। उद्योग-धन्धों के लिए कच्चा माल, लोहा-कोयला और बिजली चाहिए। व्यापार के लिए यातायात की सुगमता और बाजार चाहिए। भारत में किस चीज की कमी है ? यदि किसी वस्तु की कमी नहीं, तो हम गरीब क्यों हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Preseyation Foundation, Chandigarh

भारतवासियों की गरीबी का मुख्य कारण यह है कि दूसरे देशों के मुकाबले हमारे देश में **उत्पादन** कम होता है और काफी उद्योग-धन्धे नहीं हैं। यहाँ गेहूँ, कपास और गन्ना की प्रति एकड़ उपज का चित्र दिया है। इससे क्या प्रकट होता है ? हमारे राज्य में संयुक्त राज्य अमेरिका के मुकाबले प्रति एकड़ आधा भी गेहूँ नहीं होता, मिस्र और अमेरिका के मुकाबले आधी भी कपास नहीं होती और **जावा** के मुकाबले आधी भी ईख नहीं पैदा होती। गेहूँ और कपास की प्रति एकड़ उपज में हम अपने पड़ोसी पाकिस्तान से भी पिछड़े हैं।

आजकल हरएक देश का धनी होना **कुटीर-उद्योगों** और बड़े-बड़े **कल-कारखानों** की प्रचुरता पर निर्भर है। अंग्रेजी राज्य के पहले भारत के गाँवों और नगरों में उद्योग-धन्धों की भरमार थी इस कारण इतनी **जनसंख्या** खेती पर निर्भर नहीं रहती थी जितनी कि अब रहती है। खेती करने वालों के पास काफी

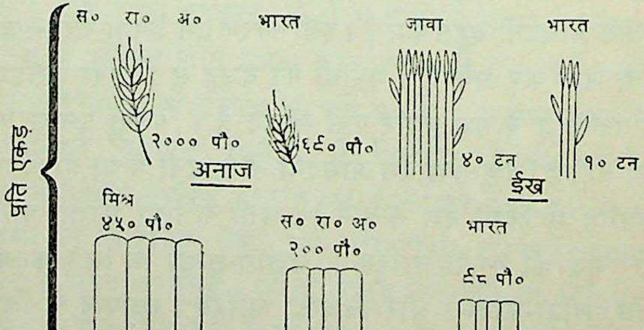

गेहूँ, कपास और गन्ने की प्रति एकड़ उपज (पौंडों में)

जमीनें थीं। खेती न करने वाले लोग उद्योग-धन्धों और दूसरे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कामों में लगे थे। अंग्रेजों ने अपने देश और अन्य विदेशों के माल बेचने और इस प्रकार व्यापार से लाभ उठाने के लिए हमारे देश के उद्योगों को या तो नष्ट कर दिया या उन्हें पनपने नहीं दिया। हमारा देश अब स्वतन्त्र हुआ है और हमें अंग्रेजी राज्य-काल की दो सौ वर्षों की क्षति को शीघ्र ही पूरा करना है। इसके क्या उपाय हैं?

इस समय दशा यह है कि गाँवों के लोग नगरों की ओर भाग रहे हैं, क्योंकि उनकी कारीगरियां समाप्त हो गयी हैं और वे भूमिहीन हैं। गाँव का कच्चा माल भी नगरों की ओर खिंचा चला जाता है, क्योंकि उद्योगों के न होने से गाँवों में कच्चे माल की खपत नहीं हैं। शहरों में यह हाल है कि वहाँ की दुकानों पर विदेशी माल भरा पड़ा है।

यदि गाँवों में सूत कातना-बुनना, धान कूटना, तेल पेरना आदि कुटीर उद्योग चल पड़ें, तो एक तो खेतों का भार कम हो जाय और दूसरे बेकार आदमियों को काम मिल जाय।

जीवन की आवश्यकता की जो सैकड़ों चीजें विदेशों से आती हैं, उनके बनाने का भी अपने देश में प्रबन्ध होना और देशवासियों को स्वदेशी का व्रत लेना चाहिए। इससे देश का रुपया देश के अन्दर देशवासियों के पास रहेगा। अतः देश में **कल-कारखानों और भारी उद्योगों** की उन्नति बहुत ही आवश्यक है। इनसे लाखों आदमियों को रोजगार मिलेगा। जब खाने-पीने, घरों के बनाने, पहनने, ओढ़ने-बिछाने, शिक्षा, खेल-कूद, आमोद-प्रमोद इत्यादि की अनेकानेक वस्तुएं सुलभ होंगी, तब लोगों की गरीबी दूर होगी और उनके रहन-सहन का स्तर ऊँचा होगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत के गाँवों और नगरों के पुराने उद्योगों में सुधार और नये-नये उद्योगों के खोलने के लिए इस समय कारीगर चाहिए। हमारे देश में ऐसे **कारीगरों का प्रायः अभाव है।** ये कारीगर कैसे पैदा हों? सौभाग्य से सरकार ने स्कूलों में नये ढंग की बेसिक शिक्षा जारी करके मस्तिष्क की शिक्षा के साथ दस्तकारियों का सिखाना शुरू किया है। इस समय उन्हें अच्छी तरह सीखकर आगे गाँवों में तुम कुटीर उद्योगों को स्वयं चला सकते हो और दूसरों को सिखा सकते हो। सूत कातना, कपड़ा बुनना, चमड़े का काम, मिट्टी के बर्तन और खिलौने, छपाई, रंगाई का काम इत्यादि बीसों उद्योग हैं जो तुम चार-पाँच वर्षों के बाद ही अपने घरों में जारी कर सकते हो। कहते हैं कि महायुद्ध के पहले जापान के हर घर में एक छोटा सा कारखाना था जिसमें स्त्री, पुरुष और बच्चे सब मिलकर बटन, खिलौने, चाकू,

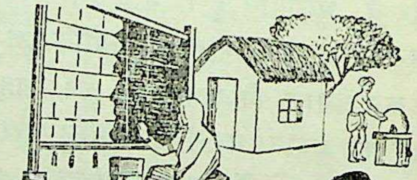

अपने बचपन में बेसिक स्कूलों में पढ़े लोगों के गाँव में कुटीर उद्योग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनियान, स्वेटर आदि बनाते थे। तभी तो जापान ने इतनी उन्नति की थी कि यूरोपीय देश भी चकित हो गये थे।

प्रारम्भिक शिक्षा में हाथ का काम करने से तुम्हारे हाथ ऐसे सध जायेंगे कि दो-तीन वर्षों बाद तुम जिस मशीन का काम सीखना चाहोगे उसे बहुत जल्दी और अच्छी तरह सीख जाओगे। इस विचार से भी खूब मन लगाकर परिश्रमपूर्वक स्कूल में दस्तकारी के कामों को सीखना इस समय तुम्हारा परम धर्म है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—हमारे देश की गरीबी का मुख्य कारण क्या है ?

२—गरीबी को दूर करने के क्या उपाय हैं ?

३—देश की निर्धनता दूर करने के लिए छात्रावस्था में तुम्हें क्या करना चाहिए ?

पाठ ४—कर्जा

फिजूलखर्ची और कर्जा (अपव्यय और ऋण) हमारे भारतीय जीवन की एक बड़ी समस्या है। नगरों की अपेक्षा गाँवों में तो इस समस्या ने और भी भयानक रूप ले लिया है। ४ एकड़ भूमि पर खेती करने वाले एक किसान की वार्षिक आमदनी केवल ५०० रुपये के लगभग है। इनमें से वह करीब १२५ रु० अर्थात कुल आमदनी का एक चौथाई भाग साहूकार को कर्ज के ऊपर ब्याज के रूप में भेंट कर देता है। ७५ रु० सरकार को लगान या मालगुजारी के रूप में अदा करता है। उसके बाद उसके पास ३०० रु० वार्षिक अथवा २५ रु०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मासिक बचता है जिसमें उसे अपने परिवार, गाय और बैलों का भरण-पोषण करना है। परिणाम यह होता है कि उसे और उसके परिवार को पेट भरने के लिए भोजन का कोटा और तन ढकने के लिए कपड़े की कमी बनी रहती है। उसके पशु भी भर पेट खाना न मिलने के कारण दुर्बल बने रहते हैं। उसके पास एक पैसा भी नहीं बचता जिससे वह साहूकार का मूल कर्ज चुका सके। जन्म भर वह ब्याज देता रहता है और अपनी औलाद को भी ऋणी दशा में छोड़ जाता है। इस प्रकार हमारे अन्न-दाता किसान कर्जदार

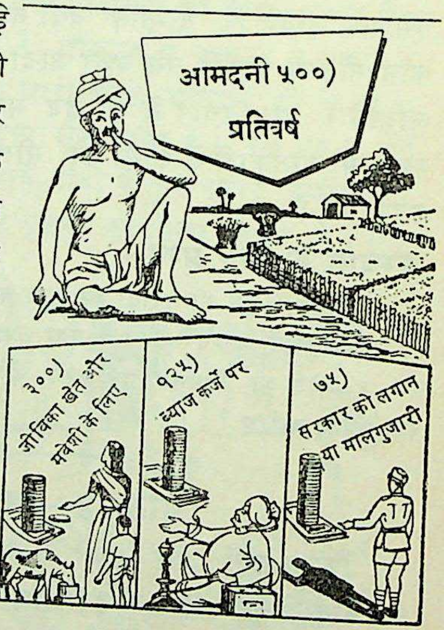

एक किसान की औसत आमदनी और कर्जे पर ब्याज

पैदा होता, कर्जदार जीता और कर्जदार मरता है। भारत के अधिकांश किसान इस प्रकार कर्जे के बोझ से दबे हैं। आधुनिक काल में कुछ वर्षों से सरकार ने उनके कर्जे के बोझ को कम करने के लिए कुछ कानून बनाये हैं।

किसान कर्जा क्यों लेते हैं? तुम जानते हो कि गरीब से गरीब किसान भी शादी ब्याह के अवसर पर **धूम-धड़क्के** में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपनी शक्ति से अधिक खर्च कर डालता है, पुत्रों के जन्म या वृद्धों की मृत्यु के मौकों पर भोजों में अपव्यय करता है ? घर में किसी की मृत्यु होने पर उनके क्रिया-कर्म या बाद को श्राद्ध-तर्पण में बहुत-सा धन लगता है इत्यादि। इससे गरीबी बढ़ती है।

किसानों और गाँव के लोगों में **मुकदमेबाजी** का शौक बहुत बढ़ गया है। इस कारण करोड़ों किसानों के पसीने की कमाई का एक बड़ा भाग नगर के वकीलों, कचहरियों के रिश्वत-खोरों, होटलों, ढाबों, दूकानदारों आदि की भेंट चढ़ जाता है।

इसका इलाज क्या है ? सौभाग्य से संघ और राज्य सरकार कानूनों और प्रचार के द्वारा गाँव वालों को इस दुर्दशा से बचाने का प्रयत्न कर रही है। शिक्षा के बढ़ने और **ग्राम पंचायतों** के खुलने से किसानों में जागृति हो रही है। किसानों को शीघ्र से शीघ्र फिजूलखर्ची छोड़नी चाहिए और कर्जा नहीं लेना चाहिए।

सरकार की ओर से हमारे देश में कर्ज देने वाली **सहकारी समितियां** और बैंक कायम हैं। वे आवश्यकतानुसार ही कर्जा देती हैं और साधारण ब्याज लेती हैं। अतः गाँव वालों को इस बात का व्रत लेना चाहिए कि यदि उन्हें कर्ज लेने के लिए वाध्य होना पड़े, तो वे सहकारी समितियों से ही कर्जा लेंगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—कर्ज के विचार से गाँव के लोगों की क्या हालत है ?

२—क्या कारण है कि गाँव के लोगों पर कर्जा बहुत चढ़ा है ?

३—कर्ज का क्या इलाज है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ५—खेती

कितनी प्रसन्नता की बात है कि हमारे उत्तर प्रदेश की सरकार के एक पूर्व मुख्य मन्त्री महोदय स्वर्गीय पं० गोविन्द बल्लभ पन्त के प्रयत्न से हमारे अनेक जूनियर हाई स्कूलों में खेती की व्यापक शिक्षा का प्रबन्ध हो गया है, जिससे खेती की उन्नति में बड़ी सहायता मिलेगी।

खेती का समस्या का हल एक-दो दोषों को दूर करने से नहीं हो सकता। उसके लिए पूरी व्यवस्था में सुधार करना होगा। तुमने पिछली कक्षा में कृषि विज्ञान के पाठों में धरती के कटाव, बीज, खाद, सिंचाई, औजार आदि के प्रश्नों पर विचार किया था। इस कक्षा में तुम खेती की उन्नति के उपायों का क्रियात्मक अभ्यास कर रहे हो। अब तुम खेती के विषय में स्कूलों में पढ़े पुराने बालकों की अपेक्षा बहुत अधिक निपुण हो। अतः तुम समझते हो कि—

(१) हर एक किसान के पास कम से कम कितनी भूमि जोत में रहनी चाहिए। इसके लिए **चकबन्दी** आवश्यक है। यदि किसान अलग-अलग बिखरे छोटे-छोटे टुकड़े न रखकर भूमि को इकट्ठा जोते-बोये या सींचेगा, तो उसे अधिक लाभ होगा।

(२) खेती के औजारों में, बीज में, खाद में और सिंचाई के साधनों में सुधार और उन्नति आवश्यक है। कूड़ा-करकट का कम्पोस्ट और गोबर की खाद खेतों की मिट्टी को सोने की तरह कीमती बना देती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) **सहकारी समितियाँ** बनाना कितना उपयोगी है। ये कई प्रकार की होती हैं। तुम पिछले पाठ में पढ़ चुके हो कि सहकारी बैंकों से कम ब्याज पर कर्जा मिल सकता है। सहकारी कृषि द्वारा गाँव के सब किसान एक साथ मिल-कर खेती करके अपनी उपज बढ़ा सकते हैं। सहकारी बिक्री समितियों के द्वारा अपना माल बिकने के लिए बाहर भेज सकते और उसका उचित मूल्य पा सकते हैं। सहकारी उपभोक्ता स्टोरों से अपने गाँव में ही बीज, औजार, कपड़ा, तेल आदि आवश्यक चीजें उचित मूल्य पर मोल ले सकते हैं। यह प्रयत्न करना चाहिएं कि सब किसान सहकारी समितियों के सदस्य बन जायें।

सामुदायिक विकास योजनाएँ

पहली पंचवर्षीय योजना में बहुत से गाँवों में **सामुदायिक विकास योजनाएँ** चालू की गयी थीं। दूसरी पंचवर्षीय योज-नाओं में भी उत्तर प्रदेश के हजारों गाँवों में सामुदायिक योजनाएँ चालू की गयीं। तीसरी योजना के समाप्त होने के पहले ही अब सभी गाँव सामुदायिक योजनाओं के अन्दर आ गये हैं। खेती और दूसरे कामों की योजनाओं में नीचे लिखी बातें शामिल की गयी हैं :—

(क) बिना जुती और ऊसर जमीन का सुधार;

(ख) नहरों, नलकूपों, कुओं, नदियों, झीलों, पोखरों, आदि से सिंचाई के लिए पानी लेने का प्रबन्ध;

(ग) अच्छे बीज, उत्तम खेती, पशु-चिकित्सा, खेती के सुधरे औजारों, बीजों की बिक्री और ऋण की सुविधा, पशु-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पालन के लिए नस्ल सुधारने के केन्द्रों, भूमि के बारे में अनुसंधान और खादों की व्यवस्था;

(घ) मछलियों का पालन, फल और तरकारी की खेती, वन लगाने का विकास और भोजन का सुधार।

खेती की उन्नति के अलावा सामुदायिक विकास योजनाओं में गावों की सड़कें, शिक्षा और स्वास्थ्य की उन्नति के काम भी शामिल हैं। इन कामों से भी खेती की उन्नति में सहायता मिलेगी। परन्तु, ये सब काम इतने महान हैं कि केवल सरकार के प्रयत्न इन्हें पूरा नहीं कर सकते। सारे देश-वासियों को आर्थिक सहायता अथवा श्रमदान देकर सहयोग करना होगा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—हमारे प्रान्त में खेती की दुर्दशा के क्या कारण हैं? सुधार के उपाय बताओ।

२—चकबन्दी और सहकारी समितियों से खेती के काम में क्या उन्नति हो सकती है?

३—सामुदायिक विकास योजनाओं का खेती की उन्नति के लिए क्या कार्य-क्रम है?

क्रियात्मक अभ्यास—

अपने स्कूल में सहकारी समिति बनाओ और उसमें अपनी आवश्यकता की चीजें, जैसे—किताब, कापी, पेंसिल, कलम, रोशनाई आदि की बिक्री का प्रबन्ध करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ६—सामाजिक समस्याएँ

हमारा भारतीय समाज अनेक छोटे और बड़े समाजों से मिलकर बना है—जैसे हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, पारसी इत्यादि। इन समाजों का आधार धर्म है, इसलिए धर्म के ऊँचे तत्व जैसे अतिथि-सत्कार, गुरुओं, विद्वानों और महात्माओं में श्रद्धा आदि सब लोगों में समान रूप में पाये जाते हैं। इसके अलावा वर्षों से साथ-साथ रहते हुए एक का प्रभाव दूसरे पर इतना पड़ा है कि सबों की सामाजिक समस्याएँ लगभग एक जैसी हो गयी हैं।

ये समस्याएँ मुख्य रूप से जात-पाँत का भेद, जनसंख्या की वृद्धि, नन्हें बच्चों की मृत्यु और समाज में स्त्रियों का हीन स्थान है। इनमें से अधिकांश बातों में आवश्यक सुधारों के प्रयत्न पिछले ५० वर्षों से जारी हैं और भारत के नगरों में आशाजनक सफलता भी मिली है। गाँवों में अभी तक अधिक जागृति नहीं हुई है, अतः स्कूलों के बालकों को इन समस्याओं को समझना और अवसर मिलने पर उनके समाधान के लिए तैयार रहना चाहिए।

जात-पांत के भेद—अनेक धर्म सुधारकों और सभा-समाजों ने जात-पाँत की कठोरता को ढीला करने के प्रयत्न किये हैं। दुर्भाग्य यह है कि देश के स्वतन्त्र होने पर चुनावों, नौकरियों आदि में जात-बिरादरी का पक्षपात बढ़ गया है। इसे सामाजिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रोग समझ कर दूर करना और समाज के सब लोगों में समानता, भ्रातृभाव और न्याय का व्यवहार कायम करना हरएक देशभक्त और समाज-सेवक का कर्तव्य है। भारत के संविधान में यही कहा गया है। इसके विरुद्ध चलने वाले भारत के संविधान के प्रति विश्वासघात करते हैं।

जन-संख्या की समस्या—भारत में इस समय ५० करोड़ से अधिक जनसंख्या है। जनसंख्या में हमारा देश चीन को छोड़ कर संसार के सब देशों से बड़ा है। भारत में पश्चिमी देशों के मुकाबले मृत्यु का औसत कहीं अधिक है, परन्तु फिर भी हमारे देश की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इस बढ़ी हुई जन-संख्या के लिए भोजन, वस्त्र और मकान कहाँ से आयेंगे? हमारे प्राकृतिक साधन इतने नहीं हैं कि यदि इसी प्रकार जन-संख्या में वृद्धि होती रहे, तो सबको जीवन की सुविधाएँ मिल सकें। अत: जनसंख्या में वृद्धि का रोकना अत्यन्त आवश्यक है। सरकार ने उसी के लिए **परिवार नियोजन** की योजना चलायी है।

शिशुमरण—भारत में बच्चों और स्त्रियों की जितनी अकाल मृत्यु होती है, उतनी यूरोप या अमेरिका के किसी देश में नहीं होती। इसका मुख्य कारण गरीबी है। बच्चा पैदा होने के पहले या बाद को माता की ठीक देख रेख और योग्य दाई का प्रबन्ध नहीं होता, इस कारण माताएँ बीमार पड़ जाती हैं और हमारे देश में जितने बच्चे पैदा होते हैं उनमें से अनेक १० वर्षों के भीतर मर जाते हैं। सन्तोष की बात है कि हमारी सरकार और जिला परिषदों व नगर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पालिकाओं के स्वास्थ्य विभाग के प्रयत्नों से स्थिति में सुधार हो रहा है।

स्त्रियों की दशा—इस समय आमतौर से स्त्रियों को दूसरे पर आश्रित रहना पड़ता है, चाहे वह माता-पिता, भाई-बन्धु,

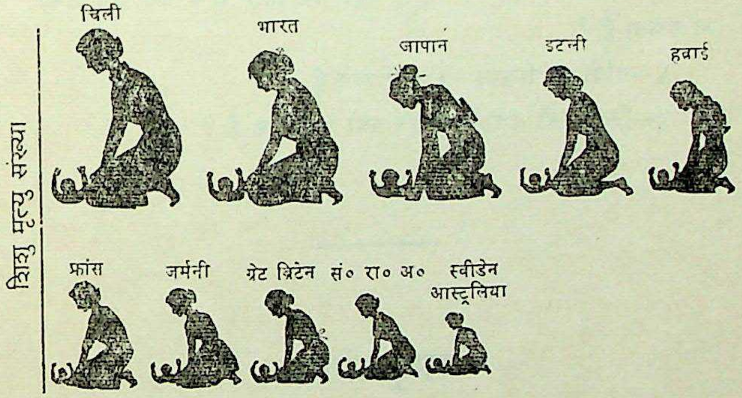

संसार के सभ्य देशों में बच्चों की मृत्यु का अनुपात

पति अथवा पुत्र हों। हिन्दू समाज म स्त्रियों को सम्पत्ति का अधिकार कम है। बालविवाह और परदे के रिवाजों का अभी तक अन्त नहीं हुआ है। विवाहों पर दहेज के रिवाज ने समाज में बड़ी कठिनाइयां पैदा कर रखी हैं। इन समस्याओं का हल हुए बिना भारतीय समाज उन्नति नहीं कर सकता, क्योंकि बच्चों के पालन-पोषण, घर गृहस्थी का सुख व शान्ति सब कुछ स्त्रियों पर निर्भर है।

समाज-सुधारकों के प्रयत्नों से स्त्रियों की दशा में पहले की अपेक्षा बहुत कुछ सुधार हुआ है। देश स्वतन्त्र होने के बाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब भारत सरकार ने भी स्त्रियों के न्यायपूर्ण अधिकारों की रक्षा के लिए कानून बनाये हैं।

१—जात-पाँत के भेद-भाव से क्या हानि होती है ?

२—भारत में जनसंख्या की क्या समस्या है ?

३—भारत में बच्चों की मृत्यु बहुत क्यों होती है ? उसे कैसे रोका जा सकता है ?

४—गाँवों की स्त्रियों की क्या दशा है ?

५—स्त्रियों की दशा में सुधार क्यों आवश्यक है ?

राष्ट्र-गीत

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारत-भाग्यविधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधितरंग।
तब शुभ नामे जागे, तब शुभ आशिष मागे, गाहे तब जयगाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे भारत-भाग्यविधाता।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।

3798

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh